@NewsRotary /RotaryNewsIndia

Vol.34, Issue 8 Annual Subscription Rs.420

रोटरी समाचार

February 2017

Rotary

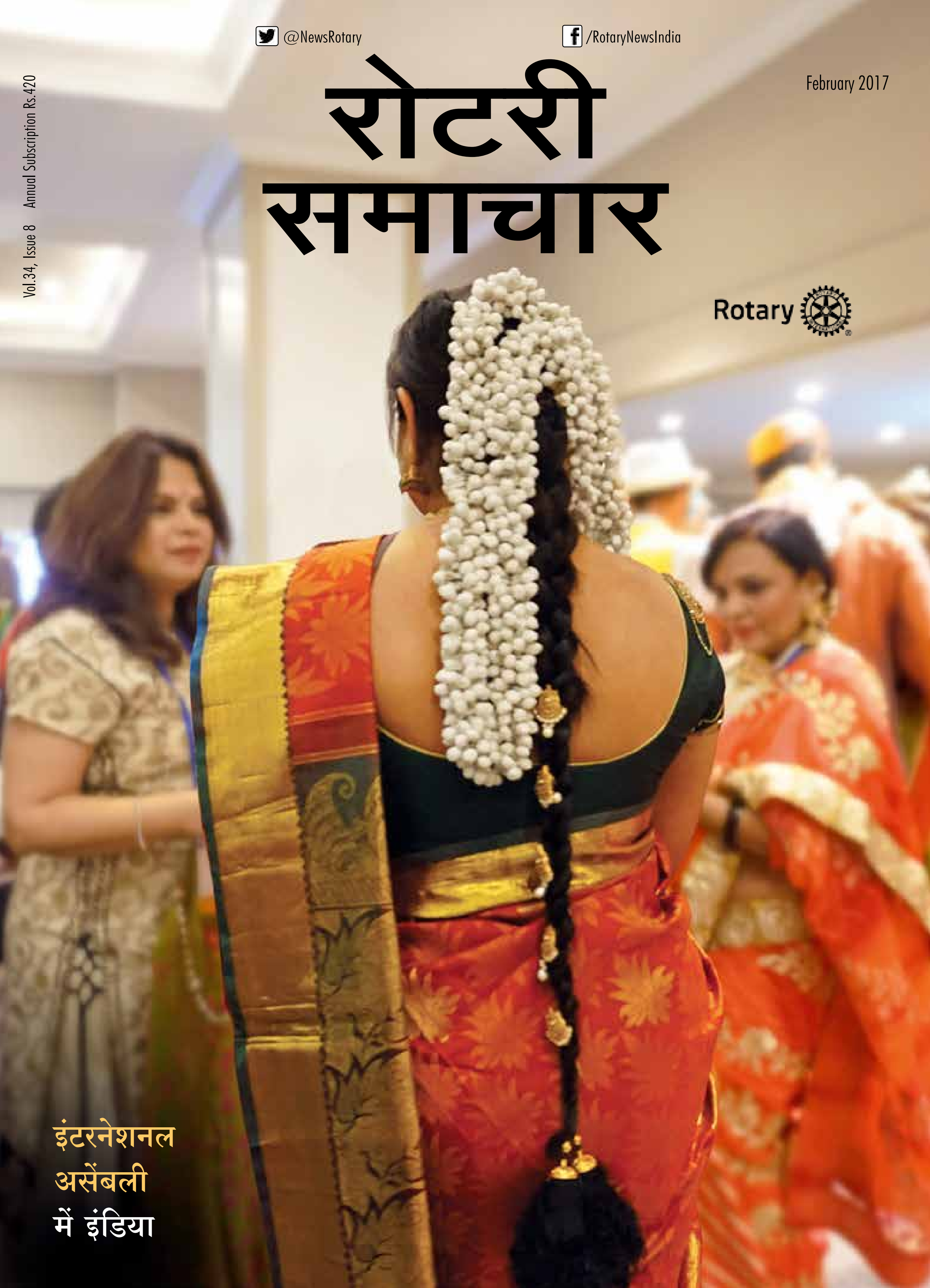

इंटरनेशनल असेंबली में इंडिया

2017 इंटरनेशनल असेंबली में रोटरी इंडिया

हर साल की तरह, ग्रैंड मार्च के दौरान आने वाली भारतीय डी जी इ यों की बैच और उनके जीवन साथी चमकदार और जीवंत रंग पहने हुए एक बड़ी संख्या में आये और सबका दिल जीत लिया।

इस बार संतरे और पीले रंगों का प्राबल्य रहा और अन्य प्रतिभागियों ने बिना थके क्लिक करते हुवे भारत के इन रंगों पर कब्ज़ा किया।

मूल शब्द और चित्र: रशीदा भगत्

विषयसूची

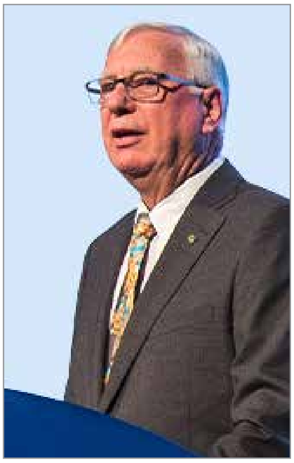

12 लैंगिक असंतुलन: रोटरी के सम्मुख एक बड़ी चुनौती

अंतरराष्ट्रीय असेंबली में RIPE इयान रैसली ने रोटरी में अधिक महिलाओं को शामिल करने की ज़रूरत पर ज़ोर डाला।

22 भारत उत्साहित है देने के बाबत में!

टीआरएफ ट्रस्टी अध्यक्ष कल्याण बनर्जी ने भारतीय रोटेरियनों की उदारता के बारे में और टीआरएफ से संबंधित अन्य मुद्दों पर बात की।

32 चुनौतियों पर काबू पाना इज़्ज़त को बनाये रखना

PRIP राजेंद्र के साबू के नेतृत्व के अधीन, भारतीय रोटेरियन, भारत की प्रतिकूल तथा खतरनाक जगहों में भी, अपनी चिकित्सीय निपुणता के ज़रिये मानव सेवा करने में कभी चूके नहीं।

20 एक नये साँस्कृतिक अवतार में ग्रुप स्टडी एक्सचेंज की वापसी

सैन डिएगो इंटरनेशनल असेंबली में RIPE इयान रैसली ने घोषणा की के इस वर्ष 1 जुलाई से रोटेरियन ग्रुप कल्चरल एक्सचेंज कार्यक्रम या GCE की योजना बना सकते है।

46 WinS में 23,000 स्कूलों के ज़रिये 5 मिलियन बच्चों तक पहुँचेगा रोटरी

DDZI में WinS के ग्लोबल अध्यक्ष सुशील गुप्ता और RILM अध्यक्ष शाहकार मेहता ने अबतक WinS और साक्षरता में की गयी प्रगति का विवरण दिया।

50 मुंबई में, कुछ भी हो सकता है

मुंबई में कोई भी सपना अत्याधिक बड़ा नहीं हो सकता। और मंडल 3141 ने 'प्रथम' शीर्षक पर अपने मंडल सम्मेलन में इसे साबित कर दिया।

62 क्यों विमुद्रीकरण बैंकों के लिए अप्रत्याशित लाभ नहीं होगा

बैंकिंग सेक्टर पर विमुद्रीकरण के प्रभाव के बारे में एक उल्लेख।

64 तनाव से छुटकारा पाएं

निन्यानबे प्रतिशत तनाव का कारन हमारा अपना बनाया होता है और इस तनाव को हम अपने भीतर ही पालते है।

68 स्ट्रॉबेरी की धरती में

महाबलेश्वर के साज रसॉर्ट्स से वापस ले जाने के लिए आत्मा को चैन, मन को आनंद एवं स्वस्थ कायाकल्प है।

मुख्य पृष्ठ पर : चमेली के फूल भारत की खूबसूरती और खुशबू का सबसे बेहतरीन तरीके से निरूपण करते है। सैन डिएगो, इंटरनेशनल असेंबली में भारत की एक झलक।

चित्र : रशीदा भगत्

नये साल की अच्छी शुरुआत

रोटरी समाचार का नये साल का अंक आनंददायक और दिलचस्प है। संपादकीय दल ने जोन इंस्टीट्यूट के विवरणों को बखूबी पेश किया है। उसका शीर्षक जगमगाता दुबई बिलकुल उपयुक्त है। चौखटे में मानवीय संबंधों का एक लघु पाठ्यक्रम, ने निर्वाचित मंडलाध्यक्षों के हित में, एक बार, एक दिन के हिसाब से 365 कामयाब दिनों के लिये पाँच सबसे मुख्य शब्द (मैंने एक गलती की है) दिये हैं। सभी तस्वीरें हमें वास्तव में जगमगाते दुबई की ओर ले गयी। *साझेदारियों के लिए कुछ कदम...*हमारी कमजोरियों को पूरा करने, सही सहभागियों को चुनने के बारे में विस्तृत तरीके से विवरित करता है। लेख पेरीटो मोरेनो से, सप्रेम ने इस शानदार हिमनदी की एक झलकी दिखला दी। रोटरी तथा सिंगर की संयुक्त स्वयं नियोजन परियोजना के बारे में विस्तृत खबरें पढी, लेख *रक्त कैंसर के समान...*में विमुद्रीकरण के फायदों और उसकी कमियों को सरल और संक्षिप्त तरीके में विवरित किया गया था। *लेख बैठना धुम्रपान के...*पढ़कर लंबी आयु के राज को बेहतर तरीके से समझा जा सका। विस्तृत खबरों के साथ एक बढ़िया अंक ले आने के लिये संपादकीय दल का फिर एक बार शुक्रिया।

के एम के मूर्ति
रोटरी क्लब सिकंदराबाद– मंडल 3150

जनवरी अंक लाज़बाब रहा। जगमगाते दुबई में जोन इंस्टीट्यूट (DDZI) की खबरें विस्तृत है और उन लोगों को कार्यक्रम के बारे में संपूर्ण चित्रण प्रदान करता है जो वहाँ जा नहीं सके। इंस्टीट्यूट की खबरों के बारे में विवरण इतनी बारीकी से दिये गये थे कि मुझे यूँ लगा मानों मैं खुद कार्यक्रम में हाजिर था। संपादकीय दल को शाबासी!

हरीश कुमार
रोटरी क्लब बेंगलुरु साउथएंड– मंडल 3190

जनवरी 2017 अंक में दुबई के जोन इंस्टीट्यूट में रोटरी नेताओं द्वारा मुख्य वक्तव्यों सहित संपूर्ण कवरेज बढ़िया था। अंक में रोटरी की भावी योजनाओं को पूरी तरह से सम्मिलित किया गया है। इस प्रतिष्ठित इंस्टीट्यूट के लिये दुबई को चुनने तथा *कुछ भी असंभव नहीं* को विषय वस्तु के रूप में चुनने के लिये, जो दुबई जैसे छोटे शहर के लिये बिलकुल उपयुक्त है जिसने इसे दुनिया के आगे साबित कर दिया है, आयोजकों को शाबासी! रो इ के अध्यक्ष ने भी अपने वक्तव्य में इस मंत्र का उल्लेख किया है कि रोटेरियनों को वैयक्तिक रूप में नहीं बल्कि सामुहिक रूप में काम करना होगा, तब जाकर वे इससे भी बड़ी कामयाबी हासिल कर पायेंगे। कामना करता हूँ कि आगामी दिनों में *रोटरी समाचार* और भी अधिक ऊँचाइयों को छू लें।

एम टी फिलिप
रोटरी क्लब त्रिवेंद्रम
सबअर्बन – मंडल 3211

मैं दुबई के जोन इंस्टीट्यूट के प्रतिनिधि मंडल में शामिल नहीं था सो, नहीं जान पाया कि उन्होंने कितना लुत्फ उठाया होगा, हालाँकि मैंने आपके संपादकीय को पढ़ने का लुत्फ उठाया। उसे पढ़कर लगा कि मैं बदकिस्मत था जो इस कार्यक्रम में हिस्सा नहीं ले सका। यह एक संपादकीय ही नहीं बल्कि आपके सभी संपादकीयों को पढ़कर हम उत्साहित होने के साथ जानकार भी हो गये हैं।

रोटरी समाचार का पदभार संभालने के बाद आप हमारी पत्रिका में निखार ले आने के साथ पाठकों को भी पत्रिका की ओर आकर्षित कर रही है।

कोरुकोंडा बुची राजू
रोटरी क्लब अनकापल्ली – मंडल 3020

कमीं है: कार्टूनों और चुटकुलों की

जनवरी अंक में दुबई इंस्टीट्यूट के पूरे कवरेज को पढ़कर में खुश हूँ। एक नियमित पाठक होने के नाते, मैंने गौर किया है कि कुछ समय से कार्टूनों और चुटकुलों कमीं है। कृपया इन्हें भी कुछ जगह दें।

कृष्णा शालवाडी
रोटरी क्लब हुबली ईस्ट – मंडल 3170

जनवरी 2017 अंक में अनेक उपयोगी विषयों को सम्मिलित किया गया है। जेट एयरवेज द्वारा देशीय तथा अंतर्राष्ट्रीय यात्रा की हवाई टिकटों पर 10 प्रतिशत की छूट दिये जाने की खबर सूचनात्मक है। उम्मीद करता हूँ यह छूट साल पर जारी रहेगी।

के देवराजन
रोटरी क्लब कोयम्बत्तूर ईस्ट – मंडल 3201

ज़रूरत है: स्वास्थ्य संबधित लेखों की

रोटरी समाचार का जनवरी अंक बेहद पठनीय था। बैठने को सिगरेट पीने के बराबरी का खतरा साबित करने वाला लेख *बैठना धुम्रपान के...* हमारी आँखें खोल देता है। इस लेख को कई लोगों तक पहुँचाना होगा खासकर सॉफ्टवेयर उद्योग में तथा मेज़-कुर्सी पर बैठकर, काम करने वाले सभी व्यक्तियों तक पहुँचाना होगा। रोटेरियनों तथा इतर लोगों के फायदे के लिये कृपया इस तरह के स्वास्थ्य और पोषाहार से जुड़े लेखों को प्रकाशित करना जारी रखें।

डॉ एन के श्रीनिवासन
रोटरी क्लब कड़लूर – मंडल 2981

विचित्र हो, अश्लीलता नहीं

जनवरी अंक के मुख पृष्ठ को देखकर हम में से कुछ लोगों को सदमा पहुँचा। यह समझ में आता है कि दुबई में प्रतिनिधि मंडल के लिये मनोरंजन के साथ जगमगाहट और विचित्र को मिलाकर पेश किया गया होगा लेकिन निश्चित ही अश्लीलता को नहीं।

मुख पृष्ठ पर उस लगभग नग्न तस्वीर का, रोटरी के उद्देश्यों के साथ क्या वास्ता?

परिमल वसावदा
रोटरी क्लब अहमदाबाद
मेट्रो – मंडल 3051

एक 'लायन' की प्रतिक्रिया

मैं 83 साल का एक सेवानिवृत्त व्यक्ति हूँ और मेरा बेटा दीपक अग्रवाल रोटरी क्लब सिलिगुडी मिड़टाऊन का सदस्य है। हर माह मैं उत्सुकता के साथ *रोटरी समाचार* पत्रिका के इंतजार में रहता हूँ। मैं विभिन्न क्लबों तथा मंडलों की अनेक गतिविधियों तथा कार्यक्रमों के उत्कृष्ट कवरेज़ को देखकर बेहद प्रभावित हुआ हूँ। आपके नवंबर माह के *रोटरी समाचार* ने मुझे श्रवण शक्ति से बाधित बच्चों के बारे में (एक नई जिंदगी देना) कुछ सराहनीय बातों की जानकारी दी है। मुझ में भी सुनने की कमीं है। मैं कोलकत्ता से लगभग 60 किमी की दूरी पर बंदेल के पास एक मूक व बधीर विद्यालय का उपाध्यक्ष था। मैं लायन्स क्लब में संबध्द रहा था और उप मंडलाध्यक्ष की हैसीयत से भी सेवारत था।

उन उत्कृष्ट रोटेरियनों को तथा लेखों और बढ़िया तस्वीरों के उत्तम कवरेज के लिये खासकर आप तथा आपकी टीम को, मेरी शुभकामनायें। भगवान आप सब को आशीर्वाद दें।

बी आर अग्रवाल

रोटरी क्लब शाँघाई के साथ पारस्परिक क्रिया

भारतीय रोटेरियनों को, 18 अप्रैल 2017 को, चीन के रोटरी क्लब शाँघाई के सदस्यों के साथ मिलने का, पारस्परिक क्रिया करने का तथा रोटरी की द्विदेशीय गतिविधियों का आदान प्रदान करने का, एक अनोखा अवसर मिल पायेगा। यह रोटरी बैठक, एक 8-दिवसीय-दौरा 'Wonders of China' (अप्रैल 17-25) का हिस्सा है जिसमे बीजिंग, शाँघाई, रूस का सीमावर्ती शहर हारबिन, मंगोलिया, साइबेरिया की भेंट भी शामिल है। इच्छुक रोटेरियन omprakash@inorbittours.com से संपर्क कर सकते हैं। टेली: 022-24229281/ 40436868.

ओम प्रकाश सहगल मंडल 3141

अद्भुत दिसंबर अंक

दिसंबर अंक को रोचक रूप में प्रकाशित करने के लिये *रोटरी समाचार* को बधाई हो। मुख पृष्ठ के आवरण से पार्श्व पृष्ठ के आवरण तक पढ़ना रोचक रहा– जो आवरण पृष्ठ के सुखद रंगो से शुरू होता है जिसमे हमारी ओर देखने वाले बच्चे तथा अपने कार्य निष्पादन से संतुष्ट होकर प्रसन्न चित्त नजर आने वाले एक डॉक्टर को चित्रित किया गया है।

मैं भी मंडल 3160 के पीडीजी जे वी रेड्डी से 100 फी सदी सहमत हूँ (पाठकों के ख़त) कि हमारी सदस्यता को बढ़ाने के नाम पर (इतर गै स संओं को पछाड़ने) हम काफी सारे नियमों को ढीला कर रहे हैं जैसे छोटी बैठकों, ई-बैठकों के लिये द्वार खोल देना; आँकडों को बढ़ाने के लिये नये सदस्यों को दाखिल कराना तथा 'वर्गीकरण सिध्दाँतों' का पालन ना करना। मुझे लगता है यह हमारी समस्या को सुलझा नहीं पायेगा, यदि कोई समस्या हो तो।

ऑटो चालक अन्नादुरै के प्रति आदर और उनकी प्रशंसा में मैं अपना सिर झुकाता हूँ जो एक अकीर्तित नायक हैं। मैंने अनेक स्कूलों में अपने छात्रों को इस लेख के बारे में बतलाते हुये अर्ज किया है कि वें भी अन्नादुरै का अनुसरण करें और अपने माता-पिताओं से भी ऐसा ही करने को कहें। मैं सच्चे दिल से विश्वास करता हूँ कि हर एक गाँव, शहर या कस्बे में जरूर ऐसे नागरिक होंगे जो अपने ग्राहकों की सुविधा का ख़्याल रखते हुये उन्हे खुश कर देते हैं और इस तरह प्रगति करते रहते हैं। हमें और भी रशीदाओं की जरूरत है जो अन्नादुरै जैसे लोगों को दुनिया के सामने पेश करें।

रो इ अध्यक्ष के संदेश में उन इंजीनियरों का जिक्र किया गया है जो ऐसे साधन और मशीन बनाते हैं जिनका हम रोजाना इस्तेमाल करते हैं। मेरा दृढ़ विश्वास है कि हर एक पेशे के लिये यही लागू होता है– मिसाल के लिये, हमारे घरों में काम करने वाला रसोइया या मेहरी, सड़क पर झाड़ू लगाने वाला सफाई कर्मचारी आदि। क्या हमें एहसास है कि वे बेहद अच्छा काम कर रहे हैं। हमें तब ही इसका एहसास होगा जब वे एक दिन काम पर नहीं आयेंगे।

लेख *एक ध्यान केंद्रित जीवन जियो* बढ़िया था। मुझे उसका एक-एक शब्द याद है, खासकर ''एकांत में निवास कर रही शांति की कला का अभ्यास का अभ्यास कीजिये'' पर लिखा गया अनुच्छेद।

एक बार फिर मैं यही कहूँगा कि आपने हमे एक बढ़िया अंक दिया है।

रशीदा और *रोटरी समाचार* संपादकीय दल का शुक्रिया। आप सभी को नव वर्ष की शुभ कामनायें।

नैन नारायणन्
रोटरी क्लब मदुरै
वेस्ट – मंडल 3000

काला धन और खून का कैंसर

लेख *रक्त कैंसर के समान...*बखूबी लिखा गया था। जिस तरह लेखक ने किसी की भी तरफदारी ना करते हुये, पक्षपातहीन तौर पर विषय को पेश किया था सराहनीय है। विमुद्रीकरण के भले बुरे की समझ के साथ यह एक अच्छा विश्लेषण है।

इस तरह के पक्षपातहीन लेखकों को भी पत्रिका में जगह देने के लिये आपका शुक्रिया।

सुजाता श्रीनिवासन, चार्टर अध्यक्ष
रोटरी क्लब कड़लूर सेंट्रल – मंडल 2981

We welcome your feedback. Write to the Editor: rotarynews@rosaonline.org; rushbhagat@gmail.com

Governors Council

RI Dist 2981	DG	A Mani
RI Dist 2982	DG	T Shanmugasundaram
RI Dist 3000	DG	M Muruganandam
RI Dist 3011	DG	Dr N Subramanian
RI Dist 3012	DG	Sharat Jain
RI Dist 3020	DG	Dr S V S Rao
RI Dist 3030	DG	Mahesh H Mokalkar
RI Dist 3040	DG	Darshan Singh Gandhi
RI Dist 3051	DG	Dinesh Kumar V Thacker
RI Dist 3052	DG	Ramesh Choudhary
RI Dist 3053	DG	Bhupendra Jain
RI Dist 3060	DG	Hitesh Manharlal Jariwala
RI Dist 3070	DG	Dr Sarbjeet Singh
RI Dist 3080	DG	Raman Aneja
RI Dist 3090	DG	Sanjay Gupta
RI Dist 3110	DG	Dr Ravi Mehra
RI Dist 3120	DG	Dr Pramod Kumar
RI Dist 3131	DG	Prashant Deshmukh
RI Dist 3132	DG	Pramod Shashikant Parikh
RI Dist 3141	DG	Gopal Rai Mandhania
RI Dist 3142	DG	Dr Chandrashekhar Kolvekar
RI Dist 3150	DG	Ratna Prabhakar Anne
RI Dist 3160	DG	Sreerama Murthy
RI Dist 3170	DG	Dr Vinaykumar Pai Raikar
RI Dist 3181	DG	Dr R S Nagarjuna
RI Dist 3182	DG	Devarunda Subbegowda Ravi
RI Dist 3190	DG	H R Ananth
RI Dist 3201	DG	Dr Prakash Chandran Arackal
RI Dist 3202	DG	Dr Jayaprakash P Upadhya
RI Dist 3211	DG	Dr John Daniel
RI Dist 3212	DG	Dr K Vijayakumar
RI Dist 3230	DG	Natrajan Nagoji
RI Dist 3240	DG	Dr Rintu Guha Niyogi
RI Dist 3250	DG	Dr R Bharat
RI Dist 3261	DG	Deepak Mehta
RI Dist 3262	DG	Narayan Nayak
RI Dist 3291	DG	Shyamashree Sen

Board of Permanent Trustees & Executive Committee

PRIP	Rajendra K Saboo	RI Dist 3080
PRIP	Kalyan Banerjee	RI Dist 3060
PRID	Sudarshan Agarwal	RI Dist 3011
PRID	Panduranga Setty	RI Dist 3190
PRID	Sushil Gupta	RI Dist 3011
PRID	Ashok Mahajan	RI Dist 3140
PRID	Yash Pal Das	RI Dist 3080
PRID	Shekhar Mehta	RI Dist 3291
PRID	P T Prabhakhar	RI Dist 3230
RID	Dr Manoj D Desai	RI Dist 3060
RIDE	C Basker	RI Dist 3000

Executive Committee Members (2016–17)

DG	M Muruganandam Chair - Governors Council	RI Dist 3000
DG	Shyamashree Sen Secretary - Governors Council	RI Dist 3291
DG	Sarbjeet Singh Secretary - Executive Committee	RI Dist 3070
DG	Natarajan Nagoji Treasurer - Executive Committee	RI Dist 3230
DG	Gopal Rai Mandhania Member - Advisory Committee	RI Dist 3141

ROTARY NEWS / ROTARY SAMACHAR

Editor
Rasheeda Bhagat

Senior Assistant Editor
Jaishree Padmanabhan

Send all correspondence and subscriptions to

ROTARY NEWS TRUST
3rd Floor, Dugar Towers, 34 Marshalls Road
Egmore, Chennai 600 008, India.
Phone : 044 42145666
e-mail : rotarynews@rosaonline.org
Website : www.rotarynewsonline.org

Printed by Mukesh Arneja at Thomson Press (India) Ltd, Plot A-9, Industrial Complex, Maraimalai Nagar 603209, India and published by Mukesh Arneja on behalf of Rotary News Trust from Dugar Towers, 3rd Flr, 34, Marshalls Road, Egmore, Chennai 600 008. Editor: Rasheeda Bhagat.

The views expressed by contributors are not necessarily those of the Editor or Trustees of Rotary News Trust or Rotary International. No liability can be accepted for any loss arising from editorial or advertisement content. Contributions – original content – is welcome but the Editor reserves the right to edit for clarity or length. Content can be reproduced, but with permission from RNT.

संपादक का संदेश

आप परिवर्तन ला रहे हैं...

जब रो इ के आगंता अध्यक्ष इयान रैसली ने 2017-2018 रोटरी वर्ष के लिये अपनी विषय वस्तु – *रोटरी: परिवर्तन ला रहा है* का अनावरण किया, तब मेरी मन की आँखों में उन परियोजनाओं की त्वरित श्रृँखला की झलक दिखायी दी गयी जिन्हें रोटरी ने भारत में कार्यांवित किया है और जिन्हें मैंने उन 28 महीनों के दौरान नज़दीक से देखा है जब से मैंने *रोटरी समाचार* के संपादिका की हैसीयत से बागडोर अपने हाथों में ले ली है।

जब गढ़वाल हिमालय के इलाकों को, खासकर केदारनाथ, तीव्र बाढ़ ने विध्वंसित किया था तब रोटरी की तत्काल प्रतिक्रिया को कौन भूल सकता है। ''सरकार से भी पहले, हमें उसकी खबर मिली थी; मुख्य मंत्री यहाँ नहीं थे; रुद्र प्रयाग के कलक्टर अस्पताल में दाखिल किये गये थे,'' मंडल 3080 के पीडीजी प्रेम भल्ला ने कहा। अगले ही रोज, यानि 17 जून 2013 को, मंडल के सभी 82 क्लबों से किफायती विधा को अपनाने के लिये कहा गया; जुलाई 1 के अधीष्ठापन कार्यक्रमों को आडंबरहीन तरीके से आयोजित किया गया। इस तरह बचत की गयी रकम और जुटाई गयी रकम को मिलाकर उत्तराखंड में बाढ़ से बाधित लोगों की मदद की गयी। PRIP यशपाल दास के नेतृत्व में रोटरी उत्तराखंड विपदा राहत न्यास का गठन किया गया और ऊँचे दर्जे के 32 स्कूलों का निर्माण कार्य शुरू किया गया। और सैन डियेगो में दास जी ने मुझ से नाज़ के साथ कहा: ''अभी अभी हमने आखिरी 32 स्कूलों को सरकार के सुपुर्द किया और ये स्कूल दूरवर्ती इलाकों में रहने वाले लगभग 1,600 छात्रों की जिंदगियों को बदल देंगे।''

राजस्थान के सीकर जिले में एक दूरवर्ती, अंदरूनी गाँव की एक बूढ़ी औरत की पोपली हँसी को मैं कैसे भूल सकती हूँ जिसने दबी जबान में यूँ कहा: ''इस साल मैंने मछली बेचकर रु 1 लाख कमाये; एक ठेकेदार ने इन मछलियों को रोटरी द्वारा बनवाये गये बाँध में डाल दिया था।'' बाँध बनवाने के द्वारा इस रेगिस्तान को हरियाली में बदलकर, टीआरएफ के ट्रस्टी सुशील गुप्ता के नेतृत्व तथा PHD ग्रामीण विकास फाउंडेशन की सहभागिता में, रोटरी भारत जल संरक्षण न्यास (RIWCT) ने यह जादुई करामात कर दिखलाया। जब नवंबर 2014 में मैंने कुछ बाँधों को भेंट दी थी, तब मैंने पाया कि पानी नामक मूल्यवान वस्तु के उपलब्ध होने की वजह से, राजस्थान के सीकर तथा अलवर जिलों के कृषक परिवारों से आने वाले 600,000 से ज्यादा ग्रामीणों की आमदनी कई गुना बढ़ गयी थी। पहले जैसा केवल एक फसल उगाने की जगह ये किसान अब तीन फसल उगा रहे थे। इसका फायदा: इस परियोजना ने ना केवल स्थानांतरण को रोका, बल्कि इसका उल्टा असर पड़ा; किसानों के बच्चे जो गाँव छोड़कर दिल्ली और आसपास के शहरों में जाकर नौकरी-चाकरी कर रहे थे, वापिस अपने गाँव लौटने लगे।

और फिर, मंडल 3211 के अंतर्गत रोटरी क्लब त्रिवेंद्रम द्वारा बनवाये गये विशेष बच्चों का यह स्कूल है। इस स्कूल को 1964 में स्थापित किया गया था और इस 52 वर्षीय संस्थान में लड़के-लड़कियों के लिये कक्षायें तथा अलग छात्रावास उपलब्ध हैं और दिमागी तौर पर अविकसित बच्चों के बहु संकेंद्रित उपचार एवं प्रशिक्षण केंद्र भी बनाये गये है। मणिपाल अस्पताल के भूतपूर्व सलाहकार शल्य चिकित्सक डॉ नागेश सिम्हा द्वारा स्थापित करुणाश्रय को ही लीजिये (कन्नड भाषा में करुणा निवास), मरणासन्न कैंसर के मरीजों को व्यावसायिक प्रशामक (पीडाहर) रक्षा प्रदान करता है। मंडल 3190 के अंतर्गत रोटरी क्लब बंगलौर इंदिरा नगर तथा भारतीय कैंसर सोसायटी की कर्नाटक शाखा का एक संयुक्त प्रयास, यह मरणासन्न मरीजों को इज्जत दिलाने के साथ उनकी देखभाल भी करता है।

अब जरा दक्षिण से पश्चिम की ओर गुजरात में बड़ौदा के पास काटरवाड गाँव जाइये, जहाँ जापान के रोटरी क्लब आशीयाना की सहभागिता में, मंडल 3060 के अंर्तगत रोटरी क्लब बड़ौदा मेट्रो द्वारा कार्यांवित 105,000 अमरीकी डॉलर की एक मैचिंग ग्रांट परियोजना ने इन गाँववालों की जिंदगी की पूरी तरह से कायापलट दी है। बाँध, सामुदायिक कुयें, नमूना घर, लाभकर कृषि उत्पादन तरीके तथा इतर अनेक ऐसी गतिविधियों ने गाँव की पूरी तरह से कायापलट कर दी जिससे गाँववालों का आत्म-विश्वास बढ़ गया। यहीं पर मेरी मुलाकात लीलाबेन से हुयी जिसकी आँखों की चमक हमेशा के लिये मेरी यादों में समायी रहेगी। जब उन्होंने अपने गाँव की महिलाओं को सलाह दी कि वे खुद को कम ना आँके और अपने बच्चों को एक बेहतर भविष्य दिलाने के लिये अपने पुरूषों के साथ मिलकर काम करें, तो स्त्री सशक्तिकरण पर छोछा प्रवचन नहीं कर रही थी बल्कि वे तो उसकी जीती जागती मिसाल थी।

भारतीय रोटेरियन नाज़ कर सकते हैं वे लोगों की जिंदगियों की कायापलट कर रहे हैं और असली फर्क महसूस करा रहे हैं। जो काम 2017-18 वर्ष की विषय वस्तु करेगी वह और भी बेहतर काम करने पर उनका हौसला बढ़ायेगी।

रशीदा भगत्

दुनिया में रोटरी की ज़रूरत पहले से कई अधिक

प्रिय साथी रोटेरियन,

23 फरवरी को हम रोटरी की स्थापना के 112 वर्ष पूरे करेंगे। इसके अध्यक्ष के रूप में पॉल हैरिस के साथ पहले रोटरी क्लब की शुरुआत के बाद से हमारी दुनिया में, हमारे संगठन में कितना बदलाव आया है, के बारे में सोचना अविश्वसनीय है।

1905 और अब की तुलना में कुछ चीजें तुलना में आसान हैं। यहां तकनीक, चिकित्सा और समाज में बदलाब आए हैं। जब हम 1905 के दुनिया के नक्शे और आज के नक्शे को उठाकर देखेंगे तो हम देख सकते हैं कि क्या बदलाव हुआ है। क्या हम ऐसा नहीं कर सकते क्या-क्या हुआ है के साथ तुलना करें। रोटरी के बिना इस संसार की तुलना करने का कोई तरीका नहीं है।

इन 112 सालों में रोटरी के लिए कई चुनौतियां खड़ी हुई हैं। हमने संघर्ष का शांति के साथ और गरीबी का शिक्षा के साथ का जबाव दिया है। हमने छोटी और बड़ी परियोजनाओं के साथ बुनियादी स्वास्थ्य देखभाल की कमी के लिए प्रतिक्रिया व्यक्त की है, दुनिया भर में पोलियो उन्मूलन के लिए छोटे-छोटे गांवों में क्लीनिक सज्जित की।

हम कभी नहीं जान पाएंगे कि यदि रोटरी की स्थापना नहीं की गई होती तो दुनिया कैसी होती। यदि किसी भी रोटरी क्लब की स्थापना नहीं की गई होती या यदि एक भी रोटेरियन रोटरी क्लब में प्रवेश करने के निमंत्रण को अस्वीकार कर देता।

लेकिन मैं कहूंगा, पूर्ण विश्वास और पूरे आत्मविश्वास के साथ कि दुनिया अब एक दूर बहुत बेहतर जगह है, उससे कहीं रोटरी के बिना हो गया होता और रोटरी स्वयं मजबूत है आप सबकी वजह से।

दुनिया को रोटरी की पहले से कई ज्यादा ज़रूरत है। इसे हमारे साहस, हमारे आशावाद और हमारे आदर्शवाद की ज़रूरत है। इसे सहिष्णुता की आवाज़, समन्वय और उम्मीद की ज़रूरत है जिसे हम दे सकते हैं। इसे एक संगठन के उदाहरण की ज़रूरत है जिसमें सभी देशों के नागरिक एक साथ सफलतापूर्वक, खुशी और दोस्ती के साथ कार्य कर सकें।

हममे से कोई भी नहीं, कभी भी हमारी कार्यवाई के सभी प्रभावों को जानता है। हममें से कोई नहीं जानता कि हम जो बातें करतें हैं और कहते हैं उनके प्रभावों की तरंगों को। निर्णय जो हम बनाते हैं, अवसर जिन्हें हम पकड़ते हैं, और उन्हें जिन्हें हम छोड़ देते हैं। लेकिन मेरे विचार से हम सभी जानते हैं कि जब हम अच्छे का चुनाव करते हैं तो अच्छे का पीछा करेंगे और जब हम हमारे जीवन पथ पर *स्वयं से ऊपर सेवा* का चुनाव करते हैं तो ये दिशा हमें अच्छाई की ओर ले जाएगी।

भविष्य को कोई नहीं देख सकता है। कोई नहीं जानता कि जीवन में आगे क्या होने वाला है। लेकिन मुझे रोटरी में विश्वास है और रोटेरियनों में, प्रत्येक गुजरे हुए साल के साथ, आपने *रोटरी मानवता की सेवा* के ज़रिये हमारी दुनिया को एक बेहतर जगह बनाया है।

जॉन एफ जर्म
अध्यक्ष, रोटरी इंटरनेशनल

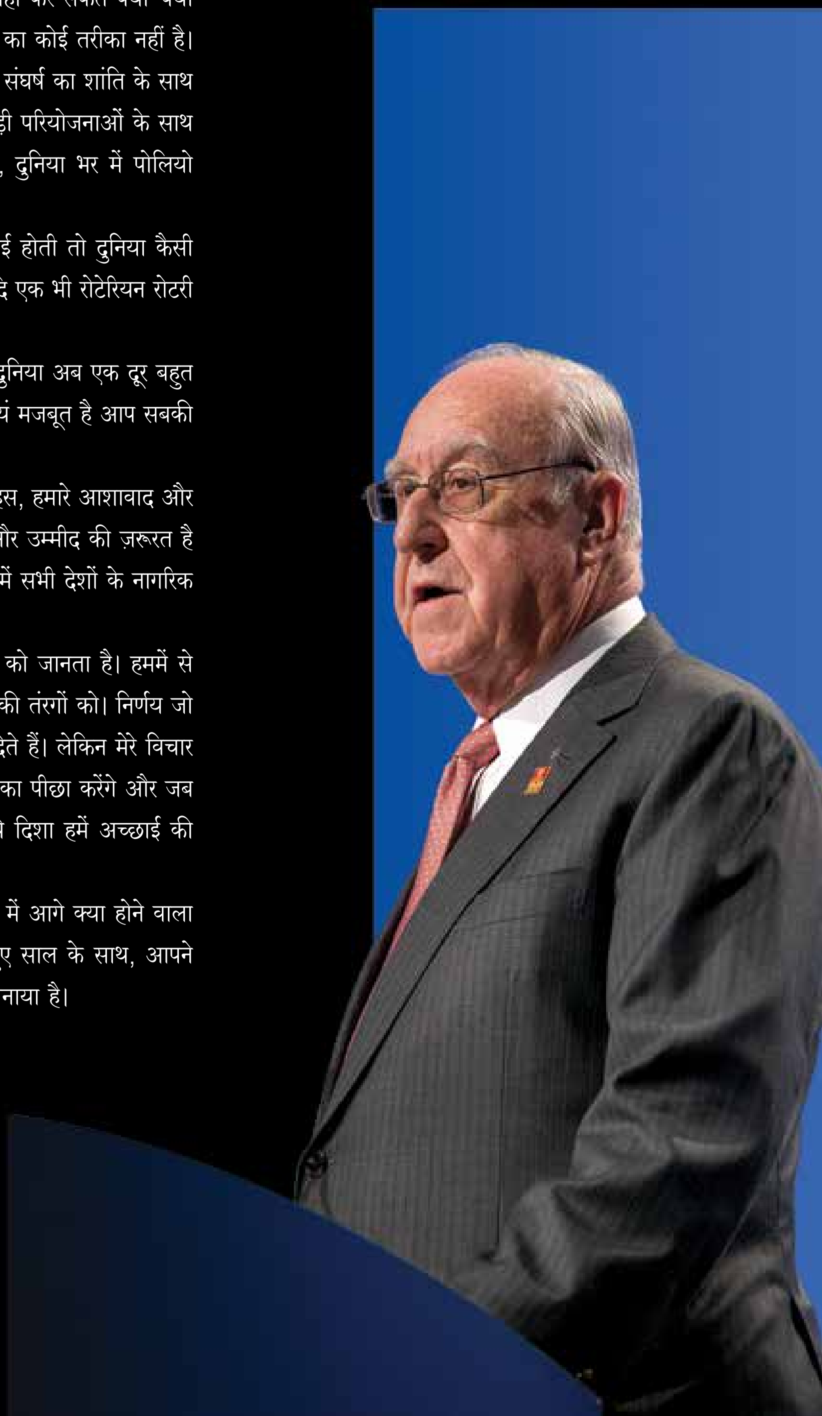

रो इ निदेशक का संदेश

रोटरी की सफलता का रहस्य

मेरे प्रिय मित्रों, नमस्कार,

रशीद भगत

इंटरनेशनल असेंबली में पत्नी शर्मिष्ठा के साथ।

मैं यह आलेख सैन डिएगो से लिख रहा हूँ। हर बार जब मैं यहां इंटरनेशनल असेंबली में भाग लेने के लिए आता हूँ, मैं बहुत प्रभावित होता हूँ - बिल्कुल उसी तरह से जैसे आप सभी भूतपूर्व गवर्नर इस अनुभव को आजीवन नहीं भूल सकते हैं।

मेरा दृढ़ विश्वास हैं कि हम जो यहाँ अविस्रणीय व अतुलनीय अनुभव प्राप्त करते हैं, तो प्रभावशाली प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं और नए-नए मित्र बनाते है और 'सीखने के लिए प्रवेश करने। आगे जाकर सेवा करने' के अभियान से जो प्रोत्साहन प्राप्त करते हैं, - इनमें ही रोटरी की सफलता का राज़ छिपा हुआ है।

मित्रों, कृपया इस प्रकार से सोचिए। यदि प्रत्येक मंडल के गवर्नर प्रशिक्षण को महत्वपूर्ण और आकर्षक बनाएं. तो आपका मंडल उज्जल बन जाएगा। मैं आपसे इस पर ध्यान केंद्रित करने का अनुरोध करता हूँ और प्रशिक्षण के महत्व को कम नहीं समझें।

यहाँ अध्यक्ष इलेक्ट्रोनिक इयान रैसली द्वारा वर्ष 2017-18 के लिए सम्मेलन में उनके भाषण के कुछ अंशों को उद्धत किया गया है:

रोटरी : परिवर्तन ला रहा है

कुछ वर्ष पहले, एक परिचित व्यक्ति ने मुझसे एक सामान्य प्रतीत होने वाला प्रश्न पूछा: 'रोटरी क्या है?' मैंने उत्तर देने के लिए अपना मुँह खोला ही था कि अचानक मैं इस अहसास के साथ रुक गया कि मैं तो जानता ही नहीं हूँ कि कहाँ से शुरू किया जाएं। समस्या यह नहीं थी कि मैं रोटरी के बारे में नहीं जानता था। समस्या यह थी कि रोटरी बहुत विशाल और जटिल संगठन है, जिसे आसानी से परिभाषित नहीं किया जा सकता है और न किया जा सकता था। हमारा एक सदस्य-आधारित, क्लब-आधारित और सेवा-आधारित संगठन है; साथ ही हम, स्थानीय, क्षेत्रीय और अंतराष्ट्रीय है; हमारे संगठन में सामुदायिक सदस्य, व्यवसायी और पेशेवर, कार्यरत और सेवानिवृत्त लोग शामिल हैं, जो विश्व के प्रत्येक देश में सक्रिय हैं। हमारे 1.2 मिलियन सदस्यों में से प्रत्येक सदस्य के पास लक्ष्यों, अनुभवों और प्राथमिकताओं का एक अद्वितीय समूह है; हम सभी का रोटरी की एक अद्वितीय समझ हैं। मेरे लिए, रोटरी का महत्व इस बात से नहीं है कि हम कौन हैं, बल्कि इस बात से है कि हम क्या करते हैं, तथा उस क्षमता है जिसे रोटरी हमें प्रदान करती है, और जिस तरीके से हम महसूस करते हैं कि वह सामर्थ्य सार्थक और स्थायी सेवा में है.... तथापि अपने मूल सिद्धांतों में, हम एकसमान ही रहते हैं: जबर्दस्त इच्छाशक्ति के साथ और रोटरी के माध्यम से लोगों का एक ऐसा संगठन, जो अपने समुदायों और संसार में एक बदलाव लाने की क्षमता से लैस है। 'रोटरी क्या है'?, इस प्रश्न का उत्तर हम अपने कार्यो के माध्यम से, अपनी सेवा के माध्यम से एक बदलाव का निर्माण करते हुए देते हैं....

एक रोटरियन के रूप में, हमारा क्लब कैसे बैठकों का आयोजन करना, कार्य करना और विकास करना चाहता है, इसके बारे में निर्णय लेने के लिए हमारे पास पहले की अपेक्षा अधिक नम्यता है। हम पहले कि अपेक्षा इस बात पर अधिक ध्यान केंद्रित कर रहे हैं कि रोटरी जिन लोगों की सेवा करती हैं.... उनके सेवा-कार्यो से रोटरी की झलक दिखाई दें... और दीर्घकालिक योजना पर बल देते हुए, स्थायी सेवा और सभी स्तरों पर नेतृत्व में निरंतरता के माध्यम से रोटरी को विश्व की प्रतिष्ठित स्वयंसेवी सेवा संगठन बनाए रखने के लिए कठिन परिश्रम कर रहे हैं। वर्ष 2017-18 में हम इस प्रश्न: 'रोटरी क्या है?' का उत्तर *रोटरी : परिवर्तन ला रहा है* के माध्यम से देंगे। चाहे हम एक नए खेल-कूद के मैदान का निर्माण कर रहे हैं या फिर एक नए स्कूल का, चिकित्सा सेवा या स्वच्छता में सुधार कर रहे हैं, या फिर संघर्ष में मध्यस्थता की भूमिका निभाने के लिए लोगों या घरेलू-परिचायिकाओं को प्रशिक्षित कर रहे हैं, हम जानते हैं कि हम जो भी कार्य करेंगे उसके माध्यम से छोटे या बड़े तरीके से लोगों के जीवन में परिवर्तन का सूत्रपात निश्चित ही करेंगे.... रोटरी से जुड़ने के लिए हमें जिस किसी से भी प्रोत्साहन या प्रेरणा मिली है, परन्तु यह संतुष्टि ही है जो हमें रोटरी से जोड़े रखती है, यह जानने की संतुष्टि कि सप्ताह दर सप्ताह, वर्ष दर वर्ष, हम *रोटरी : परिवर्तन ला रहा है* का एक हिस्सा है। (कृपया संपूर्ण भाषण पढ़ने के लिए रोटरी के वेबसाइट को विजिट करें)।

मनोज देसाई
निदेशक, रोटरी इंटरनेशनल

हमारे फाउंडेशन की दीर्घकालीन प्रतिबद्धता शांति है।

इस वर्ष फरवरी माह में, आइये हम सभी मिलकर अपने रोटरी शांति केंद्रों की सफलता और कार्यक्रम के स्नातकों द्वारा किये जा रहे शांति तथा संघर्ष - रोकथाम/समाधान माह का उत्सव मनाएं। मेरे विचार में यह भी ध्यान देने योग्य तथ्य है कि शांति केन्द्रों की स्थापना वर्ष 2002 में हमारे फाउंडेशन द्वारा अनेक दशकों के शांति निर्माण के प्रयासों का बहुत बड़ा हाथ रहा है।

वर्ष 1930 में फ्रांस और जर्मनी में क्लबों ने पेटिट कोमीट, जिसे अब एक इंटर कंट्री समिति के नाम से जाना जाता है का गठन किया। दोनों देश अभी भी एक विशाल युद्ध की विभीषिका से उबर रहे थे, परंतु पहले के कठिनायों से वे जान चुके थे की शांति - चाहे वह कितनी ही अस्थायी क्यों न हो - अपना प्रभाव दिखा रही थी। हालाँकि द्वितीय विश्व युद्ध ने उनकी आशाओं पर पानी फेर दिया, इन शांति के दूत रोटरियनों ने अपनी एकजुटता को वर्ष 1950 में फिर से प्रदर्शित किया, तब से लेकर, रोटरियनों ने 250 इंटर कंट्री समिति का गठन अंतराष्ट्रीय मैत्री और सेवा को बढ़ाने के लिए किया है।

रोटरियनों का लम्बे से मानना रहा कि अंतराष्ट्रीय - समझ को व्यक्तिगत संबंधों के माध्यम से तेजी से विकसित किया जा सकता है। विदेश कार्यक्रमों और अंतराष्ट्रीय व्यवसायों का अध्ययन करने से पहले - यात्रा करना आम बात हो गया, तब हमारे फाउंडेशन ने विद्वानों और युवा - पेशेवरों को विभिन्न देशों में भेजा ताकि वे वहाँ के जीवन और व्यवसाय करने के तरीकों को जान-समझ सके। अनेक प्रतिभागियों के लिए, इन जीवन में परिवर्तन लाने वाले साहसिक यात्रायों ने उन्हें अपने मेजबानों के नेत्रों से संसार को जानने समझने की एक नई विचारधारा प्रदान की, जो अक्सर निकट मित्रता में बदल गई।.

प्रत्यके वर्ष हमारा फाउंडेशन लाखों डॉलर उन परियोजना पर व्यय करता है जो संघर्ष की जड़ों पर प्रहार करते हैं - जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, आर्थिक अवसर, स्वच्छ पेयजल, और पर्याप्त स्वच्छता की कमी है। हमारी वैश्विक अनुदानों की अद्वितीय विशेषता है जो शांति की सुई को और आगे बढ़ाने में मदद करती है: इसके योग्य होने के लिए, परियोजना के प्रायोजकों में कम से कम दो देशों के क्लब शामिल होना चाहिए। स्थानीय ज्ञान को अंतराष्ट्रीय ज्ञान और फाउंडेशन के संसाधनों के साथ संयुक्त करने के अलावा, ये परियोजनाएं प्रायोजित करने वाले क्लबों के बीच दीर्घकालीन सेवा संबंधों का निर्माण करती हैं।

बेशक, अंतराष्ट्रीय- मैत्री का निर्माण करने के सर्वश्रेष्ठ स्थानों में से एक हैं हमारा अंतराष्ट्रीय सम्मेलन- जहाँ विभिन्न देशों के रोटरियनों के साथ एकत्र होते हैं। इस वर्ष एटलांटा में हम, रोटरी फाउंडेशन के संसार में लोककल्याणकारी कार्यो की 100 वीं वर्षगांठ मनाएंगे। मुझे आशा है कि आप इस वर्ष सबसे बड़ी जन्मदिन की पार्टी में साथी रोटरियनों के साथ अवश्य शामिल होंगे!

कल्याण बैनर्जी
फाउंडेशन ट्रस्टी अध्यक्ष

कैंसर की देखभाल में गुणवत्ता मामले

पूर्व की अपेक्षा अधिक बच्चे कैंसर से जीवित बच रहे हैं। अधिकांश प्रकार के कैंसर पूर्ण रूप से ठीक किए जा सकते हैं किंतु या तो उसके लिए अधिक सुविधाएँ सज्जित नहीं थीं अथवा लोग सजग नहीं थे। कारण भिन्न थे, कुछ मरीज विशिष्ट और कुछ तुच्छ थे। उदाहरण के लिए, अस्पताल तक जाने के लिए धन न होना अथवा यहाँ उनका साथ देने के लिए कोई नहीं, ऐसा नहीं कहा जाना कि बीमारी चार अथवा पाँच मुलाकातों में पूर्ण रूप से ठीक की जा सकती है, इत्यादि।

आँकड़े खुलासा करते हैं कि प्रत्येक वर्ष हमारे राज्य में लगभग 6000 से 8000 बच्चों में कैंसर की पहचान होती है। हमारे राज्य में ठीक होने की समग्र दर का आकलन 10% किया जाता है जब विश्वव्यापी मानक 90% से तुलना की जाती है।

उन बच्चों में से 40% BPL से संबंध रखते हैं। कैंसर का उपचार बहुत महँगा है और इन लोगों के लिए वहनीयता के परे है, जिसका परिणाम मृत्य होता है। वंचित वर्ग के बच्चों के पास कोई साधन अथवा वित्तीय सहायता नहीं होती है। बसावर्तकम इंडो अमेरिकन कैंसर हॉस्पिटल एंड रिसर्च इंस्टिट्यूट (BIACHRI) आप जैसे संरक्षकों के उदार दानों के माध्यम से निशुल्क उपचार प्रदान करने के पदों में ऐसे लोगों की सहातया करता है। उपचार में आवश्यकता के आधार पर कीमोथेरेपी, रेडियोथेरेपी और सर्जरी सम्मिलित होती है।

हम कैंसर से लडने वाले बच्चों की देखभाल को सुधारने के लिए हमारे प्रयास में आपकी उदार सहायता की वास्तव में प्रशंसा करते हैं। आपका योगदान आयकर अधिनियम की धारा 80G के अंतर्गत खढ लाभों का पात्र है।

प्राप्त दानों का खाता पृथक रूप से रखा जाता है और उल्लेखित उद्देश्य के लिए न्यायपूर्वर्क खर्च किया जाता है

हम रु 50,000 और अधिक के दानदाताओं को स्वयं और दंपत्ति के लिए एक प्रशंसात्मक कैंसर चेक, रु 25,000/- और अधिक के दानदाताओं को स्वयं के लिए एक प्रशंसात्मक कैंसर चेक और रु 10,000/- हम स्वयं के लिए कैंसर जाँच पर 10% छूट प्रदान कर रहे हैं।

समय निर्धारण के लिए कृपया संपर्क कीजिए +91 95537 98500, +91 98493 98879

For those using EFT/ NEFT/ RTGS payment System INR donations to the following Bank Account.

Name of the Account: **Smt. Nandamuri Basavataraka Rama Rao Memorial Cancer Foundation Corpus Fund A/c.**

Bank Account No.: **151411100000070**

Name & Address of the Bank: Andhra Bank, Road No.14, Banjara Hills, Hyderabad - 500 034

MICR Code No.: 500011118 | IFSC Code No.: ANDB0001514 | SWIFT Code: ANDBINBB

You can also pay Online or with your Credit Card. Visit our **www.induscancer.com**

Please download form from our website and send in duly filled along with your cheque/ DD to the below address

BASAVATARAKAM INDO-AMERICAN CANCER HOSPITAL & RESEARCH INSTITUTE

Dept. of Corporate Affairs and Strategic Alliance

BASAVATARAKAM INDO-AMERICAN CANCER HOSPITAL AND RESEARCH INSTITUTE

Promoted by Smt. Nandamuri Basavataraka Ramarao Memorial Cancer Foundation and Indo-American Cancer Organisation

Road No. 14, Banjara Hills, Hyderabad - 500 034 India T: +91 40 2355 1235 Ext. 2315

WINNER 2015

CNBC TV18 & ICICI LOMBARD India Healthcare Awards, 2014

Best Single Speciality Hospital "ONCOLOGY"

Amongst India's 15 Best Cancer Hospitals

The WEEK-NIELSEN Survey, 2013 & 2014

www.induscancer.com

Toll-free: 1800 4253 6666

लैंगिक असंतुलन: रोटरी के सम्मुख एक बड़ी चुनौती

रशीदा भगत्

ROTARY: MAKING A DIFFERENCE

रोटरी वर्ष 2017-18 की विषय वस्तु के रूप में *रोटरी: परिवर्तन ला रहा है* का अनावरण करते हुये रो इ के आगंता निर्वाचित अध्यक्ष इयान रैसली ने रोटरी में अधिक महिलाओं तथा युवा सदस्यों को शामिल कराने के पक्ष में जोरदार बयान दिया। ''जब हम उन चुनौतियों की ओर देखते हैं जिन्हें आगामी सालों में हमें काबू में लाना है, तो उनमें से दो मुझे खास मालूम होते हैं; एक है हमारी सदस्यता में लैंगिक असंतुलन और दूसरा है रोटेरियनों की औसत उम्र।''

अब ''विधि परिषद द्वारा हमारे रोटरी क्लबों में महिला सदस्यों को दाखिल कराने के पक्ष में फैसले को 20 साल हो चुके हैं। फिर भी दस साल पहले महिला रोटेरियनों की संख्या 13 प्रतिशत थी और अब केवल 20 प्रतिशत तक ही बढ़ी है।''

इस हिसाब से, ''लैंगिक समानता'' हासिल करने यानि रोटरी क्लबों में जितने पुरुष सदस्य हो उतनी ही महिला सदस्यायें, रोटरी को और तीन दशक लग जायेंगे, रैसली ने, सैन डियागो के इंटरनेशनल असेंबली में, 2017-2018 वर्ष के आगंता मंडलाध्यक्षों को संबोधित करते हुये कहा।

हमें अधिक महिलाओं की ज़रूरत है

''हम जानते हैं कि हम अकेले कोई काम करने के मुकाबले मिलकर काफी कुछ कर सकते हैं।

एक ऐसे रोटरी को हासिल करने, जो इस दुनिया को प्रतिबिंबित करता हो जिसमे हम रहते हैं, तीन दशकों तक इंतजार करना काफी लंबी अवधि है। हमें अब उसे एक प्राथमिकता बनानी होगी,'' उन्होने कहा।

यह गौर करते हुये कि 539 आगंता मंडलाध्यक्षों में से 103, महिलायें हैं, डीजीईओं के दल की महिलाओं को रैसली ने संबोधित किया ''आप ही ऐसी महिलाओं की आदर्श मिसाल हैं जिनकी रोटरी को ज़रूरत है; नेताओं के रूप में महिलायें जो रोटरी के साथ संबध्द हो पाये, उसका प्रतिनिधित्व कर पाये, और हर समुदाय के सदस्यों की बेहतर सेवा कर पायें।''

रोटरी के सम्मुख दूसरी चुनौती थी उसके सदस्यों की उम्र। ''पॉल हैरीस केवल 26 साल की उम्र के थे जब उन्होंने रोटरी की स्थापना की थी; आज दर्ज करायी गयी हमारी सदस्यता का केवल 5 प्रतिशत ही 40 साल से कम उम्र का हैं। हमारे ज्यादातर सदस्यों की उम्र 60 साल से अधिक है।'' यह आंकड़ा भी ''दर्ज करायी गयी उम्र'' के आधार पर था जो हमारी सदस्यता के महज़ पचास प्रतिशत को ही सम्मिलित करता है। उसमें उन लोगों को भी शामिल नहीं किया गया है जो हमें अपनी उम्र बताना नहीं चाहते!''

सभा कक्ष में खिलखिलाती हँसी के बीच उन्होंने कहा,''अब जरा एक घड़ी उस बारे में सोचे और फिर विचार करें कि अब से 10-20 सालों में रोटरी कैसा होगा यदि जल्द ही हम युवा सदस्यों को ले आने के बारे में गंभीरता से विचार नहीं करते,'' रैसली ने आगे कहा, ''हमारी संस्था को पनपने के लिये यह ज़रूरी है।''

रोटरी के आगे एक और अत्यावश्यकता, धारणीयता के सिद्धांत का एक अहम पहलू जिस पर रोटरी को भरोसा है, ''और जो उन सब बातों को आधार दिलाता है जिसका हम समर्थन करते हैं, जिसके बारे में कम चर्चा की जाती है, लेकिन जिसमें हम अब और विलंब नहीं कर सकते,'' वह है हमारे

RIPE इयान रैसली इंटरनेशनल असेंबली में अपने विषय रोटरी: परिवर्तन ला रहा है की घोषणा करते हुए।

भूग्रह की धारणीयता। रो इ के अध्यक्ष पॉलो कोस्टा ने 1990 में रोटेरियनों से अर्ज़ किया कि वे भूग्रह का संरक्षण करें और यह ''आज और भी समयोचित हो गया है क्योंकि पर्यावरणीय अपकर्षण और मौसम में बदलाव हम सभी के लिये खतरा पैदा करते हैं।'' ये दो खतरे ''उन लोगों के लिये और भी ज्यादा खतरनाक है जिनके प्रति रोटरी की सबसे बड़ी जिम्मेदारी है। फिर भी पर्यावरणीय मुद्दे रोटरी की कार्यसूचि में मुश्किल से दर्ज होते है। अब वह जमाना नहीं रहा जब पर्यावरणीय धारणीयता को रोटरी की चिंता का विषय नहीं माना जाता था। वह हर किसी की चिंता का विषय है और हो,'' उन्होंने कहा।

एक रोटेरियन, एक पेड़

यह कहते हुये, RIPE महोदय ने सभी रोटेरियनों से पेड़ों को रोपने के लिये जोशपूर्ण अर्ज़ किया; प्रत्येक सदस्य की ओर से एक के हिसाब से ''नये रोटरी वर्ष (1 जुलाई) और भूग्रह दिवस (22अप्रैल 2018) के बीच किसी दिन। उन 1.2 मिलियन नये पेड़ों से पर्यावरण अत्याधिक लाभाँवित होगा।''

इससे भी अहम बात यह है कि ''वह ना केवल इस भूग्रह के लोगों के प्रति बल्कि खुद भूग्रह के प्रति भी हमारी जिम्मेदारी का बयान करता है!''

रोटरी के सम्मुख एक और सामरिक प्राथमिकता थी मानव सेवा कार्यों को बढ़ाना, रैसली ने कहा। छह संकेंद्रण के क्षेत्रों में एक था धारणीयता। रोटेरियन ''महज़ कुयें खुदवाकर तुरंत चले नहीं जाते,''; वे सुनिशिचत कर लेते हैं कि जो अस्पताल उन्होंने बनवाये थे वे सही तरीके से चल रहे है और ''जब कभी पोलियो की बात आती है, हम ना केवल उसे काबू में रखने की दिशा में काम कर रहे हैं, बल्कि हम उसका पूरी तरह से खात्मा करने की दिशा में भी काम कर रहे हैं। यह एक लागत है, जिसका वैश्विक पैमाने पर, ना केवल दीर्घकालीन बल्कि एक स्थायी लाभ मिलेगा, क्यों कि रोटरी के इतिहास में पोलियो अनोखी परियोजना है। वह हमें बतलाता है कि हम क्या हासिल करने की काबिलीयत रखते है और हमारी सेवाओं के लिये आदर्श क्या हो।'' उसने असरदार तरीके से दिखला दिया है कि किसी भी काम को करने का बेहतरीन तरीका है, ''धारणीयता के लिये और दूसरों के साथ सहभागिता में वह काम करना।''

निर्वाचित-अध्यक्ष ने कहा रो इ बोर्ड ने, अपनी सामरिक योजना में जिन तीन प्राथमिकताओं को निर्धारित किया वे थी, रोटरी क्लबों की सहायता करके उन्हें सशक्त बनाना, उसकी मानव सेवा परियोजनाओं को बढ़ाना तथा रोटरी की जन छवि को बेहतर बनाना।

जबकि टीआरएफ अनुदानों की प्रक्रिया को सरल बना दिया जायेगा, क्लबों को विभिन्न तरीकों में सशक्त बना दिया जायेगा और ''एक काफी ज्यादा असरदार 'रोटरी क्लब सेंट्रल' होगा, जो बेहद तीव्रतर, उपयोग करने में आसान, मोबाइल-मित्रवत् और हर

रो इ अध्यक्ष जॉन जर्म और जूडी जर्म।

एक क्लब के लिये एक अनिवार्य साधन होगा,'' रैसली ने कहा।

''हम जानते हैं कि हम अकेले जितना करने की उम्मीद कर सकते हैं उससे ज्यादा हम मिलकर कर सकते हैं,'' उन्होंने डीजीईओं से कहा। ''मैं आपसे अपने दिमाग में हमेशा सामूहिक कार्य और सहयोग की उस भावना को बनाये रखने और उसे वापिस अपने साथ, अपने मंडल में भी ले जाने का अनुरोध करता हूँ।''

पहले, 2017-18 वर्ष के मंडलाध्यक्षों का स्वागत करते हुये, रो इ के अध्यक्ष जॉन जर्म ने कहा, ''इंटरनेशनल असेंबली को यूँ डिजाइन किया गया है कि जो आगामी साल के लिये आपको तैयार करने प्रशिक्षण, सूचना और प्रेरणा प्रदान करेगा। हमारा लक्ष्य है आपके रोटरी ज्ञान को बढ़ाना, उन चुनौतियों के बारे में आपको अद्यतन कराना जिनका हमे सामना करना पड़ा, रोटरी की अंतर्राष्ट्रीयता के बारे में अपने अनुभव को व्यापक बनाना, रोटरी के आदर्श *स्वयं से बढ़कर सेवा* को उदाहरणीय बनाना और सबसे बड़ी बात आमोद प्रमोद का लुत्फ उठाना।''

जनरल अधिकारियों, प्रशिक्षक नेताओं तथा इतर ऐसे लोगों के एक समर्पित तथा निपुण दल द्वारा डीजीओं के रूप में उनके सफर के लिये उन्हें तैयार कर दिया जायेगा। असेंबली में, उनके सह-निर्वाचित अध्यक्षों के साथ उन्हें रो इ के बोर्ड सदस्यों, फाउंडेशन के ट्रस्टियों तथा रो इ के भूतपूर्व अध्यक्षों से मिलने का मौका भी मिलेगा। ''उनसे मुलाकात करने, मिल जुलने तथा रोटरी के बारे में अपने ज्ञान को बढ़ाने के हर एक मौके का फायदा उठायें। इस तीव्र लेकिन पारितोषिक सप्ताह के प्रशिक्षण के अंत में आप अपने मंडल के रोटेरियनों की सहायता करने तथा रोटरी के 2017-18 वर्ष के लक्ष्यों को हासिल करने पूरी तरह से तैनात रहेंगे। हम जानते हैं कि इंटरनेशनल असेंबली में एक साथ बिताये गये वक्त की सुहानी यादें भी आप अपने साथ ले जायेंगे जब आप रोटरी नेताओं की विशिष्ट श्रेणी में शामिल हो जायेंगे,'' जर्म ने मंडलाध्यक्ष की हैसीयत से अपने कार्य वर्ष में कामयाबी की कामना करते हुये कहा।

चित्र: रशीदा भगत्

जीवन परिवर्तनीय अनुभव

इंटरनेशनल असेंबली के उद्घाटन सत्र का संबोधन करते हुये, रो इ के आगंता अध्यक्ष इयान रैसली ने कहा, मंडलाध्यक्षों से खचाखच भरे इस महा कक्ष ने उन्हें 20 साल पहले के उनके IA की याद दिलायी है। उन्होंने आगे कहा, ''तब के मंडलाध्यक्ष ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि यह इंटरनेशनल असेंबली एक जीवन परिवर्तनीय अनुभव होने के साथ रोटरी में मेरा सबसे बढ़िया अवसर भी साबित होगा। वे बारंबार यही कहते रहे कि मैं कुछ ऊब सा गया।''

''मैंने महसूस किया कि IA आमोद प्रमोद से भरपूर हो, उसमे काफी कठिन परिश्रम हो, लेकिन मुझे उम्मीद नहीं थी कि वह मेरी जिंदगी को बदल देगी। आपको यह जानकर ताज्जुब होगा कि मैं सही था। मेरे इंटरनेशनल असेंबली ने मेरी जिंदगी को नहीं बदला। वह मज़ेदार था, हमने बेहद कठिन प्रयास किया, काफी सबक सीखे, सिर को नाज़ के साथ ऊँचा उठाकर घर वापिस गये, दोस्ती बनायी। वह एक अद्भुत अनुभव था लेकिन जीवन परिवर्तनीय नहीं था।''

लेकिन आगामी साल ऐसा ही था: अपने सह डीजीईओं के साथ किसी होटल में सात दिनों में नहीं, ''बल्कि डीजी की हैसीयत से 365 दिनों में यह देखना कि यदि मैं अपना काम सही तरीके से करता तो रोटरी कितना फर्क महसूस करा पायेगा।''उन्होंने खुद अपनी आंखों से देखा कि किस तरह वे और उनका मंडल लोगों की जिंदगियाँ बदल पायेगा और बदलेगा। ''आप और हम मिलकर कुछ बेहद बड़ा काम कर रहे हैं... एक ऐसा अनुभव जो ऐसे लोगों की जिंदगियाँ बदल देगा जिन्हें हम जानते तक नहीं हो या शायद कभी मिल भी नहीं पाते हो। असल में वहाँ से निकलने के बाद हम जो करते हैं वही असली फर्क महसूस कराता है... हम यहाँ इंसानों की मदद करने और एक धारणीय रोटरी का निर्माण करने के लिये आये हैं।''

A holiday in Great Britain will be a dream come true. Enjoy sweeping views of **London's** famous streets, churches and monuments from the London Eye. Rub noses with celebrities at Madam Tussauds, linger at the incredible Natural History Museum, soak in the glory of the erstwhile British Empire on a Champagne cruise down the legendary Thames. Stop by at the famous university town of **Oxford**, as you ascend the gently rolling hills of Cotswolds on your way to the birthplace of William Shakespeare, **Stratford-upon-Avon**. Step into fearsome dungeons and fragrant gardens, as you go back a thousand years at medieval Warwick Castle. Dive into an underwater world of sharks, seahorses and starfish at Sea Life Manchester. Explore the rugged moorland and lush meadows of the **Peak District**, pay your respects at hallowed Old Trafford, **Manchester's** Theatre of Dreams. Marvel at stately Edinburgh Castle, on a stroll across the cobbled streets of **Edinburgh**, the capital of **Scotland**. Unearth the secrets of the Royal Mile, embark on a unique Scotch Whisky Experience, scour the Scottish Highlands for the elusive **Loch Ness** monster.

Experience Great Britain on a holiday with Mercury Travels. Every moment will stay with you for life.

Legendary Highlights of United Kingdom (9N/10D): Covering London, Manchester, Edinburgh & Surrounds

Email : outbound@mercurytravels.in
www.mercurytravels.co.in

MERCURY TRAVELS
Experiences that take you far. Experiences that bring you closer.

HOLIDAYS | FOREIGN EXCHANGE | BUSINESS TRAVEL | INCENTIVES | TRAVEL INSURANCE

Call Mercury Travels at Mumbai: 022 6615 3477-82 | Ahmedabad: 079 4004 9913-15 | Bangalore: 080 4241 3005-06 | Chennai: 044 2852 2840-2995 Kolkata: 033 6626 8400-8404 | New Delhi: 011 4518 6121/11/08/00 | Pune: 020 6725 1300-02 | Secunderabad: 040 2781 9232/9200 | Email us at outbound@mercurytravels.in or log on to www.mercurytravels.co.in | Join us on

mezzanine.co.in

सैन डिएगो में निखर उठा भारत

बाएं से: सोनल और DGE गण मौलिन पटेल, संजय गिरि, डी एम शिवराज, रवि चौधरी और रितु।

RIDE सी भास्कर और मालती के साथ डी जी ई गण और उनके जीवनसाथी।

बाएं से: DGE गण विवेक कुमार, आर श्रीनिवासन, PDG ए एस वेंकटेश RID मनोज देसाई के साथ।

ग्रैंड मार्च में भारतीय दल।

प्रभा और DGE सत्तीश सिंघल, विद्योत्तमा शर्मा, सोहंगि और DGE रुचिर ए जानी।

DGE गण और उनके जीवनसाथी RIDE सी भास्कर और मालती के साथ।

DGE आर श्रीनिवासन और सुजाता अंतरराष्ट्रीय प्रतिनिधियों के साथ।

बाएं से: DGE ओवैस कोहरी (मंडल 3271), आलिया कोहरी, DGE ब्रोजो गोपाल कुंडू और बंदना, DGE ज़र्मी हुसैन पाकिस्तान के प्रतिनिधियों के साथ।

अपने सर्वश्रेष्ठ पारंपरिक अवतार में।

चित्र : रशीदा भगत्, एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपांकित

District Wise TRF Contributions as on December 2016

(in US Dollars)

District Number	APF	PolioPlus*	Other Restricted	Endowment Fund	Total Contributions
India					
2981	1,10,561	3,021	0	0	1,13,582
2982	18,298	2,799	0	0	21,097
3000	1,14,408	0	69,000	50,000	2,33,408
3011	76,450	274	2,028	0	78,752
3012	1,21,799	1,067	40,381	0	1,63,248
3020	26,648	12,958	0	71,643	1,11,250
3030	9,055	0	91,448	8,500	1,09,002
3040	104	0	10,000	0	10,104
3051	9,340	27	0	0	9,367
3052	(26,925)	0	26,925	0	0
3053	227	0	0	0	227
3060	62,925	100	14,706	48,351	1,26,082
3070	50,602	769	6,191	0	57,562
3080	17,582	13,245	40,557	17,333	88,717
3090	34,813	0	0	0	34,813
3110	20,134	26,371	0	0	46,505
3120	13,266	149	0	0	13,415
3131	1,88,012	24,864	1,47,074	1,09,955	4,69,905
3132	36,034	1,855	11,025	0	48,915
3141	2,62,152	13,525	1,58,311	3,640	4,37,628
3142	86,293	0	5,250	1,000	92,543
3150	1,23,411	7,444	26,241	87,585	2,44,681
3160	48,479	555	0	0	49,035
3170	33,218	3,498	(2,944)	50,000	83,773
3181	1,06,739	0	21,470	0	1,28,209
3182	16,317	2,287	0	25,373	43,977
3190	21,036	(12,306)	64,900	0	73,630
3201	30,204	664	1,015	0	31,883
3202	18,223	200	0	0	18,423
3211	38,527	1,015	1,400	1,015	41,957
3212	46,994	1,600	0	1,000	49,594
3230	1,25,903	177	41,629	12,500	1,80,209
3240	60,678	1,262	0	2,866	64,805
3250	9,640	0	722	0	10,362
3261	9,834	100	0	0	9,934
3262	67,110	3,873	90,260	2,000	1,63,242
3291	76,172	0	44,619	0	1,20,791
India Total	**20,66,290**	**1,11,392**	**9,12,209**	**4,92,761**	**35,82,652**
3220 Sri Lanka	40,931	25	100	11,043	52,100
3271 Pakistan	46,140	7,012	0	100	53,252
3272 Pakistan	75,806	21,592	0	3,000	1,00,397
3281 Bangladesh	1,06,209	4,050	11,850	6,100	1,28,209
3282 Bangladesh	39,367	0	0	2,000	41,367
3292 Nepal	1,08,905	1,100	1,22,997	0	2,33,002
South Asia Total	**24,83,648**	**1,45,170**	**10,47,156**	**5,15,004**	**41,90,979**
World Total	**6,12,73,961**	**1,38,34,916**	**55,77,145**	**1,33,68,057**	**9,40,54,078**

** Excludes Bill and Melinda Gates Foundation.*

Source: RI South Asia Office

WHERE WILL ROTARY GLOBAL REWARDS TAKE YOU?

THE MEMBER BENEFIT PROGRAMME THAT OPENS UP A WORLD OF OPPORTUNITIES.

Rotary

SEE MORE AT ROTARY.ORG/GLOBALREWARDS

एक नये साँस्कृतिक अवतार में ग्रुप स्टडी एक्सचेंज की वापसी

रशीदा भगत्

इंटरनेशनल असेंबली में, रो इ के निर्वाचित अध्यक्ष इयान रैसली ने पहले बेहद मशहूर GSE (सामुहिक अध्ययन आदान प्रदान) कार्यक्रम के एक सुधारित तथा नये प्रारूप का ऐलान किया। ''मेरे जैसे अनेक रोटेरियनों को, पुराने कार्यक्रम में पाये गये साँस्कृतिक पहलू की कमी महसूस हो रही है। हमारे बेहतरीन और होनहार लोगों के बीच एक लघु आदान प्रदान के ज़रिये विश्व समझ और शाँति निर्माण करने के अवसर की कमी।'' कुछ मंडलों ने इसी कार्यक्रम को जारी रखा, उन्होंने कहा, लेकिन ''उन मंडलों के अंतर्गत अनेक रोटरी नेताओं को आदान प्रदान सहभागियों को ढूँढ पाने में कठिनाई महसूस हो रही है...क्योंकि इस वक्त इस बारे में जानकारी देने वाली कोई प्रक्रिया या मैकेनिज्म उपलब्ध नहीं है।''

सो, रो इ के बोर्ड ने इस बात पर बहस की कि ''हम किस तरह इस ज़रूरत को पूरा करें? हम किस तरह उसे कार्यान्वित करें?'' रैसली ने कहा उन्होने पाया कि इस तरह के आदान प्रदानों के लिये एक अवसर '' पहले से ही रोटरी फ्रेंडशिप एक्सचेंज की नीति के अंतर्गत सीमित तरीके में मौजूद था।'' सो उन्होंने बोर्ड से, मौजूदा नीति में बदलाव ले आने का निवेदन रखा। अब सुधार कर दिया गया है और ''जुलाई 1, 2017 से हम आपको सामूहिक साँस्कृतिक आदान प्रदान (GSE)को प्रायोजित करने पर प्रोत्साहित करते हैं जिसे रोटरी फ्रेंडशिप एक्सचेंज नीति के झंडे तले कार्यान्वित किया जायेगा और इसमें रोटेरियन तथा गैर रोटेरियन भी शामिल होंगे।''

रैसली ने स्पष्टीकरण करते हुये कहा ये मंडल अपने खुद के कार्यक्रमों को सूत्रित कर पायेंगे और ''इस कार्यक्रम की जगह दूसरे किसी कार्यक्रम को रखने का इरादा नहीं है, जैसे VTT जिसे इस वक्त क्लबों द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है। यह विश्व समझ का निर्माण करने का महज एक और मार्ग है, जो एक ऐसा अनुभव पाने का अवसर प्रदान करता है जो अनेक लोगों के लिये बेहद मूल्यवान साबित हुआ।''

टीआरएफ से निधिकरण नहीं

लेकिन RIPE ने स्पष्ट कर दिया कि इन सामूहिक साँस्कृतिक एक्सचेंज कार्यक्रमों को टीआरएफ से निधि नहीं मिलेगी। ''मैं समझता हूँ कि कुछ मंडल इस तरह के आदान प्रदान कार्यक्रमों के लिये मंडल अनुदानों का उपयोग कर रहे हैं, बेशक इस तरह के अनुदानों के नियमों के अनुरूप।'' इवांस्टन में रो इ के कर्मचारी इन नियमों के बारे में क्लबों तथा मंडलों को अवगत कराया। लेकिन इस बात की आजादी रहेगी कि क्लबों, मंडल अनुदानों या व्यक्तियों से निधि मिल सकती है। और गृह-आवासों में ठहरने का मतलब है केवल यात्रा खर्च ही करना होगा, ''जो उससे होने वाले फायदों के मुकाबले काफी कम ही होगा।''

रैसली ने DGE को सलाह दी कि वे इसके लिये अपने मंडलों में रोटरी फ्रेंडशिप एक्सचेंज के चेयर को नियुक्त करें और सहभागियों को ढूँढने, इंटरनेशनल असेंबली (IA) में अपने समय का पूरा उपयोग करने के लिये अर्ज किया, और आगे कहा, ''मैं इस बात से बेहद खुश और उत्साहित हूँ कि यह एक ऐसा बढ़िया अनुभव होगा जिसे हम फिर एक बार रोटरी की ओर से दिला सकते हैं।''

> इस नये आत्म विश्वास ने मेरे अंदर के संकोच को दूरकरने तथा नयी और अधिक कठिन चुनौतियों का सामना करने में मदद की, मिसाल के लिये किसी विधि स्कूल की सख़्ती।
>
> **पीआरआईपी रै क्लिंगनस्मिथ**

रो इ अध्यक्ष पद के लिए निर्वाचित इयान रैसली।

Group study exchanges back in a new cultural avatar - Hindi.indd 20 06-02-2017 15:43:32

> मेरे जैसे अनेक रोटेरियनों को, पुराने कार्यक्रम में पाये गये साँस्कृतिक पहलू की कमी महसूस हो रही है। हमारे बेहतरीन और होनहार लोगों के बीच एक लघु आदान प्रदान के ज़रिये विश्व समझ और शाँति निर्माण करने के अवसर की कमी।
>
> **आरआईपीई इयान रैसली**

पीआरआईपी रै क्लिंगनस्मिथ

'वास्तविक मैं' की खोज में

सहभागिताओं पर एक सामान्य सत्र को संबोधित करते हुये, PRIP रै क्लिंगिनस्मिथ ने कहा टीआरएफ का पहला बड़ा कार्यक्रम, अंतर्राष्ट्रीय छात्रवृत्ति कार्यक्रम, 1948 में, 18 छात्रों की एक विश्व यात्रा के साथ शुरू हुयी। ''और 1965 तक, जब GSE तथा विशेष अनुदान कार्यक्रमों को शुरू किया गया, यही टीआरएफ के एकमात्र कार्यक्रम के रूप में जारी रहा।''

साल में लगभग 100 छात्र आते थे और वे बड़े खुशकिस्मत थे कि 1960-61 में उन्हे रोटरी छात्र चुना गया। अब इस कार्यक्रम के 40,000 से ज्यादा भूतपूर्व छात्र हैं ''जिसकी असली वजह है रोटेयिनों की उदारता।'' वे खुद भी ''मेरे सभी वक्तव्यों में अपनी छात्रवृत्तियों के बारे में'' बोलते नहीं थकते ''क्योंकि मुझे टीआरएफ की 'पैदावर' होने पर नाज़ है। एक पूरे शैक्षिक वर्ष के लिये किसी अन्य देश में ठहरना, सीखने का एक अद्भुत अनुभव है।''

लेकिन बदकिस्मती से उनमे से ज्यादातर छात्र कभी रोटेरियन नहीं बने, साथ ही साथ इस बात से इंकार भी नहीं किया जा सकता है कि इस अनुभव ने उनकी जिंदगियों को हमेशा के लिये बदल डाला और आगे चलकर वें जो बनने वाले थे उसमे बडा योगदान भी दिया। ''एक नयी संस्कृति के बीच रहना, पूरी तरह से भिन्न पार्श्वभूमि से आने वालों के साथ दोस्ती करना, नये कौशल विकसित करना और सबसे बड़ी बात, सही काम करने की क्षमता रखना;'' ये सभी बेहद अच्छे अवसर थे, जिन्हें एक रोटरी छात्र ने सुस्पष्ट तरीके से विवरित किया कि किस तरह रोटरी छात्रवृत्तियों ने उन्हें 'वास्तविक मैं' बनने में मदद की।

रै ने आगे कहा: ''इस नये आत्म विश्वास ने मेरे अंदर के संकोच को दूर करने तथा नयी और अधिक कठिन चुनौतियों का सामना करने में मदद की, मिसाल के लिये किसी विधि स्कूल की सख़्ती। यह एक जीवन परिवर्तनीय अनुभव से बढकर था; जिंदगी को ढालने वाला अनुभव साबित हुआ जिसकी बदौलत मैं दूसरों की सहायता करने के वचन के साथ वकालत के पेशे में आ सका। उस वचन को पूरा करने में मेरे लिये रोटरी एक सही साझेदार था और दक्षिण अफ्रीका में इस स्कूल के लिये मैं हमेशा उसका आभारी रहूँगा। आप और रोटरी की वजह से ही मैं 'वास्तविक मैं' हूँ।''

चित्र- रशीदा भगत्

IA में संगीत और हास्य की भरमार

जब रै क्लिंगिनस्मिथ के संबोधन के बाद RIPE इयन रैसली वापिस मंच पर पधारे, तो उन्होंने रै के बढ़िया वक्तव्य के लिये बधाई देते हुये कहा, ''हालाँकि मैं रै का, संकोची स्वभाव का होने की कल्पना नहीं कर पाऊँगा!'' हल्की फुल्की और हास्यास्पद बातें और फिर सभी सत्रों में बजता वह जोशीला संगीत, ये ही असेंबली की समूची कार्वाईयों को एक समारोही रंग दिला रहे थे। रैसली ने स्वीकार किया कि उन्होंने खुद संगीत की कतरनों को चुना था और सुनिश्चित कर लिया था कि संगीत का एक अमुक कतरन उस वक्ता की शख़्सीयत से मेल खा रहा है जो अगला वक्तव्य पेश करने के लिये मंच पर जा रहे हो।

वे अक्सर खुद भी किसी सत्र को शुरू करने मंच पर आया करते थे, संगीत की धुन पर थिरकते और डाँसिंग करते हुये और भी कई तरह से; ये सभी उस शानदार सभा कक्ष में उपस्थित उन 500 से अधिक DGE तथा उनके पतियों/उनकी पत्नियों को यह संदेश पहुँचाने में मददगार साबित होगा कि उनके निर्वाचित-अध्यक्ष ने अपने नेतृत्व पद को सहजता से लिया है।

वह चाहे रो इ के अध्यक्ष जॉन जर्म हो या रैसली हो या इतर नेतागण, सभी ने DGE से यह अर्ज़ करने तथा उन्हें प्रोत्साहित करने का एक भी अवसर नहीं गंवाया कि वे दूसरे देशों, दूसरे प्रदेशों, भिन्न संस्कृतियों से आने वाले मंडलाध्यक्षों से खुलकर मिले-जुलें क्योंकि जो दोस्ती वे यहाँ करेंगे और जो रिश्ते यहाँ बनाये जायेंगे, वे ज़िंदगी भर उनके साथ बने रहेंगे।

Group study exchanges back in a new cultural avatar - Hindi.indd 21 06-02-2017 15:43:34

भारत उत्साहित है देने के बाबत में!

रशीदा भगत्

आज भारतीय रोटेरियन टीआरएफ के लिये अपने अंशदान को बढ़ाने के प्रति वचनबध्द है और "भारत में ये बातें जंगल में लगी आग की भाँति है। आप कहीं पर एक चिंगारी जलाते हैं और सारे के सारे जंगल में आग फैल जाती है। ये ऐसी आग है जिसे हम बुझाना नहीं चाहेंगे," टीआरएफ के ट्रस्टी चेयर कल्याण बैनर्जी ने *रोटरी समाचार* को बतलाया।

मुंबई में अपने 19वें माले के अपार्टमेंट में बैठकर शाँत अंदाज में बैनर्जी ने टीआरएफ से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर सवालों के जवाब दिये और अमरीकी दाताओं के मुकाबले भारतीय दाताओं के देने के तरीकों में देखी जाने वाली रोचक पहलुओं के बारे में विवरित किया।

कुछ मुख्याँश

टीआरएफ को अंशदान की बात भारत में लहर पैदा कर रही है। कल मैंने रोटेरियन मनोज इसरानी के साथ भेंटवार्ता की; वे एक AKS सदस्य हैं जिन्होंने इस साल फिर एक बार 250,000 अमरीकी डॉलर देने का वादा किया है। इसके साथ उनके अंशदान की रकम आधा मिलियन डॉलर्स हो जायेगी। मैंने उनसे पूछा क्यों और उन्होंने कहा मुझे रोटरी पर विश्वास है और जानता हूँ कि मेरे पैसे का सही तरीके से उपयोग किया जायेगा।

खैर, एक चौथाई मिलियन डॉलर की रकम बेहद बड़ी है। और उसकी दोगुनी रकम बेहद बड़ा कदम है। केवल दो भारतीय रोटेरियनों ने इससे बड़ी रकम दी है। सो, यह एक अच्छा संकेत है।

जब लोग देखते हैं कि दूसरे लोग– समझदार, दौलतमंद लोग, दे रहे हैं तो वे भी देने की सोचते हैं। मनोज इसरानी बेहद अच्छे रोटेरियन हैं, लेकिन रोटरी अधिकारियों की नज़रों का तीव्र प्रकाश उन पर पड़ा नहीं है। और फिर भी वे चुपके से आधा मिलियन डॉलर दे रहे हैं और ऐसा करने की उनकी अपनी वजहें है। हम इसी बात को प्रोत्साहित करना चाहते हैं। मुझे लगता है अधिकाधिक रोटेरियन अंशदान देने के लिये आगे आयेंगे। भारत का शुमार बड़े दाताओं में किया जा रहा है। असाधारण तौर पर बड़ी तादाद में AKS सदस्य भारत जैसे देशों से आ रहे हैं। मैं पा रहा हूँ कि फाउंडेशन को भारतीय रोटेरियनों द्वारा दिये जाने वाले अंशदानों में काफी बदलाव देखा जा रहा है।

एटलाँटा में शताब्दिक महोत्सव के लिये कौन-कौन सी मुख्य योजनायें बनायी जा रही है? क्या यह कार्यक्रम ठोस आकार लेने लगा है?

एटलाँटा बेहद बढ़िया तरीके से तैनात हो रहा है। अनेक पहलों को योजित किया जा रहा है। लेकिन इतनी जल्दी उन्हें कार्यांवित किया नहीं जा सकता है क्योंकि ये बातें आखिरी घड़ी तक भी बदलती रहती है। मिसाल के लिये एटलाँटा में ही जिम्मी कार्टर फाउंडेशन स्थित है। और महाधिवेशन के ठीक पहले उनका एक कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है और हम जानने की कोशिश कर रहे हैं कि किसी तरह की सहकार्यता की संभावना है या नहीं। यदि हम उस कार्यक्रम में प्रत्याशित कुछ नोबेल पुरस्कार प्रापकों को हमारे महाधिवेशन में भी आमंत्रित कर पायें तो बेहद बढ़िया पहल साबित होगी... हमारे शाँति छात्र कार्यक्रम के लिये यह उत्साहवर्धक साबित होगा।

शाँति छात्र कार्यक्रम कैसे चल रहा है?

रोटरी उस कार्यक्रम का पुनरावलोकन कर रहा है; हालाँकि यह रोटेयिनों की बड़े पैमाने की सहायता से किया जा रहा एक उत्कृष्ट कार्यक्रम है, हम जो सवाल

टीआरएफ ट्रस्टी अध्यक्ष कल्याण बैनर्जी मुंबई स्थित अपने घर में।

पूछ रहे हैं वह यह है कि क्या हम वाकई उसी तरह शाँति छात्रों को तैयार कर रहे हैं जैसा कि हम चाहते हैं? क्या हम इस पहल को वैसे ही आगे ले जा रहे हैं जैसा कि हम चाहते हैं? सो, अब कार्यक्रम का पुनरावलोकन, PRIP के आर रविंद्रन के नेतृत्व में एक कमेटी द्वारा किया जा रहा है। यह कमेटी, शाँति कार्यक्रमों की ओर उसी नज़रिये से देख रही है जिस हालत में वह है और क्या वह पूरी तरह से ऐसा ही है जैसा कि हम चाहते हैं या उम्मीद करते हैं कि वह जल्द ही ऐसा हो जायेगा। और बदलते वैश्विक परिदृश्य में क्या इसी की ज़रूरत है? सब कुछ बदल रहा है। जरा अमरीकी चुनावों की ओर देखिये। आज हमारी दुनिया में पूरी तरह से एक निदशनीय बदलाव देखा जा रहा है।

CSR गतिविधियाँ, रोटरी मानव सेवा कार्यों का हिस्सा बनने लगी हैं; इस बाबत में आप क्या कहना चाहेंगे?

यह एक नयी भारतीय पहल है, जिसे, मैं कहूँगा ट्रस्टी सुशील गुप्ता और मैंने, कुछ हद तक आगे

बढ़ने में मदद की है। रोटरी CSR के पक्ष में नहीं था क्योंकि कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व में ऐसा होता है कि जबकि समाज कार्य करने में तथा निधि देने में उन्हें खुशी होती है, आम तौर पर रोटरी ऐसे लोगों की ओर गौर से देखते आ रहा है जो निधि देते हैं और परियोजना में हिस्सा लेना चाहते हैं। क्योंकि मुमकिन है कि वे रोटरी की निधि, उसके प्रयासों तथा नाम की सहायता से अपना काम करवाना चाह रहे हो।

क्या उनके पास एक कार्यसूची है?

उनके पास एक कार्यसूची हो सकती है। सो हमें फाउंडेशन को इस बात पर राज़ी कराना पड़ा कि हमें उसे कुछ समय तक आजमाकर देखना होगा कि वह कैसे काम कर रहा है। अब तक इसे लोगों के बीच ज्यादा कुछ लाया नहीं गया है। बहुत कम भारतीय कंपनियाँ तथा रोटरी क्लबें ही CSR को ले आ पाये है। मुझे लगता है कुछ समय लगेगा, लेकिन यह प्रचलित हो जायेगा।

क्या आप इसके पक्ष में हैं?

मैं उसे आगे ले जाना चाहता हूँ। देखना है कि मैं इसे आने वाले चंद महीनों में कर पाऊँगा या नहीं। और पहली बार वैश्विक अनुदानों के ज़रिये कम लागत के आवासों को निधिकृत करने के लिये रोटरी सहमत हुआ है। पहले मंडल अनुदानों के ज़रिये यह निधिकरण किया जाता था। मुझे इसके लिये कुछ तकलीफ उठानी पड़ी और विश्वास दिलाने में काफी प्रयास करना पड़ा। लेकिन अब वे मान गये हैं। अब सवाल... असली मुद्दा यह है कि इससे पहले भी हम इस कार्यक्रम को ले आये थे और यह कहते हुये कई मर्तबा उसे रद्द भी कर दिया कि कम लागत के आवास बनवाने में रोटरी मदद नहीं करेगा।

> एक चौथाई मिलियन डॉलर की रकम बेहद बड़ी है। मनोज इसरानी चुपके से आधा मिलियन डॉलर दे रहे हैं और ऐसा करने की उनकी अपनी वजहें है।

लेकिन क्यों? किस वजह से?

क्योंकि दुनिया के कुछ हिस्सों में आवास बनवाने के बाबत में कुछ सवाल हैं। कुछ विकसित देशों में आप जिसे कम लागत के आवास कहते हैं उन्हें बनवा नहीं सकते। सो दुनिया के एक हिस्से के लिये वह एक कार्यक्रम बन जाता है जब कि दूसरे में ऐसा नहीं होता। दूसरे, उन विकसित देशों में यदि आप आवास बनवाना चाहते हो, झुग्गी बस्तियों में भी, तो आपको हर तरह की कानूनी जिम्मेदारी उठानी पड़ेगी। उन हिस्सों में, कानून और वकालत का पेशा काफी सशक्त है; यदि कहीं कोई गलती हो जाये या किसी को बिजली का झटका लगे और उसकी मौत हो जाये तो रोटरी को ही जिम्मेदार ठहराया जायेगा। दुनिया के हमारे हिस्से में ऐसा नहीं होगा।

अमरीकी लोग इसी तरीके से देना पसंद करते हैं, चुपके से। जबकि तारीफ किये जाने पर, गौर किये जाने पर, मान्यता दिये जाने पर भारतीय लोग और भी ज्यादा देना चाहेंगे। और इसमें कोई बुराई भी नहीं है।

सो यह नज़रिये का सवाल है, एक मनोभाव... जिस तरह हम अपनी जिंदगी जी रहे है। इसी वजह से वह स्वीकरणीय था।

अब जब कि उसे कुछ समय तक आजमा लिया गया है, मुझे लगता है यह काम करेगा। यह पहली बार तब आया जब ग्लेन किनरोस रो इ के अध्यक्ष थे। लेकिन वह इतनी बार आया और गया है कि लोगों को शक है कि यह परियोजना जारी भी है या नहीं, यह टिकी रहेगी या नहीं! ऐसा नहीं है कि रोटरी क्लबें आवास ही नहीं बनवाते। वे बनवाते हैं। लेकिन बिना किसी अनुदान के अपने ही पैसों से।

ग्लोबल ग्राँटों के ज़रिये नहीं?

हाँ। और जिस तरीके के आवास वे बनवाते हैं... भारत में आप 350 वर्ग फीट पर बने घर देख सकते हैं जिसके फर्श सादे से हो और छत महज़ लहरदार टिन के तख्तों के बने हो। मैं भूकंप के बाद तैपई गया हुआ था और उन्होंने खुद ही कम लागत के आवास बनाये थे, रोटरी के ज़रिये नहीं। वह भी फ्रिज और इतर सुविधाओं के साथ, वातानुकूलित दुमंजिला घर। वे कहते हैं इन सुविधाओं के बिना कैसे कोई घर बना सकता हैं।

सो जिस तरीके से भिन्न देशों में कम लागत के आवासों को देखा जाता है वह भी भिन्न होता है। मैंने साधारण स्कूल बनवाने पर जोर देना शुरू किया है और यह परियोजना जल्द ही शुरू हो रही है।

भारत में जिनकी बुरी तरह से ज़रूरत है! सो अब बारी है कम लागत के स्कूलों की?

कम लागत के तो नहीं, लेकिन साधारण स्कूल। भारत में किसी गाँव में बना साधारण स्कूल दो कमरों का होगा जिसमें एक शौचालय और मध्यान्ह भोजन के लिये जगह होगी। लेकिन अफ्रीका में, इसे काफी बड़ा होना होता है, शायद एक बंगले जितना।

वाकई? अफ्रीका में क्यों स्कूलों की इमारतें इतनी बड़ी हो?

मुझे नहीं पता। पूरी तरह से मैं समझ नहीं पाया हूँ। लेकिन यें ऐसे मापदंड हैं जो दुनिया के भिन्न भागों में काम में लाये जाते हैं। सो किस तरह इनका मिलान किया जाये? लेकिन मैं कहता हूँ हम इसे कार्यांवित करें और जब कभी इसमें दिक्कत पेश आयेगी तो आगे हम उसका हल भी ढूँढ पायेंगे। लेकिन दुनिया के इस बड़े हिस्से में (अफ्रीका) स्कूलों की ज़रूरत को हमें समझना होगा। एक बार हम समझ लें, हम विभिन्न भागों में देखी जाने वाली समस्याओं पर काबू पाने के तरीके ढूँढ पायेंगे।

टीआरएफ में इस साल ये दो परियोजनायें कार्यांवित की जायेंगी, जिनको लेकर मैं बेहद खुश हूँ।

इस साल का चुनौतिपूर्ण लक्ष्य

हाँ, क्यों कि यह 100वाँ साल है, हमारा लक्ष्य है 300 मिलियन डॉलर।

लेकिन भारत के लिये अगले साल की लक्ष्यित रकम बढ़ा दी गयी है। डीजीईयों ने RIDE सी भास्कर से वादा किया है कि अगले साल वे टीआरएफ के लिये 30 मिलियन जुटा रहे हैं!

जी हाँ। भारत बेहद बढ़िया प्रगति कर रहा है। भारत उत्साहित है। और इस मुकाम पर पहुँचने के बाद यदि मैं चला जाता (ट्रस्टी चेयर की हैसीयत से) तो सब कुछ व्यर्थ होकर रह जाता। उम्मीद है यह बीती बात बन जायेगी।

इस संदर्भ में मैं टीआरएफ ट्रस्टी चेयर का पद त्याग करने के आपके प्रस्ताव के बारे में एक सवाल करना चाहूँगी। बतलाइये आप ऐसा क्यों करना चाहते हैं?

परिवार से जुडी कुछ जिम्मेदारियों की वजह से; मेरे लिये परिवार हमेशा सबसे ज्यादा अहमीयत रखता है। किस्मत से हालत कुछ ठीक हो गयी है और हम यह सुनिश्चित करने की कोशिश कर रहे हैं कि टीआरएफ के काम में किसी तरह की खलल पैदा ना हो जाये और इवांस्टन में मेरी नामौजुदगी के बावजूद हर काम ऐसे ही चल रहा है जैसा कि पहले। लेकिन रोटरी में अनेक उत्कृष्ट नेतागण हैं जो बेहद मददगार होंगे इसलिये नियमित कार्य शैली में कोई खास फरक नहीं पड़ेगा।

पिछले साल फाउंडेशन को अंशदान देने में जापान को पछाड़कर भारत दूसरे स्थान पर आ गया। आप क्या कहना चाहेंगे?

भारतीय रोटेरियन बेहद उत्सुक हैं और ऐसे ही रहेंगे। मुझे काफी विश्वास है कि वे इस साल के लक्ष्य को हासिल कर पायेंगे यहाँ तक कि उसे पार भी कर जायेंगे वह भी अंतिम तारीख से काफी पहले। अब जब कि मैं यहाँ आया हूँ- भारत में भी मैं सक्रिय हूँ। मैं बैठकों में जाता हूँ। हाल में मंडल 3170 के लिये मैं गोवा गया हुआ था। दिल्ली और मुंबई में, सभाओं में जाता हूँ। सूरत में मेरे अपने मंडल (3060) सम्मेलन में भी जाने वाला हूँ। सो भारत में जो कुछ बन सके उसे करते आ रहा हूँ। बेंगलूरु और चेन्नई को छोड़कर इस वक्त दक्षिणी मंडलों को उदार दाता नहीं कहा जा सकता है। मार्च में बेंगलुरु में एक AKS कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है।

अब आगे क्या?

मैं भारत से प्रति व्यक्ति दान राशि को बढ़ाना चाहता हूँ। मुझे नहीं लगता कुल दान रकम में हम अमरीका की बराबरी कर पायेंगे। इस वक्त अमरीका हर साल इकट्ठा की गयी कुल राशि का लगभग 40 प्रतिशत देता है। लेकिन मुझे लगता है प्रति व्यक्ति दान में हम अव्वल स्थान पर आ सकते हैं। ऐसे कुछ मंडल

या एकमात्र मंडल वाले देश है, मिसाल के लिये हाँगकाँग जहाँ प्रति व्यक्ति दान राशि अत्याधिक है। लेकिन हाँगकाँग बेहद अमीर देश है और वही इकलौता मंडल है। ताइवान में कम मंडलें है और प्रति व्यक्ति दान राशि काफी ज्यादा है। भारत में 30 से ज्यादा मंडलें है, वह बेहद बड़ा देश है और यहाँ उसकी सदस्यता संख्या दुनिया भर में सबसे ज्यादा है सो जाहिर है वहाँ प्रति व्यक्ति दान राशि भी सबसे ज्यादा ही होनी चाहिये। ऐसा होता मान लीजिये मेरा काम बन गया है।

भारत में वर्तमान प्रति व्यक्ति देय क्या है?

यह 60 डॉलर से कुछ ज्यादा है।

आप इसे कितना ज्यादा बढ़ा सकते हैं?

सौ डॉलर से कुछ ज्यादा।

कितनी जल्दी?

ओह, मैं नहीं जानता। भारत में, ऐसी बातें जंगली आग की भाँति होती है। आप किसी जगह एक चिंगारी जला देते हैं और सारे जंगल में वह फैल जाती है। सो हमें देखना है। ये ऐसी जंगली आग है जिसे हम बुझाना नहीं चाहेंगे!

हमे जो बात भूलनी नहीं चाहिये वह यह है कि भारतीय लोग देना पसंद करते हैं; यह हमारी संस्कृति का एक हिस्सा है। एक भिखारी, एक छोटा सा खंजन रखकर ईश्वर की प्रशंसा में गीत गाया करता था और हमारी दादीजी हम से, उसे कुछ ना कुछ देने को कहती थी। आप दान देते हैं और बदले में वे आपको आशीर्वाद देते हैं।

भारतीय लोगों के बारे में दूसरी बात यह है कि हम दूसरों की मौजूदगी में देना पसंद करते हैं। पता नहीं क्यों, लेकिन जब पास में कोई मौजूद होता है, हमें देख रहा होता है या तारीफ करता है तो हम देना पसंद करते हैं। हम बिना आहट के किसी को दान नहीं देते; यह हमारे मनोभाव का हिस्सा है। जब कि अमरीका में, ऐसा नहीं है। आपको मालूम ही नहीं होगा कि असल में कौन, कहाँ और कौन से वक्त इतनी सारी रकम दे रहा है।

मुझे याद है एक अमरीकी दंपति कोयम्बत्तूर आकर सेवा कार्य करते थे; वे एक डीजी थे और लंबी अवधि के लिये भारत आये हुये थे; वापी में मेरे घर में ठहरे भी थे। और फिर अचानक 15 साल बाद, वे आर्च क्लंफ सोसायटी के सदस्य बन गये और यहाँ के लोगों ने कहा कि हमें पता भी नहीं चला कि वे इसकी तैयारी करते आ रहे थे। जब उनसे पूछा गया कि वह कौन सी बात थी जिसने उन्हें इतना कुछ देने पर प्रोत्साहित किया तो उन्होंने कहा दूसरों को देने और उनका भला करने के अलावा जिंदगी में और क्या रखा है!

अमरीकी लोग इसी तरीके से देना पसंद करते हैं, चुपके से। जबकि तारीफ किये जाने पर, गौर किये जाने पर, मान्यता दिये जाने पर भारतीय लोग और भी ज्यादा देना चाहेंगे। और इसमें कोई बुराई भी नहीं है; उनके काम को मान्यता देकर, उसके अनुरूप चलना बेहतर होगा। एक अप्रत्याशित दाता है नेपाल; भूकंप से विध्वंसित यह छोटा सा देश 1 मिलियन डॉलर दे रहा है जो बहुत बड़ी बात है!

एक अप्रत्याशित दाता है नेपाल; भूकंप से विध्वंसित यह छोटा सा देश 1 मिलियन डॉलर दे रहा है जो बहुत बड़ी बात है!

आपकी नज़रों में भारत में रोटरी का भविष्य कैसा रहेगा?

वह काफी अच्छी स्थिति में है; दुनिया भर मे भारत का रोटरी सशक्त है। अमरीका में रहते हुये कभी कभी मुझे लगता है कि हम कमजोर होते जा रहे हैं। रोटरी वहाँ एक मैत्री क्लब के रूप में शुरू हुआ होगा, लेकिन अमरीका में उस तरह के दोस्ती की ज़रूरत नहीं रही। अब उन्हें सेवा कार्य करने हैती और होंडुरास जाने की या भारत आने की तकलीफ उठानी पड़ती है। वे जगह जगह जाने में असुविधा महसूस करते हैं। इनमें से कुछ असाधारण तौर पर सेवा प्रवृत्त होते हैं तो कुछ ऐसे नहीं होते। वे घर में रहना ही पसंद करेंगे। यह आलोचना नहीं है बल्कि यहाँ ऐसे ही चलता है। उन्हें अपने शहर का अपना अख़बार मिल जाता है, वे नहीं जानते कि *दि न्यू यॉर्क टाइम्स* या *वाल स्ट्रीट जर्नल* क्या लिख रहा है और ज़रूरी भी नहीं कि वे इन सबकी परवाह करें।

हम पूरी तरह से भिन्न हैं!

हाँ, शायद इसलिये कि हम बहुत सारे लोग हैं और समुदायों में हर वक्त बदलाव आते ही रहता है। लोग शहरों में जाकर बसते रहते हैं। यह एकदम अलग खेल बन चुका है। एक ऐसा वक्त भी आयेगा जब रोटरी का मुख्य कार्यालय शिकागो से स्थानांतरित हो जायेगा।

कौन सी जगह?

मैं नहीं जानता, मुझे लगता है भारत में नहीं... बेहद ज्यादा, अनावश्यक परेशानियाँ झेलनी पड़ेगी! दुबई हो सकता है; वहाँ सब कुछ है और अमरीका के मुकाबले आधी कीमत पर। लोगों ने सिंगापुर का भी जिक्र किया लेकिन वह भी अमरीका जैसे महंगा है। यदि अमरीका में रोटरी की सशक्तता लगातार कमजोर होती जायेगी तो रोटरी के मुख्यालय को अमरीका से बाहर कहीं और ले जाने की नौबत आ जायेगी।

चित्र: रशीदा भगत्

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपांकन

अपने छात्रों को वैश्विक तौर पर प्रतिस्पर्धापूर्ण बनाइये

रशीदा भगत्

प्रख्यात हृदय रोग शल्य चिकित्सक देवी शेट्टी ने IIS विश्वविद्यालय के स्नातक प्रापक छात्रों को नवप्रर्वतन, टेक्नोलॉजी का अधिकतम उपयोग तथा अपने अंत:करण का अनुसरण करने की सलाह दी।

वक्त बदल रहा है, कॉलेज और विश्वविद्यालय, वैश्विक तौर पर प्रतिस्पर्धापूर्ण बनाने के लिये छात्रों को दक्ष बनाने में, एक अहम भूमिका निभाते हैं। छात्रों को वास्तविक दुनिया के वातावरण के अनुरूप तैयार करने में, नियोजक कॉलेज की भूमिका को मान्यता देते हैं। वे मानते हैं कि आज की वैश्विक अर्थ व्यवस्था में, संचारण कौशल, विवेचनात्मक सोच, विश्लेषक विवाद कौशल, वास्तविक-दुनिया के वातावरण में ज्ञान और कौशल का सही प्रयोग, जटिल समस्याओं का समाधान और विश्लेषण, संचारण कौशल, नैतिक निर्णय लेना तथा सम्मिलित कार्य करना आदि बेहद ज़रूरी है,'' नारायणा हृदयालय अस्पताल के संस्थापक तथा चैयरमेन डॉ देवी शेट्टी ने कहा।

जयपुर के IIS विश्वविद्यालय में 5वें दीक्षाँत संबोधन को पेश करते हुये, प्रख्यात हृदय शल्य चिकित्सक ने नवप्रर्वतन की अहमीयत को रेखाँकित किया और स्नातक प्राप्त करने वाले छात्रों को, कर्नाटक के किसानों के लिये शुरू की गयी अपनी नयी स्वास्थ्य बीमा योजना की मिसाल दी जिसके लिये मासिक बीमा शुल्क केवल रु5 है। ''सो मैं भरोसे के साथ कह सकता हूँ कि जब हम गंभीरता से अपना दिमाग लगाने लगेंगे तो हल ढूँढना मुश्किल नहीं है। और भारतीय संदर्भ में यह याद रखना ज़रूरी है कि यदि वह वहनीय नहीं हो तो उसे हल नहीं कहा जा सकता है।''

उन्होंने कहा उन्हें यह कहते हुये खुशी हो रही है कि IIS विश्वविद्यालय ने हमेशा महिलाओं को सशक्त किया है और यह प्रधानत: एक महिला विश्वविद्यालय है। एक महिला जिन्होंने उन्हें बेहद प्रभावित किया था वे थी मदर टेरेसा जिनसे पहली बार उनकी मुलाकात 1984 में हुयी थी जब उन्हें दिल का दौरा पड़ गया था ''और उसके बाद के पाँच साल मैंने उनकी देखभाल

(दाएं से) रो इ अध्यक्ष जॉन जर्म को IIS विश्वविद्यालय की ओर से डॉक्टरेट की उपाधि प्रदान करते कार्डियेक सर्जन देवी शेट्टी, विवि के कुलपति और पीडीजी अशोक गुप्ता भी मौजूद हैं।

की थी। मदर को तीव्र विश्वास था कि प्रेम ही सबसे शक्तिशाली हथियार है जो दुनिया पर जीत हासिल कर सकता है और उस सीख ने मुझ पर बेहद गहरा प्रभाव डाल दिया था... आज इस दुनिया को प्रेम और सहनशीलता की ज़रूरत है।।''

शिक्षण का असली उद्देश्य है छात्रों को इतना सशक्त बना देना कि वे अपने सपनों तक जाने वाला पथ खुद ढूँढ पायें और आजीवन सीखते रहने वाले नवसिखुओं को पैदा कर पाये, जो आधुनिक दुनिया और भविष्य दोनों के लिये तैनात किये गये हो और दुनिया को प्रभावित करने योग्य छात्रों को सशक्त बना देना।

हमारे लोगों की बेहतरी के लिये टेक्नोलॉजी के असरदार तथा अधिकतम उपयोग को कम नहीं आँका जा सकता है। ''जब लोग नवप्रर्वतनों और नयी तकनीकों को अपनाने लगेंगे, तो उच्च शैक्षणिक संस्थाओं को भी इस चलन के साथ चलना सीखना होगा। ना केवल इन छात्रों का भविष्य बल्कि अर्थ व्यवस्था भी, वैश्विक तौर पर प्रतियोगी कार्यबल के लिये छात्रों को तैयार करने में कॉलेजों व विश्वविद्यालयों की काबिलीयत से ही निर्धारित की जायेगी। पाठ्यक्रम भी बदलते वक्त के अनुरूप और सामयिक हो,'' उन्होंने कहा।

लेकिन इन सबके साथ, उन्होंने इन छात्रों को, ''अपनी अंतरात्मा को सुनने का, ऐसे किसी से सलाह लेने का'' सुझाव दिया जिस पर आपको भरोसा हो। ''असली शराफत वही होती है जहाँ आपका कोई भी काम ऐसा ना हो कि आपको सबके सामने की गयी तहकीकात के समय शर्मींदगी ना महसूस हो। यह उस व्यक्ति के चरित्र का इम्तिहान है।''

उक्त मौके पर, IIS विश्वविद्यालय ने रो इ अध्यक्ष जॉन जर्म को– 'डॉक्टर ऑफ लेटर्स' की उपाधि से सम्मनित किया। विश्वविद्यालय के उप कुलपति अशोक गुप्ता ने कहा, उन्हें ''सामुदायिक सेवा के क्षेत्र में उनके प्रचुर, धारणीय तथा असाधारण योगदान के लिये प्रदान किया गया; वे मानव अधिकार के असली समर्थक हैं।''

रोटरी की ओर से 'डॉक्टरेट' को स्वीकार करते हुये, रो इ अध्यक्ष ने कहा, ''अक्सर इन दिनों, रोटरी के लिये सफर करते हुये, खुद को ऐसी जगहों में पाता हूँ जहाँ मैंने कभी सोचा नहीं था कि मैं जाऊँगा, ऐसे काम करता हूँ जिसे मैंने कभी नहीं सोचा था कि मैं कभी करुँगा – जैसे यहाँ टोपी और गाऊन पहनकर, एक सम्मानार्थ उपाधि को ग्रहण करना। जब मैने 1961 में, नॉक्स्विले के टेनेस्सी विश्वविद्यालय से मैकेनिकल इंजीनियरिंग में बैचलर ऑफ साइन्स की डिग्री हासिल की थी तब मैंने सोचा कि यह गॉऊन वगैरह पहनना, आखिरी बार रहेगा। लेकिन असल में एक तरह से रोटरी आजीवन एक रूपांतरण है। जैसा कि जिंदगी में होता देखा गया है, रोटरी के पास आपको अचरज में डालने का अपना एक अलग तरीका होता है।''

उन्होंने छात्रों से कहा कि उन जैसे अनेकों के समान, वे भी कालिज जाने वाले अपने परिवार के पहले सदस्य थे। ''मेरे पिताजी केवल आठवी-ग्रेड तक ही पढ़े थे और जिंदगी भर अपने हाथों से ही काम करते रहे। आपके माता पिता के समान ही, उन्होंने हमेशा चाहा कि मुझे एक बेहतर जिंदगी मिले। और ठीक आपके माता-पिता के समान, वे जानते थे कि उस बेहतर जिंदगी को पाने का एक तरीका था शिक्षण।''

''मैं उपाधि को बड़ी प्रसन्नता के साथ स्वीकार करता हूँ, रोटरी की ओर से; उन पुरूष- महिलाओं की ओर से, जिन्होंने मिलकर काम करते हुये, अनेक पीढ़ियों के ज्ञान को विकसित किया और आने वाली अनेक पीढ़ियों तक भी इस काम को जारी रखेंगे।''

रो इ अध्यक्ष जॉन जर्म

टीआरएफ ट्रस्टी अध्यक्ष कल्याण बैनर्जी (दाएं) और रो इ निदेशक मनोज देसाई।

शिक्षण रोटरी का एक महत्वपूर्ण संकेंद्रण क्षेत्र है और भारत में रोटरी ''आधारिक संरचना को बेहतर बनाने के द्वारा,'' शिक्षण के ज़रिये हजारों बच्चों को एक बेहतर जिंदगी दिलाने के लिये कठिन प्रयास कर रहा है, ''ताकि अधिक बच्चे खासकर लड़कियां, इज़्ज़त और सेहत के साथ स्कूली पढ़ाई को जारी रख सके।''

हालाँकि वे जिस उपाधि को ग्रहण कर रहे थे, वह उनके काम या उनकी उपलब्धियों से या ''मानवीय ज्ञान के लिये मेरे अपने योगदान'' से नहीं जुड़ा था ''मैं उसे बड़ी प्रसन्नता के साथ स्वीकार करता हूँ, रोटरी की ओर से; उन पुरूष- महिलाओं की ओर से, जिन्होंने मिलकर काम करते हुये, अनेक पीढ़ियों के ज्ञान को विकसित किया और आने वाली अनेक पीढ़ियों तक भी इस काम को जारी रखेंगे।''

अपने प्रारंभिक संबोधन में गुप्ता ने कहा यह दीक्षाँत समारोह, IIS विश्वविद्यालय के दूसरे दशक को सूचित करता है जो 5,000 छात्रों को ऊँचे दर्जे का शिक्षण प्रदान करने के प्रति वचनबध्द था। उन्होंने याद किया कि किस तरह पिछले साल, यहाँ के शिक्षकों और छात्रों ने जयपुर इंस्टीट्यूट में एक सक्रिय भूमिका निभायी थी। जिसके बाद विश्वविद्यालय के प्रबंधन मंडल ने IIS विश्वविद्यालय के रोटरी क्लब को प्रायोजित करने का फैसला किया।

दीक्षाँत समारोह में विश्वविद्यालय के विभिन्न कार्यक्रमों के अंतर्गत 1540 से अधिक छात्रों को उपाधियां दी गयी, जिसमें टीआरएफ के ट्रस्टी चैयर कल्याण बैनर्जी तथा रो इ निदेशक मनोज देसाई उपस्थित थे। ■

अफ्रीका में, भारतीय जुगाड़ के साथ, सेवा

रशीदा भगत्

जरा इस परिदृश्य की कल्पना कीजिये... अफ्रीका को अपने पहले चिकित्सीय मिशन, जिसके लिये PRIP राजेंद्र कुमार साबू मशहूर हो गये हैं, के बारे में कहते हुये, ''युगाँडा के मसाका में हमने ऐसे बच्चों की पहचान की और ढूँढा, सर्जनों ने जिनकी जाँच पड़ताल की और उन्हें सरकारी अस्पताल के बेहद साधारण वार्ड में दाखिल किया।''

अगले रोज पोलियो की सामूहिक सर्जरियाँ की जानी थी, लेकिन जब रोटरी दल अस्पताल पहुँचा, तब बच्चे गुम हो गये थे! ''वे सभी भाग गये थे क्योंकि वे अस्पताल में रहने के आदी नहीं थे। किसी ना किसी तरह हम ने उन्हें ढूँढकर दोबारा इकट्ठा किया और सर्जरी शुरू हुयी,'' उन्होंने याद करते हुये कहा।

क्योंकि पर्याप्त कर्मचारी नहीं थे और उस जगह को रगड़कर साफ करने की जरुरत थी ''हमने बाजार से सफाई सामग्रियाँ खरीदी; मैं, उषा और हमारे साथ जो अमरीकी स्वयंसेवक थे, सबने मिलकर साफ करना शुरू किया। और अचानक उषा ने कहा: ''आपको याद है आज कौन सा दिन है?''

उन्हें याद नहीं था, लेकिन उषाजी को याद था; वह 11 अगस्त था! ''हैप्पी बर्थ डे'' कहते हुये वे वापिस सफाई के काम में लग गयी।

''अचानक सर्जन पीडीजी माधव बोराटे ने कहा: ''राजा, हमें ऐसे किसी की ज़रूरत है जो ऑपरेशन कक्ष (OT) में मरीज के नब्ज पर नज़र रखते रहे। सो, प्लीज़ एक OT गाऊन पहनकर भीतर आ जाइये।''

पूरी तरह से घबड़ाते हुये साबू ने आक्षेप किया: ''लेकिन खून को देखते ही मैं बेहोश हो जाता हूँ। डॉक्टर बोराटे ने कहा कुछ नहीं होगा, आप भीतर आ जाइये।'' उन्होंने 'आदेश का पालन'

इथियोपिया के अदिस अबाबा शहर में एक महिला रोगी की दंत सर्जरी करती हुई भारतीय मेडिकल टीम की महिला डॉक्टर।

किया और त्वचा, हड्डियों, माँस, छेनी और कैचियों के बीच आकर खड़े हो गये, ''और फिर भी मुझे कुछ नहीं हुआ। आपको ऐसी ही ताकत मिलती है जब आप सेवा की भावना को अपना लेते हैं।''

OT से बाहर, उषा ने बच्चों और उनकी माँओं की देखभाल करने में खुद को व्यस्त रखा। ''पहले दिन से ही हर किसी की ओर से पूरी संबध्दता देखी गयी।'' उन्होंने कहा।

धमाकेदार शुरुआत

'नाटकीय दृश्यों' के बीच धमाके के साथ उनका पहला अफ्रीकी मिशन शुरू हुआ। वापिस रवाना होने से पहले, तंजानिया के अमरीकी दूतावास में बम विस्फोट हुआ जिसके बाद केन्या के नैरोबी में एक और विस्फोट! ''लोगों ने कहा अगला निशाना कंपाला होगा और डॉक्टरों ने पूछा क्या आपको जाना ही होगा, क्योंकि उनके परिवार पूछ रहे थे कि वे क्यों जा रहे हैं,'' साबू ने कहा।

जब एक ओर यह होहल्ला मच रहा था, उषा चंडीगढ़ से आयी शाँति नामक 'शाँति दूत' (स्वयंसेविका) से मिली, जो क्रोएशिया में जारी सजातीय जंग के बीच अमन ले आने की दिशा में काम कर रही थी। ''मैंने उससे पूछा तुम्हें डर नहीं लगता? और उसने कहा, 'नहीं, मेरे पास केवल यह एक ही जनम है, कौन जाने अंत कब आयेगा?'' यह जवाब, हमारे लिये फैसला करने में और डॉक्टरों को राजी कराने में मददगार साबित हुआ, जो वैसे भी सेवा करने के इच्छुक थे। हम चाहे जितनी निधि जुटा लें, मैचिंग ग्राँट या जो कुछ भी हो उसे पा लें, सच्चे दिल से सेवा करना चाहने वाले इन डॉक्टरों की हिस्सेदारी के बिना, ये चिकित्सीय मिशन कार्यांवित किये नहीं जा सकेंगे। जैसा कि राजा हमेशा कहते हैं, हम तो महज आयोजक हैं, वे ही कर्ता है,'' उषा ने कहा।

सबसे बढ़िया बात यह थी उन्होंने कहा, ''इतने जोखिम भरे काम के बावजूद, एक भी डॉक्टर मिशन को छोड़कर नहीं गये।''

साबू ने कहा कंपाला हवाईअड्डे से उन्हें लकड़ी के बेंच नुमा सीटोंवाले एक तरह के स्कूल बस में चार घंटे के सफर के बाद मसाका पहुँचाया

पीआरआईपी राजेन्द्र के साबू एक रोगी को कांगो में स्थानांतरित करने के लिए मदद करते हुए।

गया। ''नेत्र विशेषज्ञ, पाँच सीटों वाले हवाई जहाज में उत्तर में गुलु की ओर चले गये। उस दौरान युगाँडा में बगावत का केंद्र बना था गुलु। हमने पाया कि हमारे मंडलों के सार्वजनिक अस्पतालों के मुकाबले इस अस्पताल में आधारिक संरचना बेहद कम है।''

कैसे शुरू किया

कार्यक्रम की उत्पत्ति के बारे में पूछे जाने पर, उषा ने बस यही कहा, ''असल में अफ्रीका की योजना ही नहीं बनायी गयी थी, वह तो खुद ब खुद घटित हो गयी।'' साबू ने यूँ विवरित किया, ''टीआरएफ ट्रस्टी चैयर की हैसीयत से मेरी कार्य अवधि के पूरा होने के बाद, उषा ने कहा हमें हमारे अपने हाथों से, कम से कम 7-10 दिनों तक कुछ करने के मौके ढूँढने होंगे... कार्य क्षेत्र में जाकर सक्रिय सेवा करना जिसे अब तक हम दूसरों से करने को कहते आ रहे हैं।''

और फिर, रो इ अध्यक्ष की हैसीयत से उनके कार्य वर्ष के दौरान उनकी विषय वस्तु थी ''खुद से परे देखो'' और भारत हमेशा एक प्रापक देश रहा है, हमेशा मदद की याचना करने वाला देश। जब उन्होंने खुद से पूछा कि भारत क्या दे सकता था, तो जवाब आया ''हम चिकित्सीय विज्ञान के क्षेत्र में काफी निपुण हैं; हमारे पास आधुनिक टैक्नोलॉजी है और हमारे सर्जन विश्व स्तर के हैं। सो, क्या हम उनके माध्यम से कुछ दे सकते हैं, मैंने सोचा।''

एक ज्येष्ठ भारतीय रोटेरियन होने के नाते, पोलियो-सुधारक सर्जरी से जुड़े कामों में 1979 में उसके आरंभ से ही साबू संबध्द थे, ''जब हमने दुनिया भर के बच्चों को प्रतिरक्षित करने का फैसला किया था।''

जब 1997 में राजीव प्रधान, मंडल 3132 के डीजी थे, तो उन्होंने पुणे में आयोजित पोलियो सुधारक सर्जरी के लिये साबू को आमंत्रित किया। वह एक मैचिंग ग्राँट परियोजना थी और ऊपर उल्लेख

> जब मेरी 80वीं सालगिरह नजदीक थी, मैंने उषा से कहा मैं उस दिन किसी चिकित्सीय मिशन में सेवारत होकर बिताना चाहता हूँ। उसने भी माना कि इससे बेहतर कुछ भी नहीं हो सकता।
>
> पीआरआईपी राजेन्द्र के साबू

पीआरआईपी राजेन्द्र साबू, उषा साबू, पीआरआईपी के आर रविन्द्रन, वानती रविन्द्रन और डीजी डेविड हिल्टन, रवांडा के अध्यक्ष पॉल कागमे (बाएं से पांचवे) की उपस्थिति में मौजूद। नाइजीरीया के सर इमेका ओफोर (सफेद कपड़ों में) भी चित्र में मौजूद हैं।

एक खास जन्मदिन

इतने सालों में अफ्रीकी चिकित्सीय मिशन साबू के लिये इतने अज़ीज हो गये हैं कि ''जब मेरी 80वीं सालगिरह नजदीक आ रही थी, मैंने उषा से कहा मैं उस दिन किसी चिकित्सीय मिशन में सेवारत होकर बिताना चाहता हूँ। उसने भी माना कि इससे बेहतर कुछ भी नहीं हो सकता, लेकिन हमें अपने बच्चों और नाती पोतों को राजी कराना पड़ा। उन्होंने मान लिया और मेरे जन्मदिन को उस दिन से पहले ही मनाने की व्यवस्था की।''

सालगिरह के दिन भी उन्होंने वही किया जिसे आम तौर पर इन चिकित्सीय मिशनों में किया करते हैं– ट्रॉली ले जाना, ऑपरेशन कक्ष के भीतर और बाहर मरीजों को लाना-ले जाना आदि। लेकिन उन्हें अंदाजा नहीं था कि मिशन के सदस्य उनके लिये बड़ी पार्टी का इंतजाम कर रहे हैं। ''लेकिन मुझे कुछ अंदाजा हो गया था क्योंकि जब हम नाश्ते के लिये नीचे गये तो सभी डॉक्टरों और स्वयंसेवकों ने उन्हें जन्म दिन की मुबारकबादी दी और कहा कि मैं किसी से ना कहूँ क्योंकि हमें इस बारे में बतलाया नहीं जाना था! शाम को बहुत बड़ा समारोह मनाया गया जिसमे स्थानीय रोटेरियनों ने हिस्सा लिया, लेकिन मैं बेहद खुश था कि वह दिन मैंने सेवा कार्य करते हुये बिताया।''

किये गये अमरीकी रोटेरियन भी वहाँ मौजूद थे। ''मैंने सुझाव दिया क्यों ना हम इस काम को करने, मिलकर अफ्रीका जायें। और वे राजी हो गये।'' अफ्रीका को इसलिये चुना गया था क्योंकि वहाँ काफी सारे पोलियो मामले थे और चिकित्सीय सहायता की ज़रूरत थी।

उषा ने हस्तक्षेप करते हुये एक अहम कडी की ओर इशारा किया- नंदलाल भाई जो कैलीफोर्निया में जाकर बस जाने से पहले युगाँडा में रहा करते थे। ''वे अफ्रीका को भली भाँति जानते थे और उन्होंने कहा यदि आप अफ्रीका जाना चाहते हैं, तो मैं आपको वहाँ ले जाऊँगा।''

यह बात साबू की इच्छा से मेल खाती थी कि अब भारत को ''देना'' चाहिये। विकलाँग विशेषज्ञ सर्जनों के अलावा, तीन नेत्र विशेषज्ञ सर्जनों को भी शामिल किया गया।

चुनौतियाँ

इन मिशनों की चुनौतियों के बारे में साबू कहते हैं कि प्रत्येक मिशन की अपनी कुछ अनोखी चुनौतियाँ होती हैं। जबकि कुछ जगहों में सुविधायें और बुनियादी ढाँचे अपर्याप्त है, इतर जगहों में पहले, मरीज ही नहीं होते हैं। इसके विपरित नाइजीरीया को अपनी प्रथम भेंट के दौरान नेत्र विशेषज्ञ पहले दिन से ही व्यस्त हो गये। लेकिन उनके पास शल्य चिकित्सीय उपकरणों को कीटाणु रहित करने की उचित सुविधायें उपलब्ध नहीं थी। ''लेकिन हमारे डॉक्टरों के बाबत में एक अनोखी बात यह है कि जब कि उनके पास आधुनिक टेक्नोलोजी और अति प्रगतिशील ज्ञान है, भारतीय शब्द जुगाड़ उनके लिये बिलकुल सही बैठता है...वे लगे हाथों नवप्रवर्तन कर सकते हैं।''

सो एक बार नाइजीरीया में, जब एक सर्जरी की जा रही थी, बिजली चली गयी; जेनरेटर को शुरू किया गया लेकिन दो ही मिनटों में वह फट हो गया। और इन सब के बीच आँखों की सर्जरी भी जारी थी। ''चंडीगढ़ के एक नामी नेत्र विशेषज्ञ डॉ गरेवाल ने कहा: साबू साहब, मेरी 'बैग' में टॉर्च होगी, ले आइये। सो मैंने टॉर्च पकडी और उन्होंने सर्जरी को पूरा किया हालाँकि वह इतनी बारीकी वाली सर्जरी है।''

अब तो चिकित्सीय मिशनों के अनुभवी डॉक्टर अक्सर अपने साथ खुद के उपकरण साथ ले जाते हैं; इससे उनका काम आसान बन जाता है। साबू यह कहते हुये हरगिज नहीं थकते कि ''डॉक्टर ही इन मिशनों के असली नायक होते हैं; काम वे करते हैं और हमे भी उस श्रेय में शरीक कर लिया जाता है।''

इन देशों में सरकारी निकासी एक समस्या है। ''रवांडा ही एकमात्र ऐसा देश है जहाँ सरकार हमेशा 'लाल कालीन बिछाकर' हमारा स्वागत करती है,'' कहते हैं साबू। इसी वजह से मैंने PRIP के आर रविंद्रन से रवांडा में किसी मिशन में हिस्सा लेने के लिये कहा; मैं वहाँ चौथी बार जा रहा था और हम वहाँ के बुनियादी ढाँचे से वाकिफ थे,'' उनका कहना है।

वहाँ की प्रथम महिला के कृपा की बदौलत, जिन्हें साबू पिछली बार की भेंट के बाद से जानते हैं, रवांडा के राष्ट्रपति ना केवल रविंद्रन से मिले बल्कि बाद में अलग से सभी डॉक्टरों से भी मिले और ''हमारे साथ 40 मिनट बिताये।''

सीखे सबक

साबू ने युगाँडा में अब तक 24 चिकित्सीय शिविरों का आयोजन किया है। सो इन मिशनों ने उन्हें कौन-कौन से सबक सिखाये? एक व्यक्ति के रूप में किस तरह उन्हें बदल दिया है? ''खैर, बदली है तो वह मेरी अपनी सोच और मेरी अपनी पूर्व धारणायें। पहली पूर्व धारणा यह थी कि हम कुछ ज्यादा बेहतर स्थिति में हैं और अफ्रीकी देश अब भी विकसित हो रहे है, जब कि हम विकसित हो चुके हैं और हम उन्हें काफी कुछ दे सकते हैं। लेकिन जब मैं वहाँ था तो मुझे एहसास हुआ कि बच्चे हर जगह समान होते है उनका रंग, उनकी राष्ट्रीयता या उनका मजहब चाहे कुछ भी हो। दर्द हो तो वे रो पड़ते हैं, गुदगुदी करते हैं तो मुस्कुराते हैं या हँस पड़ते हैं।''

एक और बात उन्होंने सीखी है कि ''रोटरी महज पदों की बात नहीं है।'' वे वाकई दर्द और पीड़ा की इन कहानियों से पसीज गये थे; ''इन दर्दनाक कहानियों ने मेरे मुँह पर तमाचा मारा और सेवा का मोल और उसकी अहमीयत का एहसास कराया... वे हमें अवसर दे रहे हैं और हम दावा नहीं कर सकते कि दाता होने के नाते हम उनसे ऊंचे दर्जे के लोग है।''

लेकिन इथियोपिया के चिकित्सीय मिशन के बारे में खबर लिखने के नाते, (हर बार... रोटरी समाचार दिसंबर 2015 अंक *https://rotarynewsonline.org/every-time-for-africa/*) वहाँ पिछले साल जाने के बाद मुझे लगता है, एक और सबक जो उन्होंने सिखलाया वह यह था कि असंख्य बाधाओं और रुकावटों के बावजूद हमें विचलित नहीं होना चाहिये। सबसे पहली बाधा थी सीमा शुल्क का निकास... भारतीय प्रतिनिधि अपने साथ शल्य चिकित्सीय उपकरण, प्रयोज्य ऑपरेशन कक्ष सामग्रियाँ और दवाईयों के बक्से लेकर आये थे और हवाईअड्डे में पहले इन चीजों को रोका गया। लेकिन साबू शाँत रहे और जल्द ही इथियोपिया डीजी और उनके साथियों ने अपने हाथों में जिम्मा ले लिया; वे स्वास्थ्य मंत्री के घर पहुँचे, ज़रूरी अनुमति पा ली, सामग्रियों का निकास कर दिया गया और डॉक्टरों ने अपना काम शुरू कर दिया।

राहत की साँस लेते हुये साबू ने कहा, ''हर जगह अफसरबाजी फैली है, इसकी कोई सीमा नहीं; एथियोपिया भी अपवाद नहीं है लेकिन रोटरी की भी कोई सीमा नहीं!''

वे सभी डॉक्टरों और स्वयंसेवकों के शुक्रगुजार हैं, खासकर पीडीजीगण रंजीत भाटिया, डॉ आर एस परमार तथा मधुकर मल्होत्रा; ''सभी स्वयंसेवक यात्रा के लिये अपनी जेब से ही खर्च करते हैं यहाँ तक कि होटल में ठहरने के लिये भी, जब कभी प्रशासन इसका इंतजाम नहीं करता हो।''

सबसे समीपकालीन मिशन 20 डॉक्टरों तथा 7 स्वयंसेवकों के साथ गेबॉन में किया गया: ''दिल्ली के आप्रवासन विभाग के एक अफ़सर ने पूछा गेबॉन कहाँ है!'' हवाईअड्डे में उनका निकास हो गया और ''45 मिनटों के भीतर, नि:शुल्क वीज़ा; 92 दवाइयों तथा उपकरणों के साथ उनके सामान का भी निकास कर दिया गया। रवांडा के बाद इस देश में ही हमें परेशानी नहीं हुयी,'' साबू ने कहा।

लेकिन जबकि अस्पताल आधुनिक उपकरणों के साथ साफ सुथरा था उनके पास प्रशिक्षत कर्मचारी नहीं थे जो उनका सही उपयोग कर सके। इस मिशन की बेहद बड़ी कामयाबी के लिये वे टीआरएफ, पीडीजीगण रंजीत भाटिया और मंडल 9150 के जीन-पियरी ड्यूबोस के आभारी हैं।

वे अक्सर खुद से सवाल करते हैं कि क्या इस तरह के मिशनों पर रुपया और वक्त खर्च करना मुनासिब है। ''लेकिन क्या हम मरीजों को आंकड़ों के रूप में देखें? हर एक मरीज़ एक जान है और यदि उन्हें बचाया जाये और बेहतर जिंदगी दिला पाये तो, तो क्या इस परियोजना का मोल नहीं बढ़ेगा? वे मानवता का हिस्सा है और रोटरी मानव सेवा के प्रति समर्पित है।''

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपांकन

चुनौतियों पर काबू पाना इज़्ज़त को बनाये रखना

रशीदा भगत्

PRIP राजेंद्र कुमार साबू के नेतृत्व के अधीन, भारतीय रोटेरियन, भारत की प्रतिकूल तथा खतरनाक जगहों में भी, अपनी चिकित्सीय निपुणता के ज़रिये मानव सेवा करने में कभी चूके नहीं।

एक बार अफ्रीकी मेडिकल मिशन (MM) सही चलने लगा, "मैंने सोचा हम वहाँ के ज़रूरतमंद बच्चों तक पहुँच पा रहे हैं, लेकिन यहाँ भारत में भी चिकित्सीय सेवाओं की भारी ज़रूरत है," PRIP राजेंद्र कुमार साबू ने कहा। प्रथम भारतीय शिविर के लिये ओडिशा के कालाहाँडी से बेहतर जगह क्या हो सकती थी, जिसने अपनी भुखमरी के किस्सों के लिये शीर्ष पंक्तियों में जगह पा ली थी? सो मैंने डीजी (3260) सुभाष साहु से बात की और वे तुरंत तैयार हो गये। नेत्र, विकलाँग, दँत तथा प्लास्टिक सर्जरी की विशेष चिकित्सा के लिये हम 2006 में गणतंत्र दिवस के तुरंत बाद वहाँ गये।

चुनौतीपूर्ण शुरुआत

लेकिन शुरुआत कुछ सरल सुगम नहीं थी। प्रख्यात प्लास्टिक सर्जन डॉ चारी ने, जो उस वक्त चंडीगढ़ के पी जी इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल एज्यूकेशन एंड रिसर्च में विभागाध्यक्ष थे, चार साल की एक बच्ची की कटे होठों की सर्जरी की। बदकिस्मती से बच्ची की माँ ने डॉक्टरों को बताया नहीं कि उनकी बेटी ने दूध पिया था। सामान्य निश्चेतन कर देने के बाद कुछ समस्या पैदा हो गयी और बच्ची इतनी गंभीर हालत में थी कि श्रीमती चारी, जो चंडीगढ़ के PGI में निश्चेतन विभाग की प्रमुख थीं, सारी रात बच्ची के साथ बैठी रही, साबू ने याद करते हुये कहा। सभी सामाजिक गतिविधियों को रद्द कर दिया गया और हम "बच्ची के लिये दुआ माँगने सीधे मंदीर चले गये। करीबन चार बजे श्रीमती चारी ने फोन पर बतलाया कि बच्ची खतरे से बाहर आ गयी है। हमने राहत महसूस की और यूँ माना कि यह भारत में MM की कामयाबी के लिये मिला दैवीय आशीर्वाद है।''

साबू का कहना है भारतीय MM की, जो अब 10 साल पूरे कर चुका है, एक अनोखी खूबी यही है कि मध्य प्रदेश जैस राज्यों में, सरकार बेहद मददगार रही है। "उसके साथ रोटेरियनों की कठोर मेहनत तथा हमारे डॉक्टरों की अद्भुत चिकित्सीय निपुणता ने इन मिशनों की कामयाबी के लिये योगदान दिया है।"

मिसाल के लिये, 2010 में, मंडल 3261 के पीडीजी विवेक टांका ने, जो अग्रगण्य वकील, परोपकारी व्यक्ति तथा अब राज्य सभा के सदस्य हैं, "हमें जबलपुर के पास एक आदिवासी इलाका मंडाला जाने पर प्रोत्साहित किया जो अच्छी चिकित्सीय सुविधाओं से वंचित है। उस अनुभव ने हमारे MM को एक नया आयाम दिलाया और यहीं पर हमने भारत के हमारे MM को नाम दिया RAHAT (Rotary's Active Hands Are Touching) हिंदी में इसे राहत भी माना जा सकता है।" मुख्यमंत्री से शुरू होकर, प्रशासन तथा सरकार से उन्हें जो सहायता मिली, "उससे हमें अंदाजा हो गया कि सरकार किस तरह हमारी मदद कर सकती है,'' राजा साबू कहते हैं। विवेक ने मध्यप्रदेश में हमारे मिशनों के लिये द्वार खोल दिये; पीडीजी सुभाष गर्ग ने मंडल 3080 से समन्वयन करने की जिम्मेदारी ली। तब से सुभाष भारत के भीतर ज्यादातर अंतर-मंडल मेडिकल मिशनों के लिये हमारे मुख्य आधार बन गये हैं।

यह मिशन बेहद कामयाब रहा– सरकारी डॉक्टरों ने बाह्य मरीजों के इलाज में मदद की और दवाइयाँ भी दी गयी – और 49,600 से ज्यादा बाह्य मरीजों का इलाज किया गया और 2,200 मरीजों की शल्य चिकित्सा की गयी।

"मुख्य मंत्री ने अस्पतालों में हमारे साथ एक पूरा दिन बिताया। सरकारी सहयोग इतना रहा कि, चूँकि इस इलाके में बिजली का अभाव है, सख़्त निर्देश दिये गये थे कि उन 7 दिनों में MM अस्पतालों में बिजली की कटौती ना हो! इससे पहले ऐसा कभी नहीं हुआ कि किसी राज्य के मुख्यमंत्री ने मेडिकल मिशन के लिये हमारा शुक्रिया अदा करने मेरे मोबाइल पर मुझ से संपर्क किया हो।

प्रत्येक मिशन 7 दिनों की अवधि का है; दूसरा मिशन मार्च 2007 में ओडिशा (बरीपाडा) में किया गया। यह आदिवासी इलाका, नक्सलवादियों के इलाके से कुछ मीलों की दूरी पर है। कालाहाँडी और बरीपाडा में हमें बेहद सामान्य परिस्थितियों में रहना पड़ा जो मायने नहीं रखता था। आखिरकर हम वहाँ सेवा करने के लिये ही गये हुये थे। हम वहाँ के रोटरी मंडल और पीडीजी डी एन पाधी की मुख्य भूमिका के लिये उनका शुक्रगुजार हैं।

ओडिशा में दो और मिशन आयोजित किये गये; स्थानीय रोटेरियनों की सिफारिश पर 2009 में संबलपुर में तथा 2011 में एक और छोटा मिशन। वे 2012 में मध्य प्रदेश वापिस आये जहाँ MM को खुद मुख्यमंत्री के नेतृत्व में सरकार से बेहद बड़ी सहायता मिली। इस बार छिंदवाड़ा में, नागपुर से सड़क मार्ग पर लगभग 3 घंटों के फासले पर। इस मिशन में बाह्य मरीजों की संख्या - 73,864 -सबसे ज्यादा थी। अगला शिविर फिर एक बार म.प्र. तथा आदिवासी इलाका झबुआ में।

सर्वाधिक चुनौतीपूर्ण मिशन

राजस्थान के सीकर में 2012 में एक MM किया गया। "लेकिन इसके तुरंत बाद हमारा सबसे चुनौतीपूर्ण मिशन आया और वह संघर्ष व आतंकवादिता से ग्रसित इलाका जम्मू के उधमपुर में था। लेकिन हमें पीडीजी राजीव प्रधान से सहायता मिली और उनके मंडल से अनेक डॉक्टरों ने भी इसमे हिस्सा लिया। पहाड़ी और दूरवर्ती

मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान (दाएं) मेडिकल मिशन का उद्घाटन जबलपुर (मंडल 3261) में PRIP राजेंद्र के साबू और PDG विवेक के तन्खा की उपस्थिति में करते हुये।

इलाकों से 1750 से अधिक बाह्य मरीज आये हुये थे। यह बेहद चुनौतीपूर्ण, संतोषजनक तथा यादगार MM था,'' साबू ने कहा।

मार्च 2014 में, मध्य प्रदेश के नीमच में अगला मिशन आयोजित किया गया, जहाँ 43,000 से ज्यादा बाह्य मरीजों का इलाज किया गया। "मंडल 3040 के रोटेरियन पूरी तरह से संबध्द थे; आयोजन व्यवस्था उल्लेखनीय थी; मंडल 3260 के रोटेरियनों ने भी मदद की जैसा कि उन्होंने म.प्र. के हमारे सभी मिशनों में किया था।''

छत्तीसगढ़ के जगदलपुर में एक और चुनौतीपूर्ण मिशन किया गया जो रायपुर से 4-घंटे की दूरी पर है। "यह भी नक्सलवादी इलाके से लगकर है और चिकित्सीय सुविधायें भी अपर्याप्त है। यहाँ एक क्रिस्चन मिशन अस्पताल भी है और कुछ सरकारी अस्पतालें भी हैं, लेकिन ये सरकारी अस्पतालें पूरी तरह से सुसज्जित नहीं है; इस जगह कोई भी नहीं जाना चाहता है।''

इन सभी MM के लिये, दो लोग हमेशा उस जगह पर मिशन से पहले ही जाकर वहाँ की सुविधाओं का, वहाँ की ज़रूरतों का जायज़ा लेते थे; जिसके बाद ही मिशन की योजना बनाकर उसे कार्यांवित किया जाता था। जगदलपुर में भी ऐसा ही किया गया जहाँ के जिला मजिस्ट्रेटने उत्सुकता दिखलायी लेकिन "सरकार की ओर से कोई खास प्रतिक्रिया नहीं रही और हमारी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या किया जाये। लेकिन

लम्हें और यादें

PRIP तथा रोटरी चिकित्सीय मिशनों के शिल्पकार राजेंद्र कुमार साबू ने, भारत व अफ्रीका में किये गये MM की कुछ अमिट यादों को संजोकर रखा है। उन्होंने याद करते हुये बतलाया कि किस तरह मंडला में, "जहाँ हम चार भिन्न जगहों मे काम कर रहे थे, एक दिन मैंने हमारे सबसे बड़े केंद्र सिविल अस्पताल तक कार में जाने के बजाय चलकर जाने का फैसला किया। मैंने हमेशा की तरह MM टी शर्ट पहनी हुई थी और मुझे बाजार से होकर जाना था। अचानक एक मोटर साइकिल चालक ने मुझे रोका और पूछा क्या आप MM का हिस्सा हैं।

जब मैंने कहा हाँ, तो उसने मुझ से अपनी गाड़ी में पीछे बैठने के लिये कहा और आग्रह किया कि मैं राजी हो जाऊँ, क्योंकि इससे उन्हें खुशी मिलेगी। पहली बार मैं किसी मोटर बाइक में पीछे की सीट पर सवार हुआ था।''

रास्ते पर वे बातें करते हुये गये और उस आदमी ने कहा: "आप लोग जो कर रहे हैं वह हमारी कल्पना से परे है!''

उनके पास ऐसी अनेक सुखद यादें है। एक ऐसे ही MM में, जहाँ म.प्र. सरकार ने खुले दिल से हिस्सा लिया, शहर के लोग भी जोश के साथ काम करने को आगे आये। लगभग 37,000 बाह्य मरीज आये हुये थे और जैसा कि भारत में होता है हर एक मरीज के साथ कम से कम दो तीमारदार आते हैं, 7 दिनों तक लगभग 1.5 लाख लोग MM में आये।

जिस तरह शहर के लोगों ने संयुक्त होकर हिस्सा लिया वह वाकई प्रशंसनीय बात थी। मिसाल के लिये यदि अग्रवाल समुदाय ने कहा हो कि "हम पानी के सप्लाई की व्यवस्था करेंगे तो दूसरे किसी समुदाय ने कहा हम फलाँ दिन डॉक्टरों, मरीजों और उनके तीमारदारों के खाने का जिम्मा लेंगे। इस तरह की भाव प्रदर्शनी ने हमें प्रोत्साहित किया और हमारा हौसला बढ़ा,'' साबू ने कहा।

साबू छत्तीसगढ़ के राज्यपाल बलराम दास टंडन को जानते थे, "जो अमृतसर के थे। मैंने उनसे बात की और उन्होंने कहा मैं इसके लिये "सारे दरवाजे खुलवा दूँगा।''

अभी दो दिन पहले, नक्सलवादियों ने 10 पुलिसवालों को मार डाला और सारा इलाका तनावग्रस्त था। "यह बेहद डरावनी जगह है लेकिन स्थानीय रोटेरियन तथा मंडल नेतागण पूरी तरह से समर्पित थे। राज्य के राज्यपाल हैलीकॉप्टर से आये, सभी अस्पतालों को भेंट दी और शल्य चिकित्सकों से मिले। और हमारा वह मिशन बेहद संतोषजनक रहा।''

साबू, अनेक भारतीय मिशनों का मुख्य आधार बनने के लिये मंडल 3080 के पीडीजी सुभाष गर्ग को श्रेय देते हैं। इसी तरह मंडल

PRIP राजेंद्र के साबू और PRIP स्कूजि तनाका, 2013 में उधमपुर में एक मेडिकल मिशन में। पीडीजी गण डॉ राजीव प्रधान, मनप्रीत सिंह गंधोके और सुभाष गर्ग तस्वीर में मौजूद हैं।

3132 से "पीडीजी राजीव प्रधान का योगदान उत्कृष्ट रहा। प्रधान तथा पीडीजी डॉ माधव बोराटे दोनों ने, अफ्रीका में MM को शुरू करने में मेरी मदद की।''

इज़्ज़त को बनाये रखना

साबू ने कहा प्रत्येक MM ने, सभी भागियों को इंसानी पहलु की और अच्छी चिकित्सीय सुविधाओं के अभाव की वजह से जिस दु:ख और दर्द की हालत में इतने सारे भारतीय लोग जिंदगी बसर करते हैं, उसकी एक झलक दिखलायी।

उन्होंने 10 साल की एक बच्ची की कहानी का बयान किया, जो 1 साल की उम्र में एक खुले चूल्हे में गिर पड़ी थी और उस जलन से पैदा घाँवों के नतीजे में घुटनों के नीचे, उसका पाँव उसकी जाँघ तक ही धँसकर रह गया। और 10 साल की उम्र तक, वह अक्षरश: एक ही पाँव के साथ जी रही थी। डॉ आर भरत, जो अब मंडल 3250 के डीजी हैं, एक प्लास्टिक सर्जन तथा अनेक MM के अनुभवी चिकित्सक हैं। इतर सर्जनों की सहायता से, उन्होंने उसकी जाँघ से उसके निचले पैर को अलग कर दिया, पैर को सीधा किया

झाबुआ मेडिकल मिशन में डॉक्टरों ने एक 10 वर्षीय बचे का इलाज किया जो एक साल की उम्र में चूल्हे में गिर गया था।

> **छत्तीसगढ़ के जगदलपुर में एक बेहद चुनौतीपूर्ण मिशन किया गया था, जो नक्सलवादियों के इलाके से लगकर है और वहाँ की चिकित्सीय सुविधा भी अपर्याप्त है।**

(देखें तस्वीरें) और "जब तक हम वहाँ से वापिस निकले, वह भली चंगी हो गयी और उन्होंने कहा कम से कम वह दोनों पैरों के बल चल पायेगी, हालाँकि उसे सहारे की ज़रूरत पड़ेगी, लेकिन एक इज़्ज़तदार जिंदगी जी पायेगी।''

एक और चुनौतीपूर्ण मिशन था नागालैंड के दीमापुर में आयोजित MM। "वहाँ भी हमें बड़ी कठिन परिस्थितियों में काम करना पड़ा, लेकिन स्थानीय रोटेरियनों तथा पीडीजी चंदू अग्रवाल, जो उस वक्त डीजी थे, ने कड़ी मेहनत की– हमारे पास 18,000 बाह्य मरीज थे''– और हमारे डॉक्टरों ने कुछ बेहद जटिल सर्जरियाँ कीं। इसके बावजूद बदकिस्मती से एक जान चली गयी!

फरवरी में ग्वालियर के निकट मोरेना में एक मिशन आयोजित किया जा रहा है। "म.प्र. ने हमें उत्कृष्ट मान्यता और सहारा दिया है। हर साल भारत में कम से कम एक मेडिकल मिशन कर पाने पर हम खुश है।''

पिछले साल पीडीजी राजीव प्रधान ने मंडल के भीतर 1,000 सर्जरियाँ करने की अतिरिक्त चिकित्सीय परियोजना आयोजित की। "हमारे मंडल (3080) में भी, सरकार के ग्रामीण स्वास्थ्य कार्यक्रम के अंतर्गत पीडीजी अरुण शर्मा मार्च 15-20 के बीच हिमाचल प्रदेश में तथा अप्रैल 25-30 के बीच रोहरु पहाड़ियों में कुछ कार्यक्रमों का आयोजन कर रहे हैं। ये सभी कुछ छोटी परियोजनायें हैं जिन्हें हम अपने MM के साथ एक नये आयाम के रूप में जोड़ रहे हैं।''

उन्होंने आगे कहा इन मिशनों के लिये श्रेय हमारे समर्पित डॉक्टरों को जाता है जो अपने नियमित काम को छोड़कर कुछ वक्त निकाल लेते हैं, "सब कुछ सेवा की सच्ची भावना के साथ।''

(इन चिकित्सीय मिशनों में हिस्सा लेने वाले सभी डॉक्टरों के नाम *https://rotarynewsonline.org/wp-content/uploads/2017/01/MM-doctors_1.pdf* पर देखें)

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपांकन

Please pay your *Rotary News* Dues at the earliest

to enjoy uninterrupted supply. Please note that *Rotary News* subscription is mandatory and defaulting clubs can be suspended by RI.

List of defaulting clubs and the club dues details on our website ***www.rotarynewsonline.org***

Rotary

Rotary at a glance

Rotarians : 12,21,694

Clubs : 35,366

Districts : 534

Rotaractors : 2,28,091*

Clubs : 9,917*

Interactors : 4,85,944*

Clubs : 21,128*

RCC members: 2,13,578*

RCC : 9,286*

* As on January 2, 2017

Membership in India, Sri Lanka, Pakistan, Bangladesh, Nepal, Bhutan and Maldives

As on January 2, 2017

RI Zone	RI District	Rotary Clubs	No of Rotarians	Women Rotarians	Rotaract	Interact	RCC
5	2981	109	4,456	191	52	214	171
5	2982	64	2,814	79	53	109	41
5	3000	116	5,225	410	208	474	112
4	3011	72	3,121	552	43	96	28
4	3012	79	3,432	633	59	110	54
5	3020	81	4,110	212	106	451	351
4	3030	99	5,355	664	69	257	156
4	3040	88	2,099	245	50	108	135
4	3051	65	2,437	189	47	146	335
4	3052	56	3,346	619	38	138	130
4	3053	59	2,428	391	16	31	93
4	3060	98	4,016	383	55	110	125
4	3070	107	3,148	287	62	151	54
4	3080	76	3,233	189	61	199	106
4	3090	79	2,096	80	33	36	122
4	3100*	71	1,725	68	10	71	83
6	3110	109	3,822	190	52	49	78
6	3120	74	2,960	291	36	49	49
4	3131	124	5,664	1,121	81	244	71
4	3132	91	3,957	397	58	139	117
4	3141	84	5,129	972	99	231	85
4	3142	77	2,889	404	51	178	64
5	3150	95	3,396	326	86	205	108
5	3160	65	2,266	104	17	42	81
5	3170	127	5,487	345	46	277	158
5	3181	66	3,040	203	28	164	101
5	3182	78	3,320	244	25	261	90
5	3190	143	5,616	665	125	333	48
5	3201	137	5,113	291	87	115	46
5	3202	129	4,948	245	88	416	40
5	3211	133	4,232	226	11	70	121
5	3212	95	3,795	204	104	254	126
5	3220	69	1,887	225	78	189	75
5	3230	145	6,630	638	165	448	308
6	3240	86	2,983	345	56	141	140
6	3250	97	3,678	611	31	195	173
6	3261	70	2,356	228	15	100	42
6	3262	84	3,108	361	41	70	72
6	3271	66	1,229	184	41	15	13
6	3272	130	2,524	410	35	35	36
6	3281	194	5,546	740	215	79	184
6	3282	126	3,464	260	119	29	40
6	3291	147	3,836	648	63	122	567
6	3292	111	4,212	586	108	100	100
	Total	**4,271**	**1,60,128**	**16,656**	**2,923**	**7,251**	**5,229**

**Non-districted*

Source: RI South Asia Office

CAREWEL®

School Furniture & Rehabilitation Equipment

Manufactured & Marketed by

SOHRAB IMPEX LIMITED

(Govt. Of India Recognized & ISO 9001:2008 Certified Export House)

WALKER

CRUTCHES

WHEEL CHAIR

TRICYCLE

FOUR TAB HAND WASH STATION

SCHOOL BENCHES

Special Concession for Rotary Projects

For Enquiries:-

Corporate Office:

Sohrab Group of Companies
Nabha Road, Malerkotla
Phone: +91-1675-260040-43
Mobile: +91-98149-01777
E-Mail: sildomestic@sohrabgroup.com
Website: www.sohrabgroup.com

SOHRAB
A SYMBOL OF DIGNITY

P.D.G. Amjad Ali
Major Donar Level II
D.L.C.C. R.I.D. 3090
Mobile 9888777798

मोबाइल शौचालय

मुंबई में महिला पुलिसकर्मियों के लिए

रशीदा भगत्

मुंबई की महिला पुलिसकर्मियों के लिए रोटरी क्लब बॉम्बे हैंगिंग गार्डन के मानवीय कार्य

कई अलग-अलग तरीकों से रोटरी भारत का चेहरा बदल रहा है। इसका जीता जागता उदाहरण हम रोटरी क्लब बॉम्बे हैंगिंग गार्डन के रोटेरियनों की मुंबई की महिला पुलिसकर्मियों की बुनियादी जरूरतों में की गई तेजी से प्रतिक्रिया में देख सकते हैं। उनकी सुरक्षित और स्वच्छ शौचालय व वस्त्र बदलने के कमरे की ज़रूरत को रोटरी ने पूरा किया।

मुंबई शहर में 34 यातायात चौकियां हैं और मार्च, 2016 में डीसीपी (यातायात) अनिल कुंभारे ने रोटरी क्लब बॉम्बे हैंगिंग गार्डन के रोटेरियनों को बताया कि सभी जिसमें सरकार भी शामिल है, पुलिस बल में महिलाओं के प्रतिनिधित्व को बढ़ाना चाहते हैं, वास्तविकता है कि कई यातायात चौकियों में मुख्य बुनियादी सुविधाएं नहीं हैं, जैसे महिला पुलिसकर्मियों के लिए शौचालय। उन्होंने कहा कि, ज्यादातर जगहों पर उनके लिए कपड़े बदलने और आराम करने के लिए एक छोटा कमरा भी उपलब्ध नहीं है।

''उन्होंने हमसे पूछा, क्या आप इसके लिए कुछ कर सकते हैं,'' क्लब के सदस्य रोटेरियन दिलीप शाह ने याद किया, जो गैर सरकारी संगठन प्रेमलता वंद्रावन शाह चैरिटीज़ (पीवीएससी) का भी प्रतिनिधित्व करते हैं, इस योजना में क्लब के साझेदार हैं। संवाद के बाद, जहां इन सुविधाओं की सबसे ज्यादा ज़रूरत थी वहां एक सर्वे किया गया और वहां भी जहां कुछ करने के लिए ये संभव था। मुंबई में करीबन 10-15 फीसदी पुलिसकर्मी महिलाएं हैं।

मुंबई में ज्यादातर पुलिस चौकीयां फ्लाईओवर के नीचे स्थित हैं और करीबन 17 जगहों को चिन्हित किया गया जहां इन सुविधाओं को उपलब्ध कराना संभव था।

मोबाइल शौचालय का उद्घाटन करते हुए मुंबई के पुलिस आयुक्त सीपी दत्ता पद्सालगिकर, रोटेरियन दिलीप शाह, डीजी गोपाल मंधानिया, RCBHG अध्यक्ष संदीप रेशमवाला भी भी मौजूद हैं।

क्लब अध्यक्ष संदीप रेशमवाला ने कहा कि ''योजना के प्रथम चरण में, मुंबई की आधी पुलिस चौकियों में महिला पुलिसकर्मियों के अलग से मोबाइल शौचालय उपलब्ध कराए गए और कपड़े बदलने के लिए कमरे भी जहां संभव थे।'' कुछ पुलिस चौकियों में पुरुष पुलिसकर्मियों के लिए भी अतिरिक्त मोबाइल शौचालय उपलब्ध कराए गए।

जहां कन्टेनर्स उपलब्ध थे वहां महिला पुलिसकर्मियों के आराम व कपड़े बदलने के फर्निस्ड करके कमरे व केबिन बनाए गए। इंस्टॉलेशन के दौरान सीवेज लाइन, पानी का कनेक्शन, बिजली सभी की व्यवस्था की गई।

इस कहानी को मानवीय चेहरा देने के लिए हम वरिष्ठ महिला पुलिस निरिक्षक विजयलक्ष्मी हिरेमत के संपर्क में आए। वह पहले से ही दिलीप शाह के संपर्क में थी जब मैं बांद्रा में नियुक्त था और वे 15 अगस्त को जैकेट्स का वितरण करने आए थे। दो महीने पहले, जब वे दादर पुलिस चौकी में नियुक्त थी वे स्थिति को जानकर हैरान थी कि 100 सदस्यीय पुलिस टीम में मात्र 9 यातायात महिला पुलिसकर्मी ही थी। सबसे पहले, हमारी नौकरी सिर्फ 12 घंटे थी लेकिन कुछ विशेष आयोजनों के दौरान जैसे वीआईपी सुरक्षा घेरा आदि में हमें ज्यादा वक्त तक काम करना पड़ता था। नौ महिला पुलिसकर्मियों में से दो जो गर्भवती थी उनके लिए शौचालय की कोई व्यवस्था नहीं थी। मैं स्वयं भी इस व्यवस्था का शिकार हुई हूं।

उन्होंने बताया कि दादर मुंबई के हृदय के दाएं भाग में बहुत ही भीड़भाड़ वाली जगह है। सिद्धी विनायक मंदिर, शिवाजी पार्क सभी यहां हैं। ''मेरे यहां कोई वाशरूम नहीं है यहां तक की बैठने और खाने के लिए जगह तक नहीं है। मेरी आंखों में आंसु थे।'' विजयलक्ष्मी ने कहा।

जब उन्होंने महिला पुलिसकर्मियों से पूछा कि वे कैसे सब कुछ संभालती हैं तो उन्होंने बताया कि वे कुछ निजी कार्यालयों में जाकर कपड़े बदलती हैं। और जब वे रात्रि ड्यूटी पर होती हैं तो आप सोच सकते हैं कि यहां सुरक्षा का मुद्दा भी अहम होता है। इसके लिए वे अपने साथ एक पुरुष कांस्टेबल को लेकर जाती हैं, जो फिर से एक महिला के लिए असुविधाजनक बात थी।

उन्होंने दिलीप मेहता को एक SoS कॉल मिलाया और बचाव के लिए उन्हें तुरंत आने को कहा। ''मैंने उनसे कहा कि यह एक आपातकालीन

स्थिति की तरह है। और वे अगले दिन बहुत जल्द आए।'' वह दो सप्ताह के अवकाश पर चली गई और जब विजयलक्ष्मी लौटी तो उन्होंने पुराने कन्टेनर्स को स्वच्छ व बेहतर आराम व कपड़े बदलने के कश के रूप में परिवर्तित पाया। ''परिणाम नई सुविधाओं के साथ था। अब हम रोटेरियनों द्वारा उपलब्ध कराए गए कक्ष में आराम से बैठकर गणपति पूजा और विसर्जन की आसानी के साथ योजना बनाने के लिए योग्य हैं।''

लेकिन उनका दादर के बाहर स्थानांतरण कर दिया गया। और प्रतिनिधित्व के कारण दादर पुलिस चौकी की स्थिति भयानक थी। उनका अब बायकुला में स्थानांतरण कर दिया गया, जहां बहुत अच्छी सुविधाएं हैं। लेकिन प्रसन्नता की बात यह थी कि वह रोटेरियनों की मदद से अपने साथियों को आरामदायक कार्य का वातावरण देने के लिए योग्य थी। ''मेरे पास रोटेरियनों का धन्यवाद करने के लिए शब्द नहीं है। वे हमारे लिए क्या कर सकते हैं, और महिला पुलिसकर्मियों के लिए धन्यवाद एक बहुत छोटा शब्द है। लेकिन हम आभार जताने के दिलीप भाई को मुख्य अतिथि के रूप में बुलाने जा रहे हैं, हम एक रैली का आयोजन करने जा रहे हैं।'' वह कहती हैं।

उन्होंने बताया कि मुंबई की ज्यादातर पुलिस चौकियां फ्लाईओवर के नीचे स्थित हैं। इससे पहले ''सर्वोच्च न्यायालय ने फ्लाओवरों और ब्रिजों के नीचे अतिक्रमण को हटाने के आदेश दिए थे लेकिन विशेष मामलों में यहां छूट दी थी।'' और यहां दो राय नहीं थी कि यातायात पुलिस को अपनी ड्यूटी को प्रभावशाली बनाने के लिए बुनियादी सुविधाओं की जरूरत है। उन्होंने कहा कि कुछ कंटेनर्स उनके लिए 4 गुणा 4 और जबकि कुछ 4 गुणा 6 फीट में उपलब्ध कराए गए थे। बाद में हम कपड़े बदलने के कक्ष सहित

नौ महिला पुलिसकर्मियों में से दो जो गर्भवती थी उनके लिए शौचालय की कोई व्यवस्था नहीं थी। मैं स्वयं भी इस व्यवस्था का शिकार हुई।

विजयलक्ष्मी हिरामत

वरिष्ठ पुलिस निरीक्षक विजयलक्ष्मी हिरामत।

शौचालय उपलब्ध कराने के योग्य हैं। लेकिन दादर में, उनके पास कंटेनर 8 गुणा 30 फीट में था जिसे कक्ष में बदलने के लिए हम योग्य थे। वरिष्ठ पुलिस अधिकारिय, पुलिस अधिकारी व अन्य सभी पुलिसकर्मी इन सुविधाओं से खुश थे।

मंडल 3140 डीजी गोपाल राय मंधानिया ने रोटरी क्लब के समर्पित रोटेरियनों जिसमें रोटरी क्लब बॉम्बे हैंगिंग गार्डन के दिलीप शाह, अम्बरिश दफ्तारी, दिगांत शाह शामिल हैं, ने योजना के ज़रिए पश्चिम और पूर्वी मुंबई के उपनगरीय इलाकों में चौकियों में रेकॉर्ड 45 दिन तक लाभ पहुंचाचने के कार्य को पूरा करने के लिए धन्यवाद दिया। कुल 18 मोबाइल शौचालय और दो कंटेनरों को चमकाकर कक्ष के रूप में बदला गया। हमारे कार्य को पुलिस आयुक्त दत्ता पद्सालगिकर द्वारा सराहा गया, जिन्होंने आज़ाद मैदान यातायात चौकी पर योजना का उद्घाटन किया।

इस परियोजना के लाभ और महत्ता को इन तथ्यों से लगाया जा सकता है पुलिस आयुक्त ने संयुक्त पुलिस आयुक्त (यातायात) मिलिंद बाराम्भे, अतिरिक्त पुलिस आयुक्त (यातायात) सुनील पारस्कर और पुलिस उपायुक्त (यातायात) अनिल कुंभारे के साथ समारोह में प्रवेश किया। पुलिस आयुक्त ने अपने भाषण में क्लब अध्यश्र संदीप रेशमवाला और दिलिप शाह की प्रशंसा की।

डीजी मंधानिया कहते हैं कि RCBHG ने हमेशा पुलिस की मदद के लिए कार्य किए हैं। इससे पहले फ्लोरोसेंट जैकेट्स व प्रदूषण से बचने के लिए मास्क भी वितरित किए गए हैं और ''जयपुर फुट और नेत्र मोतियाबिंद आपरेशन जैसी योजनाएं खामोशी के साथ पूरी की हैं।''■

रोटरी: एक परिकल्पना जो कभी धुंधली नहीं होती

रशीदा भगत्

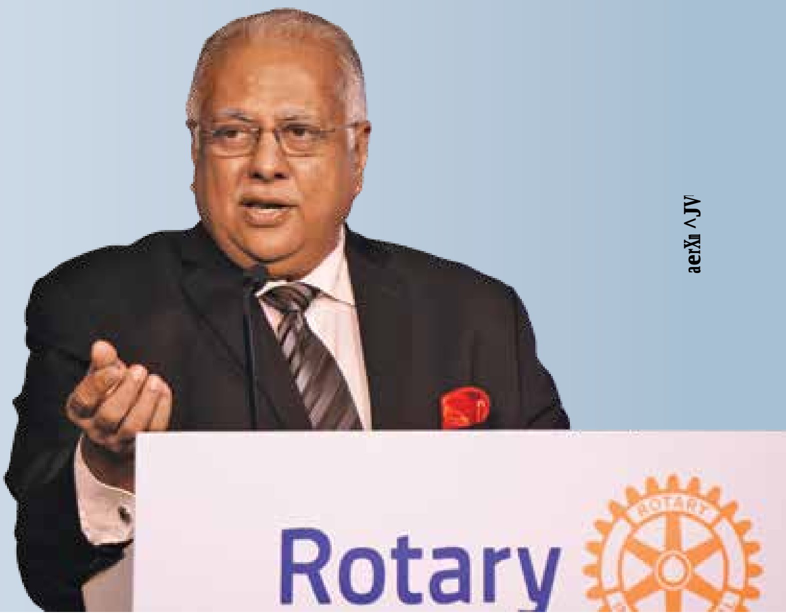

दुबई संस्थान में विज़न 20:20 सत्र को संबोधित करते हुए एवं रणनीतिगत योजना पर नई जानकारी देते हुए, रो इ निदेशक मनोज देसाई ने पुनः स्मरण किया कि जयपुर संस्थान में रोटरी भारत ने दो आधारभूत मूल्यों - सेवा एवं अखंडता के लिए मतदान किया था। क्लबों की सहायता करना एवं उन्हें सशक्त करना, ध्यान केन्द्रित करना एवं सेवा में वृद्धि करना और सार्वजनिक छवि को सुधारना, रणनीतिगत नियोजन का सार था।

रो इ नेतृत्व की परिकल्पना थी कि प्रत्येक क्लब, मंडल एवं ज़ोन की उसकी स्वयं की रणनीतिगत योजना होनी चाहिए। क्लबों की सहायता करने एवं उन्हें सशक्त करने के लिए क्षेत्रीय सदस्यता योजनाओं को विकसित किया गया। "2011 में, इस बात को समझकर कि सदस्यता के मामले में सभी के लिए एक ही पद्धति को नहीं अपनाया जा सकता, हमने क्षेत्रीय सदस्यता योजनाओं को विकसित किया और इसके क्रियान्वयन के चौथे वर्ष में, हमें विश्वास है कि ये योजनायें सदस्यता स्तर को बरकरार रखने में सहायता कर रही हैं।" इसके बाद सदस्यता कार्यक्रम को मज़बूत बनाया गया। "अब भावी सदस्यों के लिए रोटरी से जुड़ने की उनकी रुचि को अभिव्यक्त करना आसान है। हमने उन रोटरी सदस्यों के लिए भी प्रक्रिया को सरल कर दिया है जो क्लब बदलना चाहते हैं या एक सदस्यता निर्दिष्ट करना चाहते हैं।"

फिर, रोटरी ग्लोबल रिवाड्‌र्स, एक रोटरी सदस्य लाभ कार्यक्रम, के माध्यम से, "हम रोटरी सदस्यों एवं रोटरेक्टरों को दुनिया भर में वस्तुओं एवं सेवाओं पर छूट और विशेष ऑफर प्रदान कर रहे हैं।"

रणनीतिगत योजना के अंतर्गत एक अन्य प्राथमिकता थी, बढ़ती हुई मानवीय सेवाओं पर ध्यान केन्द्रित करना एवं उनमें वृद्धि करना। फिर उन्होंने टीआर एफ ट्रस्टी प्रमुख कल्याण बैनर्जी की बात दोहराई जिन्होंने कहा था: "पोलियोप्लस की बदौलत दुनिया ने रोटरी को खोज निकाला और रोटरी सदस्यों ने स्वयं को।" रोटरी सदस्यों के वैश्विक जुटाव के कारण, सभी एक समान उद्देश्य के लिए कार्य कर रहे हैं, पोलियो उन्मूलन बिंदु के बेहद समीप था। उन्होंने कहा, "2016 में अब तक, हमने केवल नौ मामलें देखे हैं।"

रोइ के मिशन कथन थे – दूसरों की सेवा करना, अखंडता को बढ़ावा देना, और हमारे व्यापारिक, पेशेवर एवं सामुदायिक नेतृत्वकर्ताओं के माध्यम से दुनिया की समझ, साख एवं शान्ति को उन्नत करना।

एकत्रित हुए रो इ अफसरों को टीआरएफ शताब्दी वर्ष की तैयारियों के लिए उत्साहित करते हुए, रो इ निदेशक ने कहा, "यह दुर्लभ है, वास्तव में ज़िन्दगी में एक बार मिलने वाला, अवसर। सत्रों के दौरान छोटे वीडियो को चलाया जायेगा इस बात को सिद्ध करने के लिए कि हमने कितना अच्छा कार्य किया है, नेपाल और गुजरात भूकंप और श्रीलंका में सुनामी के बाद एक बड़े प्रभाव को जन्म देकर। एक स्पष्ट प्रमाण है प्रति वर्ष बढ़ता वैश्विक अनुदान।"

जबकि पोलियो उन्मूलन के लिए उनका कार्य - 30 वर्ष और अरबों डॉलर वास्तव में एक भारी-भरकम कार्य था, "क्या आप विश्वास कर सकते हैं कि हम हमारी सामाजिक मीडिया पहल के माध्यम से दुनिया भर के 14.5 करोड़ लोगों तक पहुँच चुके हैं?"

देसाई ने कहा, रो इ की नई पहल - ब्रांड सेंटर; कनेक्ट ऑनलाइन; रोटरी क्लब सेंट्रल; माय रोटरी - प्रशंसनीय थी। समय की मांग थी, एक संयुक्त परिकल्पना के लिए रो इ और टीआरएफ का बेहतर एकत्रीकरण हो। परन्तु, उन्होंने कहा, तेज़ी से बदलती दुनिया में जो नहीं बदला वो थे "हमारे मूल्य, रोटरी के उद्देश्य; चार मार्ग परीक्षण; निष्कर्ष कथन एवं रो इ और टीआरएफ के मिशन कथन।"■

एलिस हैसन

इंटरनेशनल असेंबली के कुछ लम्हें

बाएं से : RIDE सी भास्कर, ब्राज़ील से रोटेरियन पाउलो ऑगस्टो ज़नारदी, DGE डी एम शिवराज की पत्नी मनोमनि और मालती भास्कर।

रो इ के अध्यक्ष - भूत, वर्तमान और भविष्य।

टीआरएफ ट्रस्टी सुशील गुप्ता (बाएं) और विनीता(दाएं), डीजीई प्रफुल्ल शर्मा के साथ विद्योत्तमा।

PRIP राजेंद्र के साबू, PRID मैरी बेथ गरौनी सेलिन का स्वागत करते हुए। चित्र में RID मनोज देसाई और शर्मिष्ठा भी मौजूद हैं।

PRIP चार्ल्स सी केलर और कैरोल।

रुथ किंरोस (बाएं) के साथ बातचीत में उषा साबू।

IPRIP के आर रविन्द्रन और RID मनोज देसाई।

PRIP विलियम बी बॉयड और लोरना।

IA में सबसे कम उम्र का प्रतिभागी ब्राजील से एक बच्चा था।

चित्र : रशीदा भगत्

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपांकित

पुणे में TRF का शतवर्षीय सेमिनार

जयश्री

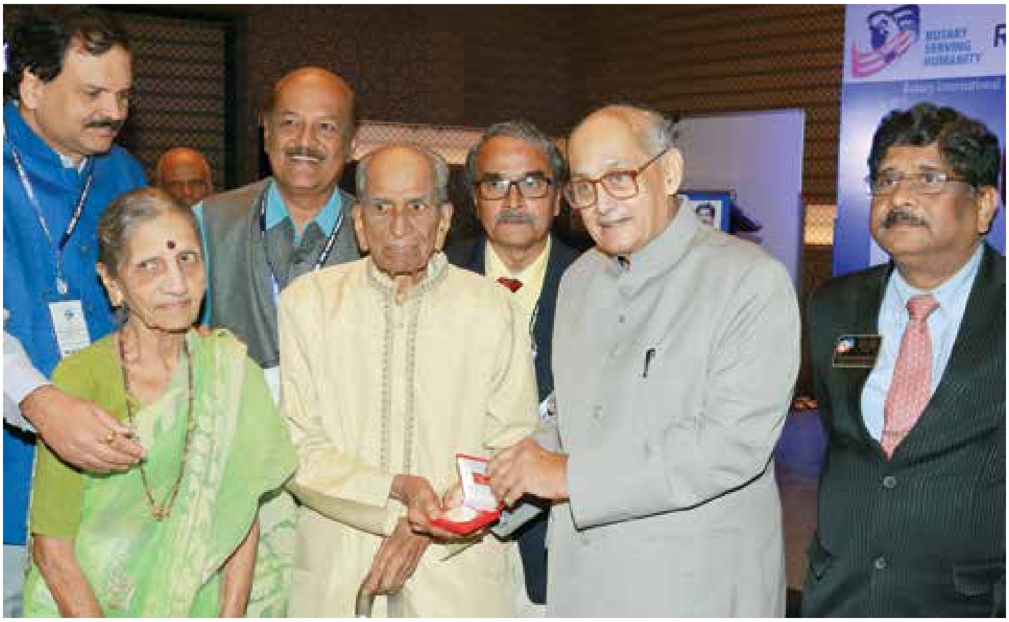

टीआरएफ ट्रस्टी अध्यक्ष कल्याण बैनर्जी, रघुनाथ पुरुषोत्तम के साथ। डीआरएफसी दीपक शिकारपुर (बाएं से अंत में) और डीजी प्रशांत देशमुख (दाएं से अंत में)।

रोटरी मंडल 3131 द्वारा आयोजित TRF के शतवर्षीय सेमिनार के कारण फाउंडेशन के लिए लगभग 300,000 डॉलर एकत्र किया जा सका, इसके साथ ही कुछ अद्वितीय उपलब्धियाँ भी हासिल हुई जो संपूर्ण मंडल में चर्चा का विषय बनी रही। रोटरी क्लब पुणे सेंट्रल की मेजबानी में पुणे में नवंबर माह में आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता TRF ट्रस्टी अध्यक्ष कल्याण बैनर्जी ने की। EMGA अशोक पंजवानी इस अवसर पर सम्मानित अतिथि थे।

संगोष्ठी के मुख्य आकर्षणों में एक AKS सदस्य बनने के लिए अपनी प्रतिबद्धता के लिए रोटेरियन कुलबीर डोड का सम्मान किया जाना था। नब्बे वर्षीय डोड एक NRI हैं और रोटरी क्लब पुणे नॉर्थ के एक 8 वर्षीय सदस्य हैं। उनके दान में बंदोबस्ती और टर्म उपहार दोनों शामिल हैं और जो विशेष रूप से बच्चों को तकनीक प्रेमी बनने के लिए ई-लर्निंग और टेबलेट के व्यापक उपयोग को बढ़ावा देने के लिए है।

कार्यक्रम में शतवर्षीय स्वतंत्रता सेनानी रघुनाथ पुरुषोत्तम तकलकर द्वारा TRF को दिए गए 1100 डॉलर के योगदान पर भी जश्न मनाया गया। "वह हमारे फाउंडेशन के उम्र के हैं। यहाँ विषय पैसा नहीं है, बल्कि इरादा देने का है," DRFC दीपक शिकारपुर ने कहा। तकलकर के पुत्र चंद्रशेखर रोटरी क्लब पुणे सहवास के सदस्य हैं।

संगोष्ठी में स्पेनिश कॉर्पोरेट जेस्टंप ऑटोमोटिव, को एक CSR कार्यक्रम के अंतर्गत 77,600 का योगदान देने के लिए आभार व्यक्त किया गया। इस मसौदे को राकेश भार्गव, TRF के लिए CSR फंड के जिला निदेशक द्वारा कार्यान्वित किया गया। शिकारपुर ने कहा "देश में यह अपनी तरह पहला दान है, जब TRF न्यास ने इस वर्ष के शुरुआत में रोटरी फाउंडेशन (इंडिया) को इस रोटरी वर्ष से CSR निधि स्वीकार करने का एक प्रस्ताव पारित किया।" अनुदान का उपयोग साक्षरता कार्यक्रमों के लिए किया जा रहा है।

TRF ट्रस्टी अध्यक्ष कल्याण बैनर्जी (दाएँ से), DG प्रशांत देशमुख, EMGA अशोक पंजवानी और DRFC दीपक शिकारपुर की उपस्थिति में रोटेरियन कुलबीर डोड को सम्मानित करते हुए।

बैनर्जी ने यह कहते हुए फाउंडेशन के इतिहास का स्मरण किया कि, "यह एक शताब्दी पहले अपने पहले अनुदान 26.5 डॉलर से बढ़ते हुए इस विशाल स्तर तक पहुँच चुका है। हमारे फाउंडेशन को एसोसिएशन ऑफ फण्डराइजिंग प्रोफेशनल्स (AFP) द्वारा दुनिया के विशिष्ट संस्था के रूप में नामित किया गया है। TRF अनेक लोगों के लिए दान करने की पहली पसंद है।" अब फाउंडेशन ने अधिक से अधिक CSR निधि प्राप्त करने का नया द्वार खोल दिया है और इसलिए अधिक से अधिक परियोजनाओं को सफलतापूर्वक पूरा किया जा सकता है।

अक्टूबर में 160,041 डॉलर राशि के योगदान के साथ, मंडल इसी अवधि के दौरान मंडल 3141 द्वारा किए गए 321,949 डॉलर के योगदान के कारण उससे एक स्थान पीछे द्वितीय स्थान पर रहा है।■

WinS में 23,000 स्कूलों के ज़रिये 5 मिलियन बच्चों तक पहुँचेगा रोटरी

रशीदा भगत्

हमारा लक्ष्य था 2016-17 के अंत तक20,000 स्कूलों तक पहुँचना, और हमारे रोटेरियनों ने 23,000 से अधिक स्कूलों का वादा किया है जिसके ज़रिये 5 मिलियन बच्चों तक पहुँचा जा सकेगा,'' रोटरी भारत की महत्वपूर्ण परियोजना WinS के बारे में दुबई जोन इंस्टीट्यूट में विवरण देते हुये टीआरएफ के ट्रस्टी तथा WinS ग्लोबल चैयर सुशील गुप्ता ने कहा।

WinS के मुख्यांशों में एक था स्कूलों में नियमित कार्यशालायें तथा वीडियो प्रस्तुतियाँ पेश किया जाना ''और हम ने इंटरेक्टरों तथा रोटेरेक्टरों को संबद्ध कराया है।'' उन्होंने एक वीडियो दिखलाया जिसमे बच्चों ने एक गीत गाया जिसे खास तौर पर यह बतलाने के लिये लिखा गया था कि किस तरह हाथ धोयें जायें और वीडियो में उन्हें हाथ धोते हुये दिखलाया गया है।

''WinS एक परिवर्तनशील कार्यक्रम है जो रोटरी के छह संकेंद्रण कार्यक्रमों में से तीन का हल ढूँढता है: पानी एवं स्वच्छता; साक्षरता एवं बुनियादी शिक्षण; तथा बीमारियों की रोकथाम।'' लेकिन किसी भी बच्चे के लिये महज़ साफ और सुरक्षित पानी पीना, शौचालय उपलब्ध होना और साबुन से अपने हाथ धोना ही काफी नहीं होता है। इसे हमेशा जारी रखना होगा। 'WinS का लक्ष्य है लंबी अवधि के लिये व्यवहारात्मक बदलाव, ना केवल इन बच्चों के लिये बल्कि उनके परिवारों तथा व्यापक समुदायों के लिये भी,'' गुप्ता ने कहा। उन्होंने आगे कहा कि यह

> WinS एक परिवर्तनशील कार्यक्रम है जो रोटरी के छह संकेंद्रण कार्यक्रमों में से तीन का हल ढूँढता है: लेकिन ये शौचालय निर्माण से भी कई ज्यादा है।
>
> *WinS* ***ग्लोबल चेयर***
>
> ***सुशील गुप्ता***

कार्यक्रम, आने वाले सालों में नये तथा आरोग्यकर आदतों को अपनाने के बारे में प्रौढ़ों, शिक्षकों और समुदाय को शिक्षित तथा प्रभावित करने की उम्मीद करता है। ''कोई शक नहीं कि शौचालय, WASH कार्यक्रम का एक अत्यावश्यक संघटक है, लेकिन वह शौचालयों से शुरू होकर शौचालय के साथ ही खत्म नहीं हो जाता। यह तो महज एक संघटक है; WASH, जल, स्वच्छता और आरोग्य को सूचित करता है और उसके दो मुख्य संघटक है हाथों की सामूहिक सफाई तथा क्षमता वर्धन।'' यदि बच्चों को स्कूल में ही हाथ धोना आदि आरोग्यकर आदतों की नींव डाली जाये तो वे घर में भी शौचालयों की माँग करेंगे और सारे समुदाय में इसका बेहद बड़ा असर पड़ेगा। ''हमारा यही उद्देश्य है, महज़ शौचालय बनाने से ही भारत, स्वच्छ भारत नहीं बन जायेगा।''

अनोखा अवसर

गुप्ता ने कहा भारत में, 130 मिलियन बच्चों को हर दिन नि:शुल्क मध्यान्न भोजन देने का अनोखा अवसर हमें मिला। ''यदि आप खाने की जगह के पास हाथ धोने के सामूहिक चबूतरे बनवायेंगे, तो आप दस्त जैसी बीमारियों के 40 प्रतिशत की घटाव की गारंटी दे रहे हैं, जिसका नतीजा था बेहतर स्वास्थ्य और हाजिरी।''

क्षमता वर्धन भी अहमियत रखता है और इसलिये सशक्त स्कूल कमेटियों का गठन करना होगा जो इस कार्यक्रम की जिम्मेदारी ले सके। आज सरकारी स्कूल, छात्राओं को स्कूल आने के लिये प्रेरित करने, काफी प्रयास कर रहे हैं क्योंकि 40 प्रतिशत लड़कियाँ, आरोग्यकर मासिक स्राव प्रबंधन

बाएं से आरआईडी मनोज देसाई, रो इ अध्यक्ष जॉन जर्म, आरआईएलएम चेयर शेखर मेहता, WinS ग्लोबल चेयर सुशील गुप्ता, पीआरआईडी वाई पी दास डीडीज़ेडआई के दौरान आरआईएलएम वार्षिक रिपोर्ट जारी करते हुए।

> WinS परियोजना में CSR निधि पाने का बेहद बड़ा अवसर है– हर साल रु4,000 करोड़ की निधि।
>
> *WinS ग्लोबल चेयर*
>
> *सुशील गुप्ता*

सुविधाओं के संपूर्ण अभाव की वजह से, मासिक पाली के शुरू होते ही स्कूल आना बंद कर देती हैं। ''आप यह जानकर स्तंभित हो जायेंगे कि बेहतरीन से बेहतरीन निजी स्कूलों में भी आरोग्यकर मासिक स्राव प्रबंधन के अंतर्गत लड़कियों के लिये कोई अलग जगह नहीं होती है और ना ही उस नादान उम्र में उन्हें इस सिलसिले में कोई सही सलाह दी जाती है।''

गुप्ता ने कहा WinS परियोजनाओं को निधिकृत करने, क्लब तथा मंडल, वैश्विक अनुदानों (Global Grants) के लिये आवेदन कर रहे थे। यह टीआरएफ की एक महत्वपूर्ण परियोजना थी और विश्व व्यापक तौर पर WASH के प्रति दिलचस्पी देखी गयी। ''सो हम रोटरी संसार से सहायता पा रहे हैं और भारत में, CSR निधि पाने का बेहद बड़ा अवसर है– हर साल रु4,000 करोड़ की निधि। ट्रस्टी निर्णय की बदौलत, रोटरी फाउंडेशन भारत को अब CSR (कार्पोरेट सामुदायिक उत्तरदायित्व) निधि मिल सकती है।''

यूनीसेफ के साथ सहकार्यता

इस अभियान को आगे ले जाने तथा 'स्वच्छ भारत स्वच्छ विद्यालय' अभियान को सशक्त बनाने रोटरी, यूनीसेफ के साथ सहकार्य कर रहा है। वह शिक्षा विभाग, मानव संसाधन एवं विकास (HRD) विभाग के साथ भी काम कर रहा था; रोटरी को स्वच्छ विद्यालय पुरस्कार में हिस्सा लेने के लिये आमंत्रित किया गया। ''हम स्वच्छ गंगा के लिये एक राष्ट्रीय मिशन का भी हिस्सा बनने वाले है; बिहार तथा झारखंड में, गंगा किनारे बने 500 स्कूलों को अपनाने के लिये HRD विभाग के साथ समझौता पत्र पर हस्ताक्षर भी करने वाले हैं। हम इन बच्चों को गंगा को साफ रखने के बारे में संवेदनशील बनायेंगे और शिक्षित करेंगे,'' उन्होंने कहा।

TEACH का उत्कृष्ट प्रभाव

'रोटरी का भविष्य' शीर्षक पर सत्र में, रोटरी भारत साक्षरता मिशन के TEACH कार्यक्रमों का संक्षित विवरण देते हुये, उसके चेयर शेखर मेहता ने कहा,

> महाराष्ट्र सरकार ने 1 लाख स्कूलों का जिम्मा लिया है। इससे 3-5 सालों के बीच 30 मिलियन से अधिक बच्चे लाभाँवित होने वाले हैं।
>
> *RILM चेयर शेखर मेहता*

गत दो सालों के दौरान रोटेरियनों तथा इन्नर व्हील के सदस्यों के प्रयासों की बदौलत वे कार्यक्रम 'उत्कृष्ट प्रभाव' पैदा कर रहे हैं। ''हमने जिन संस्थाओं के साथ सहभागिता गठित की थी, उनमे सबसे उत्कृष्ट थी सत्यार्थी फाउंडेशन के साथ सहभागिता; इसने हमारे कार्यक्रम के लिये अनुमोदन की सबसे बड़ी मोहर दिला दी,'' साक्षरता के बारे में अवगत कराते हुये उन्होंने कहा।

खुश खबरी यह है कि 'हमने TEACH के पाँचों कार्यक्षेत्रों के साथ सहभागिता गठित की है। जब कि केंद्र तथा राज्य सरकार, दोनों से बेहद सहायता मिली, ''हम खुशकिस्मत थे कि खेल और फिल्म जगत के सितारों, यहां तक कि राजनेताओं से भी बहुत बड़ी सहायता मिली। निगमित दुनिया भी बड़े पैमाने पर हमारे पहलों की सहायता करने को आगे आयी,'' उन्होंने कहा।

मेहता ने बतलाया कि जब रोटरी क्लब ठाणे ने यह सुनिश्चित करने गैर- ब्रेल कंप्यूटरों का शुभारंभ करने के लिये उन्हें आमंत्रित किया कि नेत्र विकारों से बाधित बच्चों को अब ब्रेल कंप्यूटरों की ज़रूरत नहीं पड़ेगी, तब इसकी प्रतिक्रिया जादुई रही। ''इस परियोजना के लिये रु8 करोड़ की ज़रूरत है। PRID अशोक महाजन दर्शकों के बीच बैठे हुये थे और उन्होंने कहा ''ठीक है मैं राजश्री बिरला (आदित्य बिरला फाउंडेशन) से यह रकम दिलाऊँगा। जबकि हमने उनसे इसके लिये निवेदन तक नहीं किया था।''

इसके बाद जो हुआ वह चमत्कार से कम नहीं था! भारतीय स्टेट बैंक के अध्यक्ष भी दर्शकों के बीच मौजूद थे और उन्होने जो कहा उससे तो मेरा दिल खुश हो गया। उन्होंने कहा जितनी रकम की आपको ज़रूरत थी वो तो आपको मिल ही जायेगी लेकिन ''स्टेट बैंक की ओर से क्या मैं एक निवेदन रख सकता हूँ? क्या स्टेट बैंक इन 400 स्कूलों में से 100 स्कूलों का जिम्मा ले सकता है?''

मेहता ने कुछ वीडियो कतरनें दिखलायी, जिसमें से एक रानी के बारे में थी जो महाराष्ट्र के एक छोटे से गाँव की प्राथमिक स्कूल की शिक्षिका थी। उन्हें अपने छात्रों के साथ वक्त बिताना अच्छा लगता था

लेकिन अनेक सरकारी कामों को करना पड़ जाने की वजह से, जो अध्यापन से नहीं जुड़े थे, उनके काम में खलल पैदा होते रही। हताश होकर वे स्वेच्छा से सेवानिवृत्ति (VRS) पाने पर तुल गयी। लेकिन हाल में मंडल 3131 के एक रोटरी क्लब द्वारा आयोजित शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में उन्होंने हिस्सा लिया। उन्हें वह कार्यशाला बेहद अच्छी लगी और उन्होंने VRS लेने के विचार को छोड़ दिया। ''उनके समान, RILM के शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम से हजारों शिक्षक लाभाँवित हो रहे हैं। इस साल RILM का लक्ष्य था 2016-17 में 5,000 शिक्षकों को प्रशिक्षित करना लेकिन महज़ एक मंडल ने 3131– सुनिश्चित कर लिया कि उस लक्ष्य को तोड़ दिया जायेगा क्योंकि मंडल 3131 अकेले ही 10,000 शिक्षकों को प्रशिक्षित कर रहा है!''

इस प्रशिक्षण में, कक्षा प्रबंधन, अध्यापन कौशल, व्यक्तित्व विकास आदि शामिल हैं। मंडल 3160 तीन हजार शिक्षकों को प्रशिक्षित कर रहा है, ''हमने अपने लक्ष्यों को पार कर लिया है और कम से कम इसका 4 से 5 गुणा ज्यादा करेंगे,'' मेहता ने कहा।

ई-पठन उड़ान के लिये तैयार

ई-पठन ''रन वे पर दौड़ने के बाद अब उड़ान भरने के लिये तैयार है। गुजरात (मंडल 3052) ने कुछ उत्कृष्ट काम किया है; सरकार के साथ उन्होंने एक समझौते पर हस्ताक्षर किया है और उन्होंने 7063 स्कूलों में ई-पठन कार्यक्रम को शुरू कर दिया है, जिससे तीन मिलियन बच्चे लाभाँवित हुये।'' मंडल ने 25,000 स्कूलों के लिये समझौते पर हस्ताक्षर किया है। इसी तरह मंडल 3140, 3190, 3040 तथा 3131 ने ई-पठन की दिशा में बढ़िया काम किया है।

मेहता ने घोषित किया कि ''हम रु 5 करोड़ की लागत पर 1,116 स्कूलों के लिये स्टेट बैंक के साथ समझौते पर हस्ताक्षर कर रहे हैं और आधे मिलियन बच्चे इससे लाभाँवित होंगे। हम महाराष्ट्र सरकार के साथ 8,510 स्कूलों के लिये बातचीत कर रहे थे। अब उन्होंने उस संख्या को बढ़ाकर रु200 करोड़ की लागत पर 1 लाख स्कूलों का जिम्मा लिया है! इससे 3-5 सालों के बीच 30 मिलियन से अधिक बच्चे लाभाँवित होने वाले हैं। ये दस्तावेज अनुमोदन के लिये मंत्रालय को भेजे गये हैं; वे अपने हिस्से की निधि के साथ तैयार हैं और अब हमें अपने हिस्से का काम शुरू करना है।''

जबकि ई-पठन की लहरें उमड़ पड़ी थी, प्रौढ़ साक्षरता कार्यक्रम भी काफी तरक्की कर रहा था, जिससे अनपढ़ महिलायें बुनियादी शिक्षण हासिल करने पर प्रेरित हुयी।

खुशहाल स्कूल (Happy Schools) के मामले में भी अच्छी प्रगति देखी गयी। रोटरी क्लब जयपुर मिडटाउन ने, रु52 लाख के अंशदान के साथ 10 स्कूलों को हैप्पी स्कूलों में परिवर्तित करने की बढ़िया पहल शुरू की जिससे 15,000 बच्चे लाभाँवित होंगे। 'बेंचों, हाथ धोने के चबूतरों, लड़के-लड़कियों के लिये अलग शौचालयों, पानी की सुविधा, बच्चों के लिये यूनीफार्मों और जूतों सहित ये स्कूल अब निजी स्कूलों जैसे दिखते हैं। खेलने की जगहों तथा इमारतों को आकर्षक रंग दिये गये हैं। अब स्कूल छोड़कर जाने वाले बच्चों की संख्या काफी कम हो गयी है,'' उन्होंने कहा।

> इस साल RILM का लक्ष्य था 2016-17 में 5,000 शिक्षकों को प्रशिक्षित करना लेकिन महज़ एक मंडल ने 3131 सुनिश्चित कर लिया कि उस लक्ष्य को तोड़ दिया जायेगा क्योंकि मंडल 3131 अकेले ही 10,000 शिक्षकों को प्रशिक्षित कर रहा है!''
>
> ***RILM चेयर सुशील मेहता***

अंतराष्ट्रीय स्तर पर, कार्यक्रम पाकिस्तान में धीरे-धीरे विकसित हो रहा था और बांग्लादेश में आकार ले रहा था। इस साल नेपाल के राष्ट्रपति द्वारा राष्ट्रीय साक्षरता सम्मेलन के उद्घाटन के साथ नेपाल में जोरदार तरीके से कार्यक्रम शुरू हुआ, जहाँ उन्होंने TEACH पहल की प्रशंसा की।

यह सुनिश्चित करने कि ''उच्चतम पारदर्शिता और प्रबंधन का पालन किया जा रहा है, PWC (प्राइस वाटरहाउस कूपर्स) चार चोटी के लेखा परीक्षण कंपनियों में एक, इसका लेखा परीक्षण करते हैं। गत तीन सालों के लेखा परीक्षण किये गये हमारे हिसाबों को हम जनता के लिये ऑनलाइन अपलोड करते हैं।'' TEACH कार्यक्रम के एक एप्प के साथ इंस्टीट्यूट में वार्षिक विवरणों को भी जारी किया गया था।

अपने आरंभिक संबोधन PRID यश पाल दास ने कहा कि हालाँकि ''रोटरी प्रादेशिक तौर पर निर्दिष्ट काम पर संकेंद्रण करेगा, भविष्य में दुनिया का भला करने का हमारा साझा उद्देश्य नहीं बदलेगा और सदियों तक जब कभी इस दुनिया पर प्राकृतिक विपदा वार करेगी तब राहत और उम्मीद के लिये रोटरी की ज़रूरत पड़ेगी। रोटरी का भविष्य बेहद उजला है, लेकिन यह आपके हाथों में है।''■

के विश्वनाथन

मुंबई में, कुछ भी हो सकता है

रशीदा भगत्

अभिनेता शाहरुख खान, डिज़ाइनर अर्चना कोचरा के साथ।

In Mumbai, anything is possible - Hindi.indd 50 06-02-2017 15:47:53

> आप यह जो बच्चों की सर्जरी कर रहे हैं वह वाकई सराहनीय काम है। मैं तो बस बेहद खुशकिस्मत हूँ जो आप सभी ने आग्रह किया कि मैं यहाँ आऊँ, सो आज मैं यहाँ हूँ।
>
> **शाहरुख खान**

मुंबई में कोई भी सपना अत्याधिक बड़ा नहीं हो सकता। और मंडल 3141 ने 'प्रथम' शीर्षक पर अपने मंडल सम्मेलन (Discon) में इसे साबित कर दिया। जब डीजी गोपाल मंधानीया ने सम्मेलन से एक या दो दिन पहले यह कहते हुये एक वीडियो भेजा कि बॉलीवुड के बादशाह शाहरुख खान भी कार्यक्रम में तशरीफ ले आयेंगे तो मैं उस पर अविश्वास भी नहीं कर सकी क्योंकि यह तो मुंबई है भैया, यहाँ तो कुछ भी हो सकता है!

और लीजिये, दि वा दु ले (DDLJ) के मशहूर सितारा खान (SRK) वाकई शानदार बंद गले का लिबास पहनकर अर्चना कोचर के शो में पधारे, जिसे खुद अर्चना ने डिजाइन किया था। जब मदहोश दर्शकों, खासकर महिला दर्शकों की चीख ''शाहरुख, मुझ से शादी करो'' से सम्मेलन कक्ष गूँज उठा, तो SRK ने इस उन्माद को सहजता से ले लिया और अभावग्रस्त परिवारों के बच्चों के लिये बाल शल्य चिकित्सा परियोजना को कार्यांवित करने का बढ़िया काम करने के लिये मंडल 3141 की सराहना की।

और फिर उन्होंने दर्शकों से अपने खास अंदाज़ में यूँ कहा: ''मैं कुछ और वक्त तक बोलता लेकिन आज यहाँ, इस रात मेरे लिये शादी के कुछ प्रस्ताव आये हैं... खैर मैंने मज़ाक किया सो उम्मीद है कोई भी इसका गलत मतलब नहीं निकालेगा। मुझे 'दिल' की बातों पर भरोसा है, और आप यह जो बच्चों की सर्जरी कर रहे हैं वह वाकई सराहनीय काम है। मैं तो बस बेहद खुशकिस्मत हूँ जो आप सभी ने आग्रह किया कि मैं यहाँ आऊँ, सो आज मैं यहाँ हूँ।''

उन्होंने कहा वे इसके बाद शूटिंग के लिये लौटेंगे; डीजी गोपाल मंधानीया ने ऐलान किया कि शाहरुख खान की मौजूदगी की वजह से मंडल ने अपनी 'नन्हें दिल' परियोजना के लिये रु 40 लाख इकट्ठा किये ताकि गरीब बच्चों पर हृदय शल्य चिकित्सा की जा सके। रोटेरियन संजय जलान, राजेंद्र अग्रवाल, अर्जुन मुंडा तथा रतन पोदार ने इस रकम को इकट्ठा करने अपनी ओर से बेहद बड़ा अंशदान दिया। ''और यहाँ बॉलीवुड के बादशाह की महज़ मौजूदगी की वजह से 100 से ज्यादा बच्चों की शल्य चिकित्सा की जायेगी,'' उन्होंने कहा। अरीया फफट द्वारा लिखित कविताओं के संकलन - *Reflections* - शाहरुख को पसंद आयी।

इससे पहले, आदित्य बिरला फाउंडेशन की अध्यक्षा राजश्री बिरला ने पॉल हैरीस की मूर्ति का अनावरण किया और उन जवानों के परिवारों का सम्मान किया जो हाल के आतंकवादी हमलों के दौरान शहीद हो गये थे।

बड़ी तादाद में मशहूर हस्तियाँ

फैशन डिजाईनर अर्चना कोचर शो में, शाहरुख के अलावा, अर्चना द्वारा आयोजित जोरदार फैशन शो में, आलिया भट्ट ने भी हिस्सा लिया। अगले रोज 'Sanjay Dutt unplugged' शीर्षक पर आयोजित सत्र में, बॉलीवुड के 'खलनायक' ने जेलखाने में अपने अनुभवों तथा उनसे मिली सीख

प्रतिनंदन -(बाएं से) पीआरआईडी अशोक महाजन, राजश्री बिड़ला, आरआईपीआर मैरी बैथ गरोयने सेलिन और डीजी गोपाल मंधानिया।

In Mumbai, anything is possible - Hindi.indd 51 06-02-2017 15:47:53

बॉलीवुड डांस सत्र में डीजी गोपाल मंधानिया और पत्नी मीरा व अन्य रोटेरियन अपनी-अपनी जीवन संगनियों के साथ।

के बारे में रोटेरियन गुरसाहनी के साथ खुले दिल से बातचीत की।

एक बात जिसे उन्होंने अपनी जिंदगी में पालन किया था वह यह था, ''कभी हार ना मानें, जो भी चाहे हो, आपको अटल रहना ही होगा,'' संजय ने कहा। उनकी जिंदगी टेढ़ी-मेढ़ी राहों में चलते रही है; उनका मुकदमा 25 सालों से चलते रहा और मुकदमे के दौरान 20 सालों तक, ''मुझ पर आतंकवादी की मोहर लगा दी गयी जो मैं नहीं हूँ। मैं देशप्रेमी हूँ और अपने देश से, उसके लोगों से मुझे बेहद प्यार है; मैं अपने देश के लिये जान भी दे दूँगा। मैं सरहद पर जाकर जवानों के साथ रह सकता हूँ और अपने देश के लिये लड़ सकता हूँ,'' उन्होंने कहा।

लेकिन उन्होंने मुकदमे का सामना किया और ''मैं कानून से बचकर नहीं भागा, मैंने एक गलती की और कहा मैं उसकी सजा भुगत लूँगा।''

जेल में एक दिन की गतिविधियों के बारे में उन्होंने कहा, ''जेल में बिताया गया एक दिन कोई खास नहीं होता यार, लेकिन अगर इस 'ऑडीयंस' (दर्शक) में किसी को वैट लॉस (वजन घटाना) करना है तो उन्हें जिंदाल फार्म पे जाके, पैसा खर्च करके, भाजी-पूरी खाने की ज़रूरत नहीं है, वजन घटाने का बेहतरीन तरीका है जेल।'' और यहाँ आपको दाल पर बैठी मक्खी को फेंकने की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि उनसे हमें अनमोल प्रोटीन मिल जायेगी, उन्होंने हँसी के बीच कहा।

जाने माने फिल्म निदेशक गोविंद निहालानी की मध्यस्थता में एक और दिलचस्प सत्र था ''फिल्म, टीवी और हम''। इतर मशहूर हस्तियाँ, जिन्होंने सम्मेलन में वक्तव्य पेश किया, वे थे राज्य सभा के सदस्य सुब्रमन्यम स्वामी, सुहेल सेठ तथा कपिल सिब्बल। लेकिन एक वक्ता जो सम्मेलन का चहेता बन गया और जिसने हर किसी के दिल को छू लिया वे थी पेरालंपिक खिलाड़ी दीपा मलिक, जिन्होंने साहस, पक्का इरादा और मनोबल से भरपूर अपनी कहानी का बयान किया जिनकी बदौलत वे अपनी बढ़ती अक्षमता से लड़ने में कामयाब रही जिसने उन्हें आखिर में चाकदार कुर्सी पर बिठा दिया था।

लेकिन हर तरह की कठिनाइयों का सामना करते हुये रियो पैरालंपिक्स में उन्होंने भारत का प्रतिनिधित्व किया जहाँ पैरालंपिक्स में पदक जीतने वाली प्रथम भारतीय महिला बनकर इतिहास कायम कर दिया। सितंबर 2016 में एक 'शॉटपुट'(गोला फेंक) प्रतियोगिता में उन्होंने रजक पदक जीता। उनकी कहानी इतनी प्रेरक है कि आठ-दस पंक्तियों में बयान नहीं किया जा सकता है; इसे रोटरी समाचार के किसी आगामी अंक में विस्तृत तरीके से पेश किया जायेगा। लेकिन एक वाक्य जिसने दर्शकों का दिल जीत लिया वह था एक ही वाक्य में यह विवरित करना कि किस तरह उन्हें एक बड़ी सर्जरी करवानी पड़ी थी और अपने पति से केवल फोन पर ही बात हो पायी जो भारतीय सेना की ओर से करगिल जंग में लड़ रहे थे जिसकी वजह से वे दिल्ली में दीपा के साथ नहीं रह पाये। ''उन्होंने कहा यदि तुम्हें अपना पाँव गँवा देना पड़ जाये तो भी कोई बात नहीं, मैं जिंदगी भर तुम्हें बाहों में उठाकर चलूँगा!''

आमोद-प्रमोद और मनोरंजन का अनोखा मिश्रण और कुछ गंभीर, दिल को पसीज देने वाले वक्तव्य, यही मंडल 3141 के Discon की व्याख्या करते हैं। जिस तरीके से डीजी मंधानिया, अपने साथियों को श्रेय देते रहे और किसी अमुक सत्र के लिये की गयी कड़ी मेहनत को मान्यता देने, मंच पर बड़ी तादाद में लोगों को आमंत्रित करते रहे वही इसकी कामयाबी का राज़ है। रोटरी समाचार पत्रिका को भी उसे रोचक एवं सामयिक बनाने हेतु उसके संपादकीय दल द्वारा किये गये कठिन प्रयासों के लिये कुछ पुरस्कार मिले!

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपांकन

In Mumbai, anything is possible - Hindi.indd 52 06-02-2017 15:47:57

पहियों पर स्वास्थ्य देखभाल

टीम रोटरी न्यूज़

हेल्थकेयर बस की लॉन्चिंग के दौरान मौजूद रोटरी क्लब बॉम्बे एयरपोर्ट के पूर्व अध्यक्ष केविन कोलाको, आईपीआरआईपी के आर रविन्द्रन, श्रीलंका में उप-उच्चायुक्त अरिंदम बागची और मंडल 3220 के गवर्नर सेनाका आमेरासिंघे।

रोटरी क्लब बॉम्बे एयरपोर्ट, मंडल 3141 ने रोटरी क्लब बॉम्बे बांद्रा, बोरिवली, बॉम्बे ईस्ट, बॉम्बे कांदीवली, बॉम्बे वेस्ट और केपिटल सिटी (मंडल 3220 श्रीलंका) के साथ हाथ मिलाकर श्रीलंका के Colombo Friend In Need Society (CFINS) को हाई टैक मेडिकल केयर बस भेंट की। मोबाइल देखभाल बस के ज़रिये श्रीलंका में युद्ध पीड़ितों को श्रवण यंत्र, नेत्र देखभाल, मधुमेह जांच और कृत्रिम अंग उपलब्ध कराए गए।

रोटरी क्लब, मंडल 3220, श्रीलंका मुंबई के रोटरी क्लब्ज के साथ संपर्क में आया और प्रिंसेज़ डायना द्वारा उनके चिल्ड्रंस ट्रस्ट के ज़रिए CFINS को भेंट की गई 14 साल पुरानी बस को मोबाइल डिलिवरी वैन में बदलने की आवश्यता को लेकर इन क्लबों को बताया।

पैर विच्छेदन, नेत्र व कान के डिस्आर्डर से पीड़ित लोगों के इलाज के लिए बस आधुनिक उपकरणों व विशेष केबिन से पूरी तरह सुसज्जित है। इसके पीछे अंत में एक छोटा वर्कशॉप भी है। बस की गतिविधि की निगरानी का प्रभार श्रीलंकाई क्लब के पास है।

नई बस के साथ, CFINS द्वीप राष्ट्र में अंगों को जोड़ने के शिविरों को लगातार जारी रखने के लिए योग्य बनेगा, विशेष रूप से युद्ध ग्रसित क्षेत्रों में, अपंगों तक पहुंचने के लिए। 145,000 डॉलर की वैश्विक अनुदान योजना के तहत मोबाइल श्रव्य-दृश्य, मधुमेह जांच, कृत्रिम अंग सुविधा की शुरुआत के मौके पर श्रीलंका में भारत के उप-उच्चायुक्त अरिंदम बागची मुख्य अतिथि थे। आईपीआरआईपी के आर रविंद्रन, मंडल 3220 गवर्नर सेनाका आमेरासिंघे, आईपीडीजी जेसुदासन, मुंबई और श्रीलंका के रोटेरियन कार्यक्रम में उपस्थित थे।

CFINS के लिए जयपुरी फुट

वर्ष 2014 से रोटरी क्लब बॉम्बे एयरपोर्ट रोटरी क्लब केपिटल सिटी की साझेदारी में CFINS को जयपुरी फुट दान कर रहा है। मुंबई क्लब के पास विले पार्ले में अपना जयपुर फुट सेंटर है, जो एक वर्ष में करीबन 200 लोगों को निःशुल्क कृत्रिम अंग प्रदान करता है। वर्ष 1831 में बना CFINS कृत्रिम अंगों और आर्थोटिक्स के क्षेत्रों में आम लोगों की सेवा कर रहा है। हजारों विक्लांगों को लाभ पहुंचा रहा है, विशेष रूप से श्रीलंका के युद्ध ग्रसित क्षेत्रों में। विक्लांग मूल्यांकन कर रहे हैं, कृत्रिम अंग लगने से पहले अपनी जरूरतों को सकारात्मक रूप देने व स्वतंत्र रूप से चलने के लिए प्रशिक्षण में।

त्रिन्कोमल्ली, बाइबिले, अनुराधापुरम, पोलोन्नरुवा, अंपारा और मुलैतिवु शिविरों में रोटरी क्लब केपिटल सिटी ने CFINS को सहायता प्रदान की थी।

अंपारा में कृत्रिम अंग शिविर में मुंबई से घटकों की उपलब्धता की वजह से 71 अपंगों को नए प्लास्टिक सॉकेट के साथ जयपुर फुट दिए गए। "बॉम्बे के अंग अब तक इस्तेमाल के लिए हल्के हैं। ये उत्पादन में कम कम समय लेते हैं, कम लागत और भारतीय तकनीक पर आधारित है। यह अधिक आरामदायक हैं जैसे मरीज की आवश्यकता के अनुसार दर्जी सूट बनाता है," रोटरी क्लब बॉम्बे एयरपोर्ट के पूर्व अध्यक्ष केविन कोलाको ने कहा। ■

रोटरी को समयोचित रखना

रशीदा भगत्

जब सालों पहले वक्ता की हैसीयत से मैंने रोटरी कार्यक्रमों में हिस्सा लेना शुरू किया, तब एक ऐसी ही बैठक में, डिनर की मेज़ पर बातचीत, हृदय की बायपास शल्य चिकित्सा पर छिड़ी। और हर किसी ने बतलाना शुरू किया कि उन्होंने यह शल्य चिकित्सा कहाँ करवाई थी, वे कौन-कौन सी दवाइयाँ ले रहे थे और उनका गौण प्रभाव क्या था। एक 28 वर्षीय युवक होने के नाते, उस बातचीत में मेरा कोई खास योगदान नहीं रहा! उनका इरादा मुझे अनिष्ट महसूस कराना नहीं था लेकिन मैंने कुछ अनुपयुक्त सा महसूस किया।

इन विवरणों के साथ, प्रख्यात सामाजिक शोधकर्ता, लेखक, सार्वजनिक वक्ता तथा अब एक रोटेरयन माइकल मैकक्वीन ने जगमगाते दुबई ज़ोन इंस्टीट्यूट के खचाखच भरे सभा मंडप को संबोधित किया। 'रोटरी को समयोचित रखना' विषय पर बोलते हुये उन्होंने ऐसे कुछ मशहूर वैश्विक ब्राँड के बारे में दिलचस्प तरीके से विवरत किया, जो या तो दिवालिया हो चुके थे क्योंकि वे नवप्रवर्तन करने में या टेक्नोलॉजी से जुड़े अवसरों का उपयोग करने में चूक गये थे या उन्होंने समय की माँग को समझते हुये तुरंत, बदलते वक्त के अनुरूप खुद को ढाल लिया था।

अक्सर यह कहा जाता है कि युवा पीढ़ी, जिन्हें सदस्य के रूप में आने, अपनी ओर आकर्षित करना रोटरी के लिये ज़रूरी है, एक ऐसी पीढ़ी है जो ''कभी स्वैच्छिक सेवा नहीं करते, हरगिज सेवा काया में संबध्द नहीं होते तथा समाज का कर्ज़ा नहीं चुकाते।'' लेकिन Carry the Future नामक गै स सं को देखने के बाद पता चलता है कि यह सच नहीं है। सितंबर 2015 में कैलीफोर्निया की क्रिस्टल लोगोथेटीस ने इसे शुरू किया था जो सीरिया के शरणार्थी बच्चों की दुविधा को विवरित करने वाले एक टीवी कार्यक्रम को देखकर इतनी पसीज गयी थी कि उन्होंने कहा हमें इस मामले में कुछ करना चाहिये। एक बड़ी चुनौती यह थी कि शरणार्थी या अप्रवासी परिवारों के पास अपने बच्चों को ले जाने का कोई उचित तरीका नहीं था। ''सो उन्हें एक विचार सूझा; उन्होंने इस निवेदन के साथ

माइकल मैकक्वीन दुबई ज़ोन इंस्टीट्यूट में।

कितने टैक्सी चालक उबर नामक एप्प की तलाश में रहे होंगे जो उन्हें अपने पेशे से बेदखल कर सकता है? बहुत कम।

निधि जुटाने के लिये एक फेसबुक पेज़ लगवाया कि शरणार्थी परिवारों को पुराने शिशु वाहन भेजे जाये। एक माह के भीतर उन्होंने 40,000 अमरीकी डॉलर को इकठ्ठा किया और उपयोग किये गये 3,000 से अधिक शिशु वाहनों को इकठ्ठा किया जिन्हें सीरिया के शरणार्थी परिवारों को भेजा गया।'' तीन महीनों के भीतर उन्होंने 50,000 डॉलर इकठ्ठा किये और उनके पास 5,200 सक्रिय स्वयंसेवक थे। सब कुछ ऑनलाइन और सामाजिक माध्यम के ज़रिये।

जबकि इससे रोटरी जो सबक सीख सकता था वह यह था कि टेक्नोलॉजी की बदौलत अनेक संस्थायें भिन्न तरीकों में परिचालित होती है; दूसरा एक रोचक सबक यह था कि उसके स्वयंसेवकों में अधिकाँश ''एक ऐसी पीढ़ी का हिस्सा हैं, जिनके बारे में कहा जाता है कि वे स्वैच्छिक सेवा नहीं करते, समाज ने उन्हें जो कुछ दिया उसे वापिस नहीं चुकाते, सामुदायिक सेवा कार्य में संबध्द नहीं होते। एक ऐसी पीढ़ी जिसे सहस्राब्दी पीढ़ी या Gen (युवा पीढ़ी) कहा जाता है। मैं खुद इसी युवा पीढ़ी का एक हिस्सा हूँ।'' यह 17-35 के बीच का आयु वर्ग है और भारत में एक जनांकिक शक्ति है यानि कुल आबादी का 35-44 प्रतिशत। ''यह एक बेहद बड़ा समूह है और हमारी भावी सदस्यता की असीम कुंजी है,'' मैकक्वीन ने कहा।

रोटेरियनों से यह अर्ज़ करते हुये कि वे इस प्रचार को सच ना माने कि यह समूह समाज कार्य में संबध्द नहीं होता, उन्होंने कहा, ''वे Carry the Future जैसी अनेक संस्थाओं में जुड़े हैं, वे बस हमारे आँदोलन में ही नहीं शरीक हुये हैं। भारत का कीर्तिमान, वैश्विक कीर्तिमान से बेहतर है जहाँ उसकी सदस्यता का 15 प्रतिशत 40 साल से कम उम्र वालों का है जबकि इसके मुकाबले सामान्य रोटरी संसार में केवल 6 प्रतिशत सदस्य ही 40 साल से कम उम्र के हैं।

लेगो की सफलता

माइकल मैकक्वीन, जो उभरते चलनों पर एक तीक्ष्ण नज़र रखते है, कहते हैं खलल पैदा करने वाली टेक्नोलॉजी की वजह से, अनेक कारोबार दिवालिया हो चुके थे और एक बड़ी मिसाल थी कोडक। लेकिन लेगो जैसे खिलौनों के उत्पादक ब्रैंड ने खुद को पुन:अविष्कृत किया और पहले से अधिक समयोचित, लाभकारी तथा प्रबल बनने के लिये टेक्नोलॉजी का उपयोग करते हुये नवप्रवर्तनीय तरीके से सोचने लगे। उन्होंने मैकडोनल्डस् को पछाड़ दिया, कोक को पछाड़ दिया, एप्पल को पछाड़ दिया।'' लेकिन 2004 में, कुछ खबरों के मुताबिक, लेगो ''दिवालिया हो जाने की नौबत से महज़ छह महीने के फासले पर था। अनेक वजहों से वह गंभीर समस्या में पड़ गया था जिनमें से एक यह था कि एक ब्रैंड के रूप में लेगो को खलल का सामना करना पड़ा। अचानक 1990 के दशक में, बच्चे प्लास्टिक के बने खेल-खिलौनों को रखकर खेलने से मनाह करने लगे क्योंकि उन दिनों वीडियो गेम्स का आगमन हुआ था।

इस कार्यनीति को अपनाते हुये कि ''यदि तुम उन्हें हरा नहीं सकते तो उनके साथ शरीक हो जाइये,'' लेगो ने अपने ब्रैंड में वीडियो गेम्स का उत्पादन करना शुरू किया और 'Lego Universe' नामक एक वीडियो गेम प्रणाली विकसित की और स्मार्ट फोन का एक एप्प भी तैयार किया। इसमे काफी सारी टेक्नोलॉजी का उपयोग करने के साथ, अपने ब्रैंड के खिलौनों में नयापन ले आना भी जारी रखा, ''कुछ सालों पहले उन्होंने यह समझते हुये कि उपभोक्ताओं का एक ऐसा समूह भी था जिनकी ज़रूरतों को वे समझ नहीं पा रहे थे – लड़कियां जो अबादी का एक आधा हिस्सा है।" उन्होंने लेगो फ्रेंड्स खिलौनों का उत्पादन करने की अक्लमंदी का काम किया और दो सालों के भीतर उनकी वैश्विक आमदनी का 27 प्रतिशत, लड़कियों के लिये खास बनवाये गये खिलौनों से आने लगा था!''

रोटरी में युवजनों के ना आने की अनेक वजहों में एक यह था, मैकक्वीन ने कहा, कि ''वे हमारे बारे में नहीं जानते।'' एक बार, अमरीका के एक शॉपिंग केंद्र में अनुदान निधि का संचयन करते हुये किसी ने उनसे पूछा कि यह निधि किस काम के लिये जुटाई गयी है, ''मैंने कहा रोटरी के लिये तो उसने पूछा सच कहना हो तो रोटरी क्या है। उसे अंदाज़ा ही नहीं था। यहाँ तक कि जिन्होंने रोटरी के बारे में सुना हो वे भी असल में नहीं समझ पाते हैं कि हम क्या करते हैं। कुल मिलाकर, हम हमारी अपनी कहानियों का सही बयान नहीं कर पाते हैं। हम भले काम करते हैं लेकिन उसके बारे में दूसरों से कहने में शर्मिंदगी महसूस करते है।''

बैठक में हृदय की बायपास शल्य चिकित्सा पर बात छिड़ी। और हर किसी ने बतलाना शुरू किया कि उन्होंने यह शल्य चिकित्सा कहाँ करवाई थी, वे कौन-कौन सी दवाइयाँ ले रहे थे एक २८ वर्षीय युवक होने के नाते, उस बातचीत में मेरा कोई खास योगदान नहीं रहा!

ज्यादातर युवा लोग, जो रोटरी के बारे में थोड़ा बहुत जानते हो भी ''रोटरी के बारे में एक तरह की विकृत राय रखते थे। शायद वे उसे सेवानिवृत्त लोगों के लिये एक विशिष्ट क्लब के रूप में देखते हैं और कई मामलों में, सेवानिवृत्त पुरुषों का क्लब,'' उन्होंने तालियों की गड़गड़ाहट के बीच कहा।

चुनौती यह थी कि उस धारणा को किस तरह बदला जाये। अक्सर, युवा लोग रोटरी में नहीं आते थे क्यों कि ''वे नहीं जानते कि हमारे क्लब में उनका स्वागत है।'' एक और अहम वज़ह थी समय का अभाव। 'यह ऐसी पीढ़ी है जो वाकई व्यस्त रहती है'' मैकक्वीन ने कहा और याद किया कि जब वे सिडनी के एक रोटरी क्लब का सदस्य बने तब उनका पहला अनुभव था एक रोटेरियन से परिचय कराया जाना जो रोटरी में 27 सालों से थे और ''दूसरी

बात, मुझे बतलायी गयी कि क्लब में उनकी हाज़िरी 100 प्रतिशत थी! यह बात मेरा हौसला बढ़ाने के लिये बतलायी गयी थी, लेकिन मेरा हौसला नहीं बना; ज्यादा से ज्यादा उसने मुझे डरा-धमकाकर रख दिया क्योंकि पिछले दो हफ्तों में मैं 12 बार हवाई यात्रा कर चुका हूँ। मैं यही करता हूँ; कभी कभार ही मैं यहाँ रहता हूँ और अनेक जवाँ उम्रवालों की कार्यसूची ऐसी ही होती है। सो मेरे मन में सबसे पहले यही विचार आया कि यदि ऐसा करना ज़रूरी है तो मैं रोटरी का हिस्सा नहीं बन सकता।'' किस्मत से क्लब के अध्यक्ष ने उन्हें बतलाया कि वे जानते हैं कि मैकक्वीन कितने व्यस्त थे और कहा जितनी बार संभव हो उतनी बार आने की कोशिश करें और जितना बन सके उतना योगदान दें।''

सो, युवा वर्ग को आकर्षित करने किस तरह रोटरी क्लबें खुद को ढाल लें? जवाब कुछ ब्रैंडों में पाया जा सकता है जो दो सदियों से मौजूद हैं; वे कारोबार इसीलिये टिके रहे और संपन्न भी हो पाये क्योंकि उन्होंने सब कुछ भिन्न तथा नवप्रवर्तनीय तरीके से किया था।

दर्शकों से यह कहते हुये कि वे ऐसा कुछ याद करें जिसे उन्होंने हाई स्कूल में सीखा हो, मैकक्वीन ने कहा वे खुद भी भौतिक शास्त्र (Physics) में पढ़ाये गये एंट्रॉपी (नतीजे की अनिश्चितता) के सिध्दाँत को भूल गये थे - यह कि जिस चीज़ को अपने हाल पर छोड़ दिया जाता हो वह सड़-गलकर, तितर-बितर हो जाता है। ''मुझे कभी महसूस ही नहीं हुआ कि एक दिन मैं अपने करियर का एक बड़ा हिस्सा एंट्रॉपी के लिये समर्पित कर दूँगा और किस तरह वह कारोबारों में, संस्थाओं में, संगठनों में लागू हो पाता है जिस पर मैं 14-15 सालों से नज़र रखते आ रहा हूँ।'' हमने 2011 में देखा कि किस तरह अनेक मशहूर ब्रैंडों को एंट्रॉपी का शिकार होते, बेहद बड़े कारोबारों को दिवालिया होते देखा और इन सबमें बड़ा था कोडक। यहाँ सवाल यह था कि किस तरह शक्तिशाली का पतन हो जाता है? ताकत, विकास और समृद्धि की हालत से वे किस तरह लुप्त, अप्रासंगिक तथा कुछ मामलों में पूरी तरह से दिवालिया भी हो जाने की नौबत में आ जाते है?

दूसरा सवाल जो उनके अनुसंधान का कारण बना है और काफी ज्यादा अहमीयत रखता है, वह यह है कि क्यों कर कुछ संस्थायें इस हालत को बने रहने देते हैं जबकि कुछ लाभकर और कुछ लाभ निरपेक्ष संस्थायें वृद्धि करते रहते हैं और लंबे समय तक टिके रहते है... दशकों और सदियों तक। जवाबों को अपनी पुस्तक *Winning the battle of Relevance* में दर्ज़ कराया गया है, ''जहाँ मैंने लगातार रोटरी से यही सवाल किया कि किस तरह ये सवाल एक संस्था के रूप में लागू हो सकते हैं।''

एक शब्द जो विवरित करता है कि किस तरह बड़े से बड़ा कारोबार भी धीरे-धीरे अपना संतुलन खो बैठता है और नाकामयाब हो जाता है वह है खलल। ''यह शब्द उस बदलाव को विवरित करता है जिसकी प्रत्याशा नहीं रहती है। कितने टैक्सी चालक उबर नामक एप्प की तलाश में रहे होंगे जो उन्हें अपने पेशे से बेदखल कर सकता है? बहुत कम। कितने होटलों ने अंदाज लगाया होगा कि Airbnb (यात्री घरों का एक मशहूर जालतंत्र) किसी दिन उनके व्यापार के बड़े हिस्से को हथिया लेगा? यही खलल कहलाता है। जब आप उसकी प्रत्याशा में या तलाश में नहीं होते हैं , तो वह रातों रात आकर सारे खेल को ही बदल सकता है।''

और प्रतिष्ठित कारोबारों में खलल पैदा करने में टेक्नोलॉजी की बेहद बड़ी भूमिका रही है। मैकक्वीन ने कुछ 'स्लाइड' दिखलाये कि किस तरह पिछले 10 सालों में, ब्रैंडों ने खुद को पुन:स्थापित किया है। बाजार पूंजीकरण के आधार पर 2006 में सबसे बड़ी कंपनियाँ थी Exxon, GE, Total, Microsoft, तथा Citi और बाजार में जिनकी पूंजी क्रमश: बिलियनों में 446 डॉलर, 383 डॉलर, 327 डॉलर, 293 डॉलर तथा 273 डॉलर थी। इनमे से दो थी ऊर्जा कंपनियाँ, एक बैंक तथा एक IT कंपनी।

Exxon 2011 तक सबसे आगे था (406 बिलियन) जबकि कहीं से आकर Apple दूसरे स्थान पर (376 बिलियन डॉलर) आ गया। तीन ऊर्जा कंपनियाँ थी; तेल के व्यापार में होना अच्छी बात है। और एक चीनी बैंक कहीं से आकर पाँचवे स्थान पर आ गया, ''एक ऐसे वक्त जब अमरीकी बैंक बेहद मुश्किल से निबाह कर पा रहे थे!''

प्रकाशित विवरणपट में टेक्नोलॉजी कंपनियों को हरे रंग में कूटलिखित किया गया है। आपने देख लिया है कि 2016 में दुनिया की सबसे बड़ी पाँच कंपनियाँ टेक्नोलॉजी युक्त हो गयी है और वे सभी कंपनियाँ दूसरे कारोबारों और उद्योगों में खलल पैदा करके वहाँ पहुँची है। Apple सबसे आगे है (582 बिलियन डॉलर), इसके बाद अश्रहिरलशीं आया (545 बिलियन अमरीकी डॉलर), Microsoft (452 बिलियन अमरीकी डॉलर), Amazon (364 बिलियन डॉलर) तथा Facebook (359 बिलियन डॉलर)।

आगे, मैकक्वीन ने कहा, हमें भावी खललों की ओर देखना होगा। रोबोटिक्स (मशीनी मानव विद्या) तथा 3 डी प्रिंटिंग (3-डी मुद्रण) में नेनो टेक्नोलॉजी का उपयोग बेहद बड़ी है। चालकविहीन वाहन भी आने वाले हैं, उन्होंने कहा, और पूछा: ''आप में से कितने लोग बिन चालक गाड़ी की कल्पना से भी डर जाते है? ये सभी असलीयत बनने वाले है जिसकी हमने कल्पना भी नहीं की होगी। हाल में, फोर्ड ने ऐलान किया कि 2021 तक वे क्रमबध्द उत्पादन करते हुये अपनी पहली कार को तैयार करेंगे जिसमें 'स्टीयरिंग व्हील' (चालन चक्र) ही नहीं होगा!''

एक व्यापार विश्लेषक के मन में इस बात ने कोतुहल पैदा की है कि यह कारोबारों और उद्योगों

पर किस तरह का असर करने वाली है और ऐसे अनेक है। ''इस वक्त ऐसे अनेक उद्योग है जिन्हें अंदाज़ा ही नहीं है कि कौन सी बात उन पर असर करने वाली है। एक उद्योग है वाहन बीमा उद्योग और इनमें से कुछ फुर्तीली कंपनियाँ इस सिलसिले में घबरायी हुयी है। वे आपको नहीं बतलायेंगे, लेकिन मैं कह सकता हूँ क्योंकि उनमे से कई मेरे ग्राहक हैं और बंद दरवाज़े के पीछे वे इसके लिये तैयार होने की भागदौड़ कर रहे हैं। जरा यूँ सोचकर देखे: यदि बिन चालक की कार में आप दुर्घटना का शिकार हो जाते हैं, तो गलती किसकी है? क्योंकि बीमा कंपनी हर्ज़ाना देने के लिये जिम्मेदार है। यह उद्योग इसी बात पर आधारित है कि कार के चालक के नियंत्रण में ही वह कार होती है।''

इतर उद्योग, जो ज़ोरदार तौर पर इससे बाधित होंगे, वे है फ्लाइट और प्रचालन तंत्र उद्योग जबकि तीन दशकों में ट्रक चालक विलुप्त प्रजाति बन जायेंगे। और फिर सशुल्क वाहन स्थान (पार्किंग) उद्योग भी है। ''मैं एक ऐसे व्यक्ति के साथ लंच ले रहा था जो ऑस्ट्रेलिया के एक बड़े सशुल्क पार्किंग कंपनी में 50 प्रतिशत के धारक है। एक असाधारण, कामयाब, अमीर व्यक्ति, वे जानते हैं कि आगे क्या होने वाला है। लंच पर उन्होंने यही सवाल किया था: आपकी राय में, मुझे अपना हिस्सा कब बेचना होगा?''

एक ऐसे भविष्य की कल्पना कीजिये जब हजारों की तादाद में चालक-रहित टैक्सियां सड़क पर दौड़ रही होंगी। ''अगला सवाल यही होगा कि आप क्यों एक कार खरीदेंगे? मैं अपने 30 माह के बेटे की ओर देख रहा था और सोच रहा था यह हर तरह से मुमकिन है कि उसे चालक का लाइसेंस हरगिज़ नहीं मिलेगा। और यदि यह नौबत उस पर नहीं आयेगी तो उसके बच्चों पर तो आयेगी ही!''

एक संस्था के रूप में रोटरी भी खलल से बाधित होने से बच नहीं सकता था। हम एक वैश्विक समुदाय का हिस्सा है। अनेक समुदायों के साथ हमारा वास्ता है लेकिन हम किस तरह समुदायों का निर्माण करते हैं या उनके लिये सेवा कार्य करते हैं, वह बेहद बदल चुका है। पिछले 10 सालों में तकनीकी खलल की वजह से।

मैकक्वीन ने कहा वे तथा रो इ के निदेशक मनोज देसाई, दोनों रो इ की सामाजिक योजना कमेटी का हिस्सा थे जो रोटरी के भविष्य के लिये योजना बनाता है। ''लेकिन टेक्नोलॉजी को एक खतरा ना मानकर और हममे से ज्यादातर लोग ऐसा ही मानते हैं - क्या मैं यूँ कह सकता हूँ कि यह उन लोगों को पुन:संबध्द कराने हमारे प्रभाव को विस्तृत करने का और उत्तोलित करने का एक असाधारण अवसर हो सकता है जो असंबद्ध हैं और संस्था को छोड़कर चले गये हैं या उन लोगों को आकर्षित करने का मौका है जो अन्यथा हमारी संस्था में कभी शामिल ही नहीं हुये होते।''

एक रोटेरियन से परिचय कराया जाना जिनकी क्लब में हाज़िरी 100 प्रतिशत थी! यह बात मेरा हौसला बढ़ाने के लिये बतलायी गयी थी, लेकिन मेरा हौसला नहीं बना; ज्यादा से ज्यादा उसने मुझे डरा-धमकाकर रख दिया क्योंकि पिछले दो हफ्तों में मैं 12 बार हवाई यात्रा कर चुका हूँ। मैं यही करता हूँ; कभी कभार ही मैं यहाँ रहता हूँ।

कुछ विचार जिन्हें उन्होंने रोटेरियनों के आगे पेश किये थे वे कुछ इस तरह हैं:

❖ प्यास लगने से पहले कुआँ खोद लें; इससे पहले कि बदलाव आप पर जोर चलाये खुद की पुन:खोज कर लीजिये। आप बदलाव के आने तक रुक नहीं सकते। तब तक बहुत देर हो चुकी होगी, क्योंकि आप खुद को बचाने की कोशिश में लगे होंगे ना कि सामाजिक योजना बनाने में। भारत के मंडलों में आपके लिये एक बड़ी चुनौति यही है कि आप वृद्धि कर रहे हैं। लेकिन अक्सर वृद्धि और सफलता के साथ आत्म संतोष भी आ जाता है और यह बेहद खतरनाक बात है।

❖ पहले, पागलपन की व्याख्या यूँ की जाती थी: एक ही काम को बार बार करना और भिन्न नतीजे की उम्मीद करना। आज, इसके विपरीत हालत है।

❖ स्वत: चालन के फंदे से दूर रहें हर समय लोगों और विचारों से जुड़े रहें।

❖ सामान्य रोटरी संसार के मुकाबले, जहाँ केवल 6 प्रतिशत रोटेरियन ही 40 साल से कम उम्र के हैं, चालीस साल से कम उम्र की सदस्यता, 15 प्रतिशत रहते हुये भारत का कीर्तिमान, वैश्विक कीर्तिमान से बेहतर है।

❖ नये नज़रिये को उत्तोलित करें। लीक से हटकर सोचे। नया नज़रिया अपनाने वाले लोग, समस्याओं का सरल हल ढूँढते हैं।

चित्र: के विश्वनाथन

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपांकन

साक्षरता के बारे में सब कुछ

जयश्री

जयश्री

RSLS अध्यक्ष जे बी कामदार के साथ RILM अध्यक्ष शेखर मेहता। पी डी जी गण डब्ल्यू आनंद, बेंजामिन चेरियन, बासु देव गोळ्यां, एस कृष्णास्वामी और डीजी एन बाबू परम।

किसी भी समाज में शिक्षकों को सबसे ज्यादा वेतन और सबसे अधिक सम्मान मिलना चाहिए। लेकिन दुर्भाग्यवश, हमारे देश में ऐसा नहीं है। आप चार्टर्ड अकाउंटेंट हो सकते हैं या एक इंजीनियर, पुल निर्माण करने में या बहुमूल्य ज़िंदगियों को बचाने में निपुण हो सकते हैं, लेकिन आपको यह सब बनाया किसने? हम सभी इसके लिए अपने शिक्षकों के आभारी होते हैं। उनके बिना हम कहीं नहीं होते। इन शब्दों के साथ, शेखर मेहता ने चेन्नई के 15 रोटरी क्लबों की एक संयुक्त बैठक को संबोधित किया। यह कार्यक्रम, शहर में 3 से 5 मार्च के मध्य होने वाले 'रोटरी दक्षिण एशिया साक्षरता शिखर सम्मलेन' की एक भूमिका थी।

उन्होंने कहा, तीन वर्ष पूर्व, जब रोटरी ने साक्षरता कार्यक्रम की शुरुआत की थी, हमें कुछ अंदाज़ा नहीं था कि हम क्या हासिल करेंगे। हमारा लक्ष्य केवल 'पूर्ण साक्षरता' को हासिल करना था और आज, आरआईएलएम (रोटरी भारत साक्षरता मिशन) 'एक समग्र कार्यक्रम और एक आन्दोलन' बन चुका है। उन्हें विश्वास है कि जिस प्रकार से आरआईएलएम दूरस्थ इलाकों में शिक्षा के लिए सर्वश्रेष्ठ तकनीक का परिचय करवा रही है; दो वर्ष में, गाँव में पने वाला एक बच्चा शहर के कॉन्वेंट स्कूल में पने वाले एक बच्चे के बराबर होगा। उन्होंने आगे कहा, गाँव के बच्चों के पास एक समान अवसर होगा, क्योंकि, शिक्षकों को पाने के लिए उचित सॉफ्टवेयर प्रदान किये जा रहे हैं एवं उन्हें प्रशिक्षित किया जा रहा है।

भविष्य को देखते हुए, उन्होंने कहा कि रोटरी सदस्यों के सहयोग से, जब उन्होंने हैप्पी स्कूलों की शुरुआत की है, शिक्षकों को प्रशिक्षित किया है एवं ई-शिक्षण की सुविधायें उपलब्ध की है, स्कूल छोड़ने वाले बच्चों की संख्या कम हो जाएगी और उनके विषयों का ज्ञान बेहतर होगा और उस दिन पूरे भारत में पूर्ण साक्षरता दिवस होगा। कार्यक्रम की सफलता इतनी अधिक है कि सरकार एवं कॉर्पोरेट के सहयोग से, हम एक विचित्र परिदृश्य देख रहे है जहाँ पैसा हमारे साक्षरता कार्यक्रम का पीछा कर रहा है।

बारी-बारी से साक्षरता सम्मलेन का आयोजन देश के उत्तर, दक्षिण, पूर्व एवं पश्चिम प्रदेशों में किया जा रहा है ताकि अधिकतम सहभागी लाभान्वित हो सकें और यह कार्यक्रम की सार्वजनिक छवि को पर्याप्त मात्रा में इतना बढ़ा देगा जिससे अन्य गैर सरकारी संगठन एवं कंपनियाँ इसमें निवेश कर सके। उन्होंने कहा कि पिछले वर्ष साक्षरता सम्मलेन में नोबेल पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी के संबोधन ने रु 1.6 करोड़ का अनुदान इकट्ठा किया था।

'टीच' कार्यक्षेत्र के सालाना रिपोर्ट कार्ड को प्रदर्शित करते हुए, उन्होंने कहा कि शिक्षक सहायता के वार्षिक राष्ट्रीय लक्ष्य - 5,000 शिक्षकों का प्रशिक्षण - को पहले ही हासिल किया जा चुका है। मंडल 3131 ने 10,000 शिक्षकों के उनके लक्ष्य के लिए 5,000 शिक्षकों को प्रशिक्षित किया है; और मंडल 3160 ने 2,300 शिक्षकों को प्रशिक्षित कर दिया है। हम उन्हें इतिहास या भूगोल नहीं बल्कि कक्षा प्रबंधन, शिक्षण कौशल और व्यक्तित्व विकास सिखाते है ताकि वे बच्चों को बेहतर तरीके से ढाल सके।

ई-शिक्षण पर आते हुए, मेहता ने कहा कि राज्य सरकार के साथ एक समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित करके, गुजरात ने 7,063 स्कूलों में डिजिटल कक्षाओं की स्थापना की है जिससे 30 लाख बच्चे प्रभावित हो रहे है। एसबीआई और महाराष्ट्र सरकार के मध्य विशाल समझौता ज्ञापन की चर्चा चल रही थी। उन्होंने कहा, बच्चे शनिवार को भी स्कूल आना चाहते है क्योंकि उन्हें पढ़ाई अब और अधिक रोचक लग रही है। दो वर्षो में, हम देश के हर स्कूल में इसे ले जाना चाहते हैं।

कनगलता बोर्मु, एक वयस्क अनपढ़ से शिक्षार्थी बनने वाली महिला जिसने स्टाम्प पैड को अलग रख दिया और बैंक खाता खुलवाने के लिए हस्ताक्षर किये क्योंकि अब वह अंगूठा छाप नहीं रही, की कहानी ने वयस्क साक्षरता के क्षेत्र में अब तक किये गए कार्यो का सार प्रस्तुत किया।

बाल विकास के क्षेत्र में, देश भर में 7,700 गाँवों में स्थापित 3,176 आशा किरण केन्द्रों में 4,000 शिक्षकों द्वारा लगभग 45,000 बच्चों को पढ़ाया जा रहा है। उन्होंने रोटरी क्लब जयपुर की 10 सरकारी स्कूलों को हैप्पी स्कूलों में परिवर्तित करने की गतिविधियों को चिन्हित किया, जिसके कारण रु 52.5 लाख की लागत से लगभग 15,500 बच्चे लाभान्वित हो रहे हैं।

एक रोटरी सदस्य द्वारा भारत में पूर्ण साक्षरता के लक्ष्य को हासिल करने की निर्धारित तिथि के बारे में पूछे गए सवाल का जवाब देते हुए उन्होंने कहा, ''हमें कल तक भारत को शिक्षित बनाना है, चलिए ऐसे काम करते है।''

सम्मलेन का एक संक्षिप्त विवरण देते हुए, आरएसएएलएस प्रमुख जे. बी. कामदार ने कहा कि लगभग 4,000 प्रतिनिधियों के शामिल होने की अपेक्षा है। ■

गरीबों व ज़रूरतमंदों के लिए अक्षयपात्र

जयश्री

दाएं से : डीजी एच आर अनंत, रोटरी क्लब बेंगलोग ब्रिगेड्स अध्यक्ष विमला पिंटो, मिस अर्थ 2010 निकोला फारिया, गिरिजा अनंत और रोटेरियन सतीश बी ई रोटरी फ्रिज के उद्घाटन के मौके पर।

हम ये देखकर अत्यंत प्रसन्न थे कि कुछ निर्माणी मजदूर फ्रिज से खाना ले जाकर बच्चों को खिला रहे थे। हम अभी भी रोटी और पनीर मक्खन मसाला के एक कौर के साथ खाना खा रहे एक बच्चे के चेहरे को देखने की स्मृति का मज़ा लेते हैं। रोटरी क्लब बेंगलोर ब्रिगेड्स मंडल 3190 की अध्यक्ष विमला पिंटो ने कहा।

उन्होंने और उनकी टीम ने बेंगलोर में एचएसआर लेआउट पर होटल एलीट रॉयल के बाहर रोटरी फ्रिज स्थापित किया जिसका उद्घाटन डीजी एच आर अनंत और मिस अर्थ 2010 निकोला फारिया ने किया था।

क्लब ने शहर के रेस्तराओं के साथ गठजोड़ किया था जिसके अंतर्गत रेस्तराओं में बचे हुए खाने को गरीबों व जरूरतमंद लोगों को खिलाने के लिए इमारत के बाहर मिनि रेफ्रिजरेटरों की स्थापना की गई।

खाद्य श्रृंखला को क्रीमेटोरिअम या समय से पहले खत्म नहीं करना चाहिए, बल्कि लोगों को पोषण प्रदान करने की इन्हें अपनी भूमिका को पूरा करना चाहिए। कोई भी फ्रिज से खाना निकाल सकता है इसके लिए कोई कीमत ना हो और कोई प्रश्न नहीं पूछा जाए। विमला ने कहा।

पहला फ्रिज पिछले साल अक्टूबर में इंदिरा नगर में लेबनानी रेस्तरां बेब्लॉस में स्थापित किया गया था।

और इसके बाद कई अन्य जगहों पर भी अगले तीन महीनों में 40 से अधिक फ्रिज स्थापित किए गए।

पेक्ड खाने के पैकेटों को फ्रिज में रका गया और कभी-कभी ताजा जूस भी। त्योहारी सीजन के दौरान रेस्तराओं में मिठाई का प्रबंध भी किया जाता था जिसमें रोटेरियन भी अपना हाथ बंटाते हैं।

ताजा खाने का प्रबंध रेस्तरां द्वारा सुनिश्चित किया जाता है वहीं क्लब फ्रिजों के रखरखाव व मरम्मत आदि की देखभाल करता है। इस प्रयास में दूसरे क्लबों और कुछ कॉर्पोरेट्स ने भी दिलचस्पी दिखाई है।

''रोटेरियनों ने रोटरी शेल्फ अवधारणा में भी दिलचस्पी दिखाई है जहां किराने का सामान, स्नेक्स, जैम आदि लोगों को दान किए जाते हैं या फिर जरूरतमंदों को देने के लिए स्टोर किए जाते हैं। कुछ रहवासी कॉम्प्लेक्स ने भी इस विचार का स्वागत किया है।'' विमला कहती हैं।

साइकिल से स्वच्छ भारत का संदेश

किरण ज़ेहरा

स्वच्छ भारत की शुरुआत करने एवं WinS को बढ़ावा देने के उद्देश्य से, बाइस प्रतिभागियों ने भारत के बदलते भू-दृश्यों से गुज़रते हुए, 4,800 मील की दूरी साइकिल पे तय की।

फ्लोरिसेंट रंग की जैकेट एवं चमकदार हेलमेट पहने हुए, सैकड़ों रोटरी सदस्यों, रोटरेक्टरों एवं साइकिल चलाने के उत्साही लोगों ने चेन्नई के इलियट बीच पर साइकिल चालकों के उस 22 सदस्यीय दल का सत्कार किया जिन्होंने K2K Tour De Rotary में हिस्सा लिया था। रोटरी क्लब मद्रास मिडटाउन, मंडल 3230, वार्षिक साइकिल चलाने की प्रतियोगिता के आयोजक, ने इस बात का ध्यान रखा कि अभिनंदन एक बड़ा समारोह हो। केक के ऊपर की आइसिंग टीआरएफ ट्रस्टी प्रमुख कल्याण बैनर्जी की ओर से एक विशेष वीडियो सन्देश था: ''मैं प्रसन्न हूँ कि आप रोटरी संस्थान के लिए एवं संसार में अच्छा करने के लिए कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक की यात्रा कर रहे हैं। मैं इस पहल की सराहना करता हूँ और आपको इस यात्रा के लिए शुभकामनाएँ देता हूँ। हमारे संस्थान को बढ़ावा देने के लिए आप जो कुछ भी करते है उसकी हमेशा सराहना की जाएगी।'' क्लब के सेक्रेटरी भावेश शाह ने कहा कि ''यह एक बहुत बड़ा प्रोत्साहन है, विशेषरूप से इसलिए क्योंकि यह सबसे अधिक श्रद्धेय रोटरी नेतृत्वकर्ता की तरफ से आया है।''

क्लब ने 7 नवम्बर को कश्मीर से 4,800 किलोमीटर की यात्रा को, इस वर्ष की रैली को टीआरएफ के 100 वें वर्ष का स्मरण करने, अनुदान इकठ्ठा करने, पूरे भारत में लोगों को रोटरी के WinS कार्यक्रम के बारे में बताने तथा स्वच्छ भारत अभियान को प्रोत्साहित करने के लिए समर्पित करते हुए, हरी झंडी दिखाई। शहरी विकास मंत्रालय द्वारा भी इस पहल का समर्थन किया गया।

यात्रा

कुल 27 झंडी दिखाने वाली चौकियों और हर 40 मिनट पर अल्प विश्राम के साथ, यात्रा 22 साइकिल चालकों के लिए एक रंगभरा कार्य रही है। जहाँ एक साइकिल चालक जो उसके जीवन के तीसरे दशक के प्रारंभिक दौर में था ने महसूस किया कि कश्मीर की सुन्दर घाटी ने उसका दिल जीत लिया, वहीं एक अन्य 60 वर्षीय चालक गुजरात की जीवंतता से मोहित हुए। साइकिल चालक श्रीनि स्वामीनाथन

दल की अकेली महिला साइकिल चालक पोर्कोदियाल चिदंबरम अपने माता-पिता के साथ।

Cycling for Swachh Bharat - Hindi.indd 60 06-02-2017 15:38:41

डी जी चंद्रशेखर कोलवेकर और उनकी टीम साइकिल चालकों का स्वागत करते हुये।

कहते हैं '' हमने पहले कभी भी भारत को इस प्रकार से नहीं देखा है और यह पदयात्रा करने जितनी ही अच्छी है।'' इस यात्रा के अपने सर्वश्रेष्ठ अनुभव को वर्णित करते हुए, वह कहते हैं कि गुजरात के गाँधी नगर स्टेडियम में 3,000 साइकिल चालकों को उनकी घंटियाँ बजाने का निर्देश दिया गया और ''जैसे ही हम स्टेडियम में दाखिल हुए हम रोमांचित हो गए। यह सर्वश्रेष्ठ सत्कार है जो कभी किसी साइकिल चालक को मिला हो।''

दल की अकेली महिला साइकिल चालक 26 वर्षीय पोर्कोदियाल चिदंबरम ने कहा, ''यात्रा स्वयं में हम सभी के लिए एक सबक है।'' यह उसका जूनून और उसके पति एवं बॉस का समर्थन था जिसने उसके लिए इस अद्भुत, जीवन में एक बार की जाने वाली यात्रा में सम्मिलित होना संभव बनाया। बेशक, स्वच्छ भारत और WinS एक प्राथमिकता थी, परन्तु उसके पास सभी औरतों के लिए एक सन्देश है। ''अपने जूनून का पीछा करो और उस पर ध्यान केन्द्रित करो, ना कि रुकावटों पर।''

उत्सुकता इस प्रचार रैली का मूल रही है। कई स्थानों पर, दो/चार पहिया वाहन चालकों ने साइकिल चालकों को रोककर उनकी सवारी के बारे में पूछताछ की। स्वामीनाथन कहते हैं, ''अगर उन्होंने हेलमेट नहीं पहना था, हमने उन्हें हेलमेट लाकर पहनने की सलाह दी'' आगे कहते हुए,

छोटे विक्रेता, जो फल, चाय और गन्ने का रस बेच रहे थे उन्होंने हमसे पैसे नहीं लिए, जब उन्हें हमारी यात्रा के कारण का पता चला। उन्होंने कहा, आप देश के लिए अपना हिस्सा कर रहे है, हम अपना कर रहे है।

''एक घनिष्ठता बनाना आवश्यक था, अन्यथा, वे हमें सुनने में दिलचस्पी नहीं लेते।'' हर जगह, कुछ मोटरसाइकिल चालकों या देखने वालों ने तस्वीरें खींची और उन्हें K2K एवं स्वच्छ भारत हैशटैग के साथ सामाजिक मीडिया पर साझा किया। एक अन्य साइकिल चालक कहते है, ''इसने हमारे अभियान का प्रचार तुरंत ही एक बी दर्शक संख्या में किया।''

खड़ी ढलानों, घाट के रास्तों, सुरंगों एवं प्राकृतिक दृश्यों के मध्य से रोजाना 150-200 किलोमीटर की साइकिल यात्रा के उनके अनुभव के अलावा, एक चीज़ जो अचर थी वो थी विभिन्न रोटरी क्लबों का समर्थन। वो सभी 19 ज़िले, जिनसे गुज़रती हुए रैली निकली, के ज़िला गवर्नर झंडी दिखाने वाली चौकियों पर उपस्थित थे और उन्होंने इस बात को सुनिश्चित किया कि साइकिल चालकों का गर्मजोशी से अभिनंदन हो। हम उच्चाधिकारियों से, सामाजिक कार्यकर्ताओं से, नेतृत्वकर्ताओं से मिले और हम पर अत्यधिक प्रेम की बरसात की गयी।

स्वामीनाथन कहते हैं कि बाकि का भारत कई अधिक मनोहर है। वह कहते हैं, छोटे विक्रेता, जो फल, चाय और गन्ने का रस बेच रहे थे उन्होंने हमसे पैसे नहीं लिए जब उन्हें हमारी यात्रा के कारण का पता चला। उन्होंने कहा, आप देश के लिए अपना हिस्सा कर रहे हैं, हम अपना कर रहे हैं। हम उनके इस भाव से चकित हो गए थे।

चेनई की झंडी दिखने वाली चौकी से ठीक पूर्व, जिसकी अगुवाई दक्षिण अफ्रीकी क्रिकेटर जोंटी रोड्स कर रहे थे, क्लब ने एक तमिल गीत थूइमाई इंडिया (स्वच्छ भारत) का लोकार्पण किया, जिसे 12 वर्षीय वायलिन-वादक अन्नेत्स अभिनव नारायणन एवं 14 वर्षीय गायक रिषभ रामनाथ द्वारा, स्वच्छ भारत अभियान को बढ़ावा देने के लिए लिखा एवं गाया गया था।

मंडल 3230 के डीजी नटराजन नागोजी ने स्थानीय शहरी सरकारी निकायों एवं रोटरी क्लबों को धन्यवाद दिया जिन्होंने इस कार्यक्रम का समर्थन किया और आगे कहा, यह रैली इस बात को सुनिश्चित करने के लिए है कि ग्रामीण इलाके के लोगों को खुले में शौच ना करने के लिए जागरूक किया जा सके और एक परिवर्तन की शुरुआत की जा सके जिससे एक स्वच्छ एवं स्वस्थ भारत का निर्माण होगा।■

Cycling for Swachh Bharat - Hindi.indd 61 06-02-2017 15:38:42

क्यों विमुद्रीकरण बैंकों के लिए अप्रत्याशित लाभ नहीं होगा

टी सी ए श्रीनिवास
राघवन

भारत की बैंकों ने एक लंबे समय से ऐसा नहीं सोचा होगा कि उनके पास इतने अधिक पैसे की बाढ़ आने वाली है, अचानक से - पूरे 15 लाख करोड़! प्रधानमंत्री द्वारा 8 नवंबर 2016 को घोषित की गयी रु500 और रु1000 के नोटों की नोटबंदी और 31 दिसंबर तक सभी पुराने नोटों को बदलवाने की आवश्यकता के कारण, प्रचलन में चल रहे लगभग 87 प्रतिशत नोट वापस बैंकों में आ गए।

इतना अधिक कुछ नहीं हुआ होता यदि बैंक वाले शीघ्रता से लोगों के नोट हाथों-हाथ बदल पाने के काबिल होते। क्योंकि रिज़र्व बैंक ऑफ़ इंडिया के पास पर्याप्त ट्रक और सुरक्षा पहरेदार नहीं थे, वह बैंकों की शाखाओं तक तेज़ी से नोट नहीं पहुँचा सका।

इसके परिणास्वरूप, जो पैसा लोगों के पास था वो अब बैंकों के पास जमा हो गया है। अब प्रश्न यह है कि बैंक इन पैसों का क्या करेगा? कैसे बैंक अचानक आयी इस पैसों की बाढ़ का उपयोग करेगा?

बहुत से लोग सोचते हैं कि यह अधिकता एक असामान्य स्थिति है जो कि गर्मियों के ख़त्म होते-होते तब सामान्य हो जाएगी जब लोगों को वह नकदी वापस मिलने लगेगी जिसे उन्हें जमा करना पड़ा था। वर्तमान में, लोग चार बराबर भागों में कुल रु96,000 प्रति माह से अधिक नहीं निकाल

सकते। न ही रु4,500 से ज्यादा एटीएम से निकाल सकते हैं। जब इन सीमाओं को हटा लिया जायेगा, संभवतः जून माह के अंत तक, बैंकों के पास जमा नकदी में कमी आएगी, वापस 8 नवम्बर से पूर्व वाली स्थिति में।

इस दौरान, इस बात की सम्भावना है कि सरकार, लोगों को इलेक्ट्रॉनिक लेन-देन के लिए विवश करने के लिए, उस पूरे नकदी पैसे को नहीं बदलेगी जिसका विमुद्रीकरण किया गया है। अभी स्वयं सरकार को भी यह नहीं पता है कि वह कितना पैसा नहीं बदलेगी। परन्तु एक उचित अनुमान है कि लगभग 5 लाख करोड़ रुपये नहीं बदले जायेंगे। इसका मतलब यह है कि प्रचलन में चल रही मुद्रा 8 नवंबर को रु17 लाख करोड़ के स्तर से गिरकर अंततः रु12 लाख करोड़ रुपये तक के स्तर पर आ जाएगी। यह एक अच्छी बात है।

इसका बैंकों के लिए क्या मतलब है? कुछ भी नहीं: एक बैंक खाते में चाहे एक नकद की प्रविष्टि हो या एक डिजिटल प्रविष्टि, पैसे की मात्रा समान रहती है। केवल नकदी प्रविष्टियाँ कम हो जाती है।

X,Y, Z के बारे में सब कुछ!

दूसरें शब्दों में, बैंक ज्यादा समय के लिए नहीं तो, कम से कम वर्ष 2017 के दौरान नकदी से परिपूर्ण रहेंगे। बहुत से लोग इस परिस्थिति में रहना पसंद करेंगे, लेकिन, हाय! बैंके नहीं। उनका अर्थशास्त्र विपरीत दिशा में काम करता है क्योंकि बैंके तो केवल मध्यवर्ती संस्थाएं हैं।

> **जब तक न बिका हुआ स्टॉक ख़त्म नहीं होता है, कोई भी और अधिक निवेश नहीं करेगा और इसलिए ऋण की मांग कम बनी रहेगी।**

वे जमाकर्ताओं से प्रतिशत ब्याज दर पर उधार लेते हैं और कर्ज़दारों को X+Y प्रतिशत ब्याज दर पर उधार देते हैं। बड़े पैमाने पर, यही उनकी कमाई होती है। हालाँकि, उनके लाभ का प्रतीक नहीं है जो Y-Z होता है, जहाँ Z उनकी कुल लागत होती है, यानी, जनता से उधार लेने की लागत साथ ही संचालन की लागत जैसे वेतन, किराया, और अन्य खर्चे, और उन कर्जो का उल्लेख करने की आवश्यकता नहीं है जो कभी लौटाए नहीं जायेंगे।

जितना अधिक Y-Z होगा, उतनी बेहतर बैंकों की स्थिति होगी। और यही सार्वजनिक क्षेत्र की बैंकें बुरी तरह प्रभावित होती है; उनका Z अक्सर निजी क्षेत्र की बैंकों के Z के मुकाबले तीन से चार गुना होता है। इसका मतलब उनका लाभ निजी क्षेत्र की बैंकों के मुकाबले कम होता है - अर्थात, जब वे वास्तव में घाटा नहीं झेल रहे होते हैं, उनमें से आधे झेल रहे होते हैं। आप इस अंतर को बैंकों की शेयर की कीमतों में देख सकते हैं।

इसलिए, बैंकों के लिए तात्कालिक चुनौती है कि वे ज्यादा से ज्यादा ऋण देना शुरू करें ताकि उनकी आय अधिकतम की जा सके। परन्तु यह सरल नहीं होने वाला है, दो कारणों के कारण।

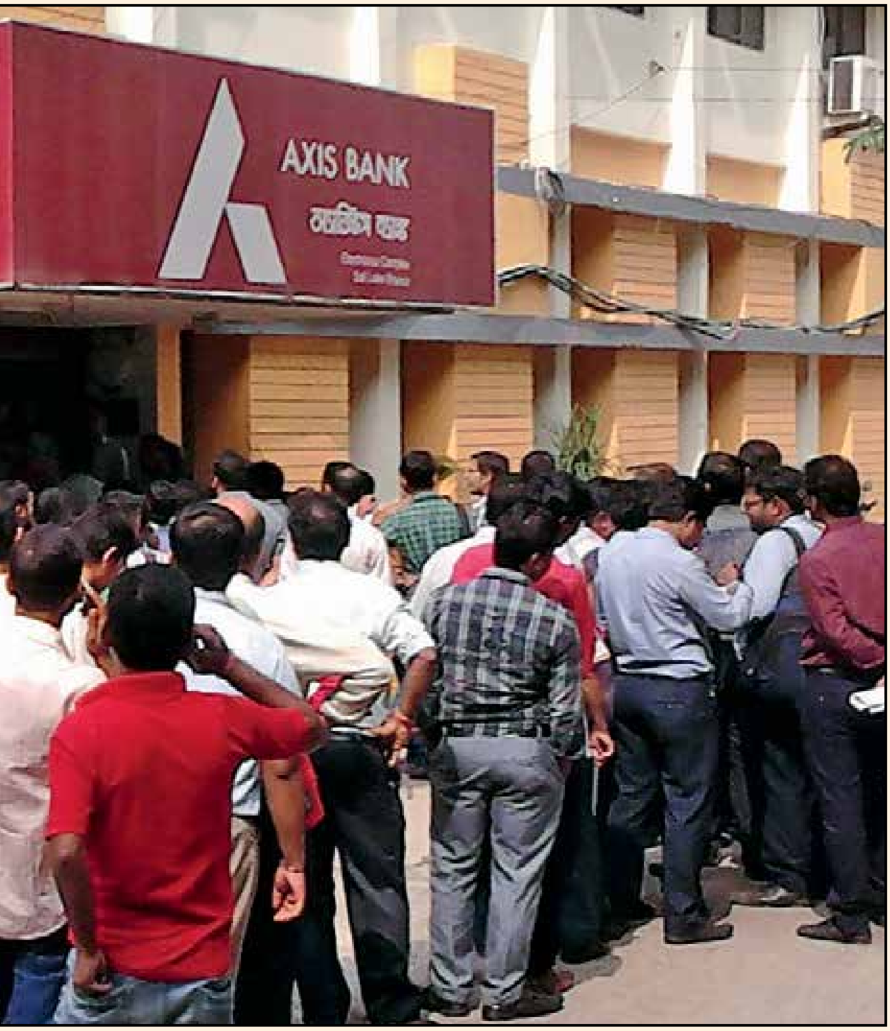

कम बिक्री, ज्यादा स्टॉक

पहला कारण है कि नोटबंदी का मतलब है कम बिक्री और इसलिए अधिक स्टॉक। जब तक न बिका हुआ स्टॉक ख़त्म नहीं होता है, कोई भी और अधिक निवेश नहीं करेगा और इसलिए ऋण की मांग कम बनी रहेगी।

निवेश की मांग में यह शिथिलता केवल न बिके हुए स्टॉक के कारण नहीं है। यह इसलिए भी है क्योंकि कुल मांग - दोनों घरेलु और वैश्विक मांग में भी एक सामान्य गिरावट बनी हुई है - और नोटबंदी ने केवल इस गिरावट को बढ़ाया ही है।

तीसरा, बैंकों की लागत की एक संरचना होती है, जिसे वे उधार दे भी दें, तो ज्यादातर बैंकों की कमाई कम रहेगी चाहे वह सार्वजनिक क्षेत्र के हो या निजी क्षेत्र के।

संक्षेप में, नोटबंदी अंततः सरकार की आमदनी में सहायता कर सकती है परन्तु यह बैंकों के लिए बुरी खबर है। वर्ष 2017 उनके लिए एक कठिनाई भरा वर्ष रहने वाला है।■

तनाव से छुटकारा पाएं

भारत और शलन सवूर

निन्यानवे प्रतिशत तनाव हमारा खुद का बनाया होता है। वह इसलिए क्योंकि किसी ने हमें ये सच्चाई नहीं सिखाई: जीवन की शुरुआत आपसे होती है। जीवन तनाव-मुक्त तब होगा जब आप होंगे। बेशक, मुसीबतें, दुर्भावना, ओछापन, कठोरता हमारे दरवाज़े पर दस्तक देंगे, पर हमें किसी ने नहीं बताया कि दरवाज़े का ताला हमारे पास है।

सच्चाई को जानें : आइये, हम अपनी सही, सच्ची शक्ति जगाएं। यह एक सरल और अति सुंदर विधि द्वारा किया जा सकता है। कल्पना करें कि मदर टेरेसा जैसी एक प्रेमल, निष्पक्ष व्यक्ति आपका हाथ थाम के बैठी है। उनके स्पर्श को, और आप की बातों में उनकी ध्यानपूर्वक रूचि और अनुकंपा को महसूस करें। उनके प्रेमल अस्तित्व को आपके चारों ओर बहने दें। आप को लगेगा जैसे आपके भीतरी तनाव शांत हो रहे हैं और कुछ मधुर और मूल्यवान एहसास उभर रहा है। कल्पना करें कि मदर की नज़रों में आप एक शुद्ध, उज्जवल, पवित्र और संपूर्ण व्यक्ति हैं। और आप अपने आप को प्यार और क्षमा करने के योग्य पाएंगे। आप आभार और आनंद से भर जायेंगे, क्योंकि रोज़मर्रा के व्यवहार में से मुखौटे उतरेंगे और बनावटीपन निकल जायेगा। पहली बार आप जैसे हो वैसे खुद को दिखेंगे - प्रामाणिक, सुन्दर, प्रफुल्लित।

यह एक प्रेरणादायक अनुभव है जिसकी सभी को ना सिर्फ ज़रूरत है, बल्कि हर एक को महसूस करने का अधिकार भी है। आखिर कितनी बार हम अपने आप को आनंदित और अनंत प्रेम भरी नज़रों से देखते हैं? क्या आप समझ गए की इस अवस्था में, देखने वाले और दिखने वाले में, कोई तनाव नहीं होता? कोई तनाव नहीं। बस एक गहरी शांति। स्वीकार करना और स्वीकृत होना स्वस्थ जीवन का सुन्दर नुस्खा है।

> तुम जो भी करो, तो इसे उदारता की एक मिठासभरी भावना के साथ करो। अपने लिए ऐसी गतिविधि का चुनाव करो।

तनावरहित दृष्टिकोण : स्वयं पर गौर करने पर आप जानेंगे की आप ज़्यादातर कितने तनाव में रहते हैं।

- एक असंतुष्टि का निरंतर एहसास रहता है, कुछ और अधिक पूरा करने की इच्छा होती है।
  उपाय: इसकी जगह, रचनात्मक, उद्देश्यपूर्ण, सर्वश्रेष्ठ योगदान दिया है, ऐसी भावनाएं उत्पन्न करें।
- अपनी सफलताओं पर ध्यान केंद्रित करने की प्रवृत्ति रहती है।
  उपाय: यह सोचते रहना कि मुझे क्या करना या नहीं करना चाहिए था, एक परछाई को पकड़ना जितना ही व्यर्थ है। इसकी जगह, सही मानसिक विचारधारा रखकर वर्तमान में क्या संभव है उसपर ध्यान दें। इसके अलावा, विफलता हमें अधिक समझदार, संवेदनशील और संतुलित बनाती है। एक बिना दबाव का अनोखा संतुलन बसने लगता है। आप जानते हैं कि जीतने पर उतने महान नहीं जितना लोग आपको बताते हैं, और हारने पर उतने तुच्छ नहीं जितना आप खुद को समझते हैं। जागरूकता की ओर एक और छोटा सा रास्ता यहाँ खुलता है।
- मन में दुविधा होने से व्यर्थ मतभेद पैदा होते है। उदाहरणार्थ, आप किसी काम के बारे में कहते हो, यह बहुत कठिन है। मैं नहीं करना चाहता, फिर भी कर रहा हूँ। या ऐसा कोई बेमतलब विचार व्यक्त करना, मुझे वाकई आप के साथ चाय पी कर गप्पे लगाने की इच्छा है, लेकिन नहीं कर सकता। समय नहीं है। गौर करें की आपने कैसे अपने मन को इच्छा है और नहीं कर सकता के बीच बाँट दिया। चूँकि यही विचारधारा आपके कामकाज, परिवार, रिश्तों में भी कायम रहती है, आप ग्लानि, खेद, बेचैनी, निराशा, दु:ख, क्लेश की तरफ बढ़ते हैं।
  उपाय: अपने आप को संभालें। अपने लिए और दु:ख उत्पन्न ना करें। जैसा महान मास्टर लाओ त्ज़ू ने कहा, आपके पास जो है उसी में संतुष्ट रहें, जो चल रहा है उसी में प्रसन्न रहें। जब आप समझ लेंगे कि कोई आभाव नहीं, तो पूरी दुनिया आपकी होगी। आप जो भी करें, मधुर उदारता कि भावना से करें, बिलकुल के बिना। अपना चुना हुआ कार्य समझ के करें। बिना शर्तो के करें, रत्तीभर द्वेष के बिना। इसे एक महान स्वरुप में सोचें: कर्तव्यों को पूरा करना जीने के मार्ग को सशक्त तो करता है,

लेकिन इन्हें उदारता के साथ करने से उसी मार्ग पर रौशनी और चमक भी आती है। इन मानसिक दुविधाओं के बिना आप शांति और चैन से रहोगे।

✠ जब हम छोटी चीज़ों द्वारा अपने ऊपर बा प्रभाव होने देते हैं, हम अपनी अंदरूनी शांति बर्बाद कर देते हैं। विश्वास करें, एक व्यग्र करने वाला

> जब आप पर्याप्त मात्रा में सूर्य की किरणों को सोखते हो तो आपकी भावनात्मक स्थिरता तनावपूर्ण स्थितियों के माध्यम से हासिल की है।

विचार, एक तीव्र भावना और दुनिया आकर्षक या मित्रतापूर्ण नहीं लगती। क्योंकि हमारे अंदर का सूर्य ढल जाता है।

उपाय: धूप में चलें - वास्तव में! हमें डॉक्टर के पास जाने की या दवाई खाने की ज़रुरत नहीं। यहाँ भारत में, अनंत सूरज के देश में, हमें वह महान परोपकारी सूरज निरंतर रौशनी प्रदान करता है, उसकी गर्म सुनहरी चमक में टहलें। उसे एक सेहतमंद, स्फूर्तिदायक सैर बनाएं। उसकी गर्म जीवनदायी किरणों को अपने त्वचा में प्रवेश करने के एहसास से शुरू करें। अपने अंदर उसकी गर्माहट पर ध्यान केंद्रित कर दृता से कहें, मुझ में बह रही इस प्रकाश की शक्ति से, मेरे सारे नकारात्मक विचार, विनाशक भावनाएं, ढीठता और रुकावटें को शुद्ध करके दूर करें। मैं यह जान लूँ कि जो हानि मैंने सोची या की होगी, उसकी मुझे क्षमा प्राप्त हुई है। मैं सकारात्मक और शांतिमय रहूँ और एक अच्छा और निर्मल जीवन जियूं। और मेरे जीने के ज़रिये सारे अन्य प्राणियों का भला करूं।

अब अपने अंतरंग तक प्रेम और सद्भावना बरसाने वाली सूर्य की किरणों को महसूस करें - हृदय, सोलर प्लेक्सस। यह महसूस करें कि ये किरणों आपकी सारी नाकारात्मकताएं, जिनके कारण आप तनावपूर्ण थे, की सफाई कर रही हैं, ऐसा सोचें की आप उसकी शुद्धि करने वाले प्रकाश में डूब गए हो। अब ये सोचें की आपका शरीर ही प्रकाश है।

हालाँकि इस क्रिया में आपकी कल्पना शक्ति का प्रयोग चाहिए, इसमें काल्पनिक कुछ भी नहीं। हाल के एक अध्ययन का निष्कर्ष: पर्याप्त धूप सोख लेने से आपकी भावनात्मक स्थिरता तनावपूर्ण स्थितियों में भी बनी रहती है। सूर्योदय और सूर्यास्त के बीच का समय मौसम का वह परिवर्तन है जो हमारे भावनात्मक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए सबसे ज़्यादा मायने रखता है, ऐसा शोधकर्ता मार्क बीचर ने बताया।

आहार का असर : हम में से कई लोग अंधाधुन्द खाते हैं। हालाँकि तरह तरह के नए पकवान खाने का मज़ा है, एक नया क्षेत्र, न्यूटरीजेनोमिक्स, यह सुझाव देता है कि नए आहारों के पोषक हमारे जीन्स पर असर करते है, जिससे मोटापा, मधुमेह, इत्यादि हो सकता है। सैन फ्रांसिस्को विश्वविद्यालय द्वारा संग्रहित अंक-विवरन बताते हैं कि ऐसे दक्षिण एशियाई लोग, जिन्होनें पश्चिमी आहार अपनाया है, उनमें दिल के दौरों और लकवे की दर में वृद्धि हुई है। चावल के बदले गेहूं खाने से भी जीन्स का उत्तेजन शुरू हो सकता है। उपाय: अनुत्तेजक आहार खाएं - प्राकृतिक उत्पादन जिनसे दर्द, फुलावट, अम्लता, चकत्ते, विरूपित जीभ, ना हो। रोज़ व्यायाम करें। इससे पाचन शक्ति, सही मनोदशा में वृद्धि होती है और हृदय और फेफे मज़बूत होते हैं। तनाव शांति में बदल जाता है। शांति स्वास्थ्य का ही दूसरा नाम है।

अंत में, एक बुद्धिमान की शिक्षा: मैं कई वर्षो तक मानसिक विकार से पीति था। चिंतित, निराश, तनावपूर्ण, स्वार्थी। सब मुझे सलाह देते, अपने आप को बदलो। मैं उनपे कुता था। मैं बदलना चाहता था, पर नहीं कर पता। मैं अपमानित, फँसा हुआ, बेबस महसूस करता था। एक दिन एक मित्र ने कहा, नरमी से, मत बदलो। तुम जैसे हो, मुझे प्रिय हो। मैं शुक्रगुज़ार हूँ कि तुम मेरे मित्र हो। मैं शिथिल हो गया, मैं बदल गया! जब आप मुस्कुराती त्रिमूर्ति से मिलते हो - स्वीकृति, प्रेम, कृतज्ञता - आपके अंदर का तूफानी दरिया एक शांत निर्मल महासागर बन जाता है। आओ हमने जो बनाया उसे पूर्ववत करें, प्रिय मित्रों, और तनावपूर्ण जीवन को सुखी जीवन में बदलें।

लेखक *Fitness for Life* पुस्तक के लेखक हैं और *Fitness for Life* कार्यक्रम के शिक्षक हैं।

मंडल 3000 ने दर्ज की सदस्यता में 13% की वृद्धि

वी मुत्तुकुमारण

एक सशक्त विकास पथ पर अग्रसर होते हुए, रोटरी क्लब मंडल 3000 ने 40 रोट्रैक्ट्स क्लोन की स्थापना की और 60 और अधिक क्लबों की स्थापना का लक्ष्य निर्धारित किया है ताकि यह वर्ष 2016-17 के अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सके। DG एम मुरुगानंदम के नेतृत्व में, मंडल ने पहले ही इंटरैक्ट क्लब और रोटरी कम्युनिटी कॉर्प्स प्रत्येक 100 को शुरू करने का लक्ष्य प्राप्त कर लिया है। और चेन्नई में आयोजित किए गए बीट्स नामक दो दिवसीय मंडल सम्मलेन में संदेश जोरदार और स्पष्ट था: देना जारी रखें और ईश्वर आपकी निरंतर समृद्धि सुनिश्चित करेंगे।

परन्तु सम्मलेन का मुख्य आकर्ष रोटरी फाउंडेशन का 100वां वर्ष था और मंडल के सभी 117 क्लब किस प्रकार DG एम मुरुगानंदम के विभिन्न क्षेत्रों जैसे कि सदस्यता अभियान, सेवा परियोजनाओं, विन्स और साक्षरता और TRF योगदान के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कठिन प्रयास कर रहे हैं।

'सेवा सर्वोपरी है' ने 111-वर्षीय रोटरी को अन्य NGO को बहुत पीछे छोड़ने में सक्षम बनाया है, जबकि परोपकारी विभाग TRF ने दुनिया भर में बड़े दिल वाले लोगों से उदार दान प्राप्त कर 100 वर्षों से अथक सेवा करने का रिकॉर्ड बनाया है, RIDE सी भास्कर कहते है। कदाचित, यह अपने में एकमात्र ऐसा NGO है जो जाती, धर्म, भाषाई और राष्ट्रीयता के बाधाओं को पार करते हुए एक वैश्विक साझेदारी स्थापित किया है, इस लक्ष्य के साथ कि एक बेहतर संसार का निर्माण किया जा सके, उन्होंने अपनी को आगे बढ़ाते हुए कहा। उन्होंने रोटरियनों से आह्वान किया कि वे TRF में दिल खोलकर दान दें और DG एम मुरुगानंदम द्वारा किए गए वादाओं को पूरा करने में अपना योगदान करें। मंडल 3000 के समान टीम पाकर रोटरी गर्वित है जिसके सदस्य 'संसार के लिए एक उपहार के समान है'. क्योंकि वे संसार में बेहतर कार्य करने और मानव-सेवा की जीती-जागती मिशाल है, डॉ. जेनिस एच कुर्थ कहते है, जो रो इ अध्यक्ष जॉन जर्म के प्रतिनिधि और मंडल 5340, US के PDG है। अपने संबोधन भाषण में, उन्होंने यूटा, साल्ट लेक सिटी (2007) में आयोजित किए गए RI सम्मलेन को याद करते हुए कहा कि वे सम्मेलन के दौरान 325,000 लोगों वाले एक भारतीय गाँव की कहानी से अत्यंत प्रभावित हुई। वह गाँव पेयजल की गंभीर समस्या से जूझ रहा था परंतु रोटरियनों की मदद से वे इस समस्या का समाधान सफलतापूर्वक करने में सफल हुए। "TRF के एक मैचिंग अनुदान के माध्यम से, एक बाँध का निर्माण किया गया, जिसने हमेशा के लिए पानी की समस्या का समाधान कर दिया। यह संसार में लोककल्याणकारी कार्य करने का एक उदाहरण है," उन्होंने कहा।

विगत अनेक दशकों से, रोटरी ने जवाबदेही में विश्वसनीयता का निर्माण किया है, जिसके परिणाम

बाएं से: PDG एस राजेंद्रन, RIPR जेनिस एच कुर्थ, रोटेरियन पंचनाधन, DG एम मुरुगानंदम, पोस्टमाटर जनरल राधिका चक्रवर्ती, RRFC राजा सीनिवासं, मंडल 3000 Discon में स्मारक डाकटिकट, और प्रथम दिवस आवरण जारी करते हुए।

RIDE सी भास्कर और मालती, DG एम मुरुगानंदम और उनकी पत्नी सुमति (दाएं से अंत में) द्वारा सम्मानित किये जा रहे हैं।

स्वरूप TRF में निधियों का अबाध आगमन शुरू हो गया है "क्योंकि लोग हम पर और सेवारत मानवता की हमारे गहरे रिकॉर्ड पर विश्वास करते है।" यह उल्लेख करते हुए कि मंडलों के मात्र 71 सदस्यों ने एटलांटा में आयोजित होने 2017 TRF सम्मेलन में शामिल होने के लिए पंजीयन करवाया है, उन्होंने आशा व्यक्त की कि अधिक से अधिक सदस्य शताब्दी समारोह में भाग लेंगे।

DG एम मुरुगानंदम ने कहा कि उनके मंडल ने 650 से अधिक रोटरियनों नामांकित करते हुए नए सदस्यता के 10 प्रतिशत लक्ष्य को पार कर लिया है। "इस गत वर्ष की तुलना में 13 प्रतिशत की वृद्धि है। हमने तीन नए रोट्रैक्ट्स क्लबों की स्थापना की है जबकि सात और क्लबों की स्थापना प्रगति में है," उन्होंने आगे कहा।

जबकि वर्ष 2016-17 के लिए TRF में योगदान करने का लक्ष्य 1 मिलियन था, अभी तक हम 25 मिलियन एकत्र कर चुके है। विन्स और साक्षरता (हैप्पी स्कूल्स) के मामले में, उन्होंने सभी 117 क्लबों को एक RO संयंत्र और छात्राओं के लिए स्कूलों में एक भस्मक स्थापित करने का निर्देश दिया है।

गिनीज के माध्यम से सार्वजनिक छवि

उन्होंने आगे कहा कि 4 गिनीज रिकॉर्ड प्राप्त कर मंडल 3000 गौरवान्वित है, और सात और रिकॉर्ड जूरी द्वारा न्याय निर्णयन प्रक्रिया के अधीन है। "हम विश्व रिकाडर्स के माध्यम से अपनी सार्वजनिक छवि निर्माण के लिए संकल्पित है और इस दिशा में निरंतर प्रयास किया जा रहा है," मुरुगानंदम कहते हैं। पहले ही, मंडल छवि निर्माण कार्यक्रम के हिस्से के रूप में अपने सभी 11 प्रयासों के लिए एशिया और इंडिया बुक ऑफ़ रिकाडर्स प्राप्त कर चुका है।

3 बिलियन का लक्ष्य

डिस्कोन को संबोधित करते हुए, RRFC राजा सीनिवासन ने कहा कि मात्र सदस्यता प्राप्त कर रोटरियन बनना ही पर्याप्त नहीं है। सभी रोटरियनों को अपने संसाधनों से यथासंभव दान करना चाहिए या संसार को बेहतर स्थान बनाने का प्रयास करना चाहिए। भूतपूर्व राष्ट्रपति APJ अब्दुल कलाम की पुस्तक टारगेट 3 बिलियन को उद्धृत करते हुए, उन्होंने कहा कि इतने लोग गरीबी रेखा के नीचे जी रहे है, संसार की लगभग आधी आबादी जब इस पुस्तक को लिखा गया था। प्रतिदिन 5,000 से अधिक बच्चे मौत के मुख में समा रहे हैं और 240 करोड़ लोग इस संसार में प्रतिदिन रु70 से भी कम कमा रहे है। इसलिए, यह प्रत्येक रोटरियन की जिम्मेदारी है कि वह अपने सीमित संसाधनों से यथासंभव दान देना जारी रखें ताकि संसार में एक गुणात्मक परिवर्तन का सूत्रपात किया जा सके।

बीटूस के मौके पर, 970 रोटरियनों ने मंडले के 12वें गिनीज रिकॉर्ड को एक विशाल स्क्रॉल पर व्यापक हस्ताक्षर अभियान के माध्यम से पूरा करने का प्रयास किया। यह कार्यक्रम दो घंटे तक चला और इसका लक्ष्य पोलियो और निरक्षरता उन्मूलन के लिए जागृति उत्पन्न करना था। TRF शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में पोस्ट मेटर जनरल (चेन्नई सिटी क्षेत्र) राधिका चक्रवर्ती की उपस्थिति एक स्मारक डाक टिकट और प्रथम दिवस आवरण का पोस्ट जारी किया गया।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों का एक मिश्रण, मनोरंजन और प्रसिद्ध व्यक्तिओं के साथ वार्ता ने लगभग 2,000 से अधिक रोटरियनों और उनके परिजनों को आनन्दित किया जो मदुरै, त्रिची और इसके आस पास के क्षेत्र, मंडल 3000 से शामिल होने के लिए आए थे।■

स्ट्रॉबेरी की धरती में

जयश्री

महाबलेश्वर के साज़ रिसॉर्ट्स से वापस ले जाने के लिए आत्मा को चैन, मन को आनंद एवं स्वस्थ कायाकल्प है।

जब हम पुणे से साज़ रिसॉर्ट्स के लिए पश्चिमी घाट की सह्याद्री श्रृंखला से गुजरकर महाबलेश्वर जा रहे थे, मेरी 10 वर्षीय बेटी श्रीनिधि ने आश्चर्यपूर्वक कहा, ''माँ...यह कितना सुन्दर है।''

रिसॉर्ट्स तुरंत ही आपको उसके उत्साह में लपेट लेता है, आपके अंदर ऊर्जा का एक विस्फोट करते हुए। मेतगुताद गाँव की पाँच एकड़ भूमि पर फैली हुई, उसकी विशाल, आरामदेह कुटियाएं, जहाँ आप गर्म चाय की चुस्कियां लेते हुए माहौल में घुल सकते हैं, बरामदे में बैठकर पेड़ों एवं बंदरों से भरे हुए आंगन को देखते हुए। अन्य आवास सुविधाओं में लक्ज़री कमरें उपलब्ध हैं जो कि विशाल छज्जों में खुलते है जहाँ से पहाड़ियों का दृश्य देखा जा सकता है। प्रबंधक भूषण भंडारी कहते हैं, ''जब बारिश होती है, हमारे ग्राहकों के लिए दृश्य मनोहर होता है।''

खाना

जल्द ही दोपहर के भोजन का समय हो गया। भोजन में यहाँ केवल शाकाहारी भोजन ही उपलब्ध है और खाद्य एवं पेय प्रबंधक जेम्स द्वारा अनुशंसित, राजस्थानी और गुजराती थाली निपुणता से निर्मित है। कैफ़े पेटूनिया, जहाँ नाश्ता और रात्रि का भोजन परोसा जाता है, एकमात्र ऐसा स्थान है जहाँ वाई-फाई मिलता है। रिसॉर्ट्स का विशेष आहार को अनुशंसित करने के मेरे प्रश्न का जवाब देते हुए कार्यकारी रसोइये रमेश जाधव ने कहा, ''नाश्ता विभिन्न प्रकार के दक्षिण भारतीय, महाराष्ट्रीय और उत्तर भारतीय भोजन से सुसज्जित है। मैसूर डोसा और साबुदाना खिचड़ी लाजवाब है।'' और बेशक, स्ट्रॉबेरी खस्ता केक और स्ट्रॉबेरी मक्खन ब्रेड एक

जयश्री

असली दावत है। ''आप यहाँ जो कुछ भी लेते हैं वो विशिष्ट है; राज़ है जो सब्जियाँ हम इस्तेमाल करते हैं वो ताज़ी, स्थानीय उगी हुई होती है।''

सप्ताह के अंत में, मेहमानों को मनोरंजन करने के लिए कठपुतली का खेल, जादुई खेल, लाइव ऑर्केस्ट्रा और डीजे रात्रि का आयोजन किया जाता है। रिसॉर्ट्स में ठहरने वाले बच्चों को जादू का खेल निश्चित रूप से प्रभावित करता है। सभाओं, कार्यक्रमों और रोटरी कार्यक्रमों के लिए उपलब्ध बैंक्वेट हॉल में सरलता से 250 लोग समा सकते हैं।

शरीर और आत्मा का कायाकल्प

जबकि आंतरिक स्पा शरीर और आत्मा को प्रसन्न करने के लिए विभिन्न प्रकार के आयुर्वेदिक एवं औषधीय उपचार उपलब्ध करवाता है, पूल भी उतना ही लुभावना है। शीतल पानी में एक घंटे तक छपछपाने के बाद, हम शाम के नाश्ते के लिए कैफ़े पेटूनिया गए। बड़े उत्साह के साथ परोसे गए गरम पकोड़े और मसाला चाय कम अभिलषित नहीं थे।

अगली सुबह संतोषप्रद थी; किनारे पर पेड़ों की कतार वाले आँगन में, जहाँ वातावरण में पक्षियों की

साज़ रिसॉर्ट्स, महाबलेश्वर में।

पंचगंगा मंदिर के अंदर।

रमणीय चहचहाहट थी और बन्दर एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर झूल रहे थे, मैंने तेज चाल चली, रॉयल गार्डन में कुछ सामान्य योग किया और स्पा से सटे हुए जिम में कसरत की, और फिर ज़ोश के साथ दिन का सामना करने के लिए तैयार थी।

महाबलेश्वर चलो

भंडारी ने हमें महाबलेश्वर के आसपास घुमाने के लिए एक भ्रमण कार्यक्रम का बंदोबस्त किया। घुमावदार रास्तें, ठंडी हवाएं, पहाड़ियों एवं वादियों के असाधारण नज़ारे और भरपेट खाने के लिए बहुत सारी स्ट्रॉबेरियां - यह महाबलेश्वर है, और पंचगनी को साथ मिलाकर, यह एक वांछनीय छुट्टियों का स्थल बन जाता है। पुणे से लगभग 120 किलोमीटर और मुंबई से 285 किलोमीटर दूर स्थित, पठार कृष्णा नदी का स्रोत है जो कि महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश और कर्नाटक से होकर बहती है।

हमारा ड्राइवर मारुती ओम्ले हमें नदी के पौराणिक स्रोत जो कि महादेव मंदिर के गौमुख से निकली एक धारा है से अवगत करवाता है। वह कहता है, ''महाबलेश्वर का संस्कृत में अर्थ है वह जो सबसे शक्तिशाली है और वह है भगवान शिव जो कि यहाँ के प्रमुख देवता है। स्थानीय लोग दो सहायक नदियों वेणा एवं कोयना को शिवजी एवं ब्रह्माजी के रूप में पूजते हैं।'' माना जाता है कि पाँच नदियों - कृष्णा, वेणा, कोयना, गायत्री और ब्रह्मा - के संगम पर स्थित पंचगंगा मंदिर 2,500 वर्ष से भी अधिक पुराना है।

अन्य मोहक स्थलों में शामिल है मंकी पॉइंट, केट्स पॉइंट, इत्यादि जो कि वादियों के नीचे के दृश्य प्रस्तुत करवाते है। नीडल होल पॉइंट को ऐसा इसलिए कहा जाता है क्योंकि इसकी चट्टान की बनावट में एक प्राकृतिक छेद मौजूद है। विल्सन पॉइंट, का नाम उस समय के बॉम्बे के गवर्नर सर लेस्ली विल्सन के नाम पर रखा गया था, इस पर्यटन स्थल का सर्वोच्च स्थान है और ओम्ले ने उसकी अनुशंसा उसके डूबते सूरज के शानदार नज़ारे के लिए की। वेणा झील, जो कि लिंगमाला और धोबी झरनों के पानी से निर्मित है, में नौकायन भी एक बढ़िया विकल्प है।

छत्रपति शिवाजी द्वारा 1656 में बनवाया गया प्रतापगढ़ किला, रिसॉर्ट्स से लगभग 20 किलोमीटर दूर, एक भव्य स्मारक है। परन्तु मुकुट में नगीना था सतारा का कास पठार या फूलों का पठार, एक प्राकृतिक दृश्यों से परिपूर्ण 40 किलोमीटर का सफर। एक जैव-विविधता संवेदनशील स्थान, पूरे क्षेत्र में जंगली फूल खिले हुए थे। जीवंत रंगों - बैंगनी, पीले, गुलाबी और सफ़ेद फूलों की रजाई, जिनपर बैठकर तितलियाँ उनका रस चूसती हैं, एक निहारने योग्य दृश्य था और इस दृश्य ने विलियम वर्ड्सवर्थ को डेफोडिल्स की उत्तर-कृति लिखने की प्रेरणा दी होगी! 850 से भी अधिक प्रकार के फूलों की प्रजातियाँ यहाँ पायी जा सकती है। पठार एक विश्व धरोहर स्थल है और यहाँ एक दिन में 3,000 से अधिक पर्यटकों का आना प्रतिबंधित है। इसका एक बा हिस्सा संरक्षित वन है।

मेप्रो गार्डन स्ट्रॉबेरी प्रेमियों को हर्षित कर देने वाला स्थान है और जैम फैक्ट्री का एक दौरा जैम बनाना सीखने की एक कक्षा थी जो कि स्ट्रॉबेरी जैम के लिए नयी चाह को प्रज्वलित करती है।

हम मधुर यादों के साथ एवं साज़ होटल्स के निदेशक पीडीजी राहुल तिम्बाड़िया द्वारा की गयी जोशपूर्ण विदाई के साथ विदा लेते है। ''मल्शेज घाट में स्थित साज बाय दी लेक में कृपया पधारिये और आप उसे पसंद करेंगे,'' वह निमंत्रण पत्र देते हुए कहते हैं और हम वहाँ आने का वादा करते हैं।■

ऐतिहासिक स्कूल को बचाने में कामयाब रहा रोटरी

किरण ज़ेहरा

जब 1921 में खादी स्वदेशी आंदोलन का प्रतीक बन गई थी उस दौरान मुकुंद श्रीकृष्ण पंधे ने महाराष्ट्र के खामगांव में तिलक राष्ट्रीय विद्यायल की स्थापना की थी, उस परिसर में आज भी इतिहास और देशभक्ति ज़िंदा दिखाई देते हैं। तभी से इस संस्था के विद्यार्थी खादी के कपड़ों से बनी वर्दी (धोती, कुर्ता, टोपी) ही पहनते हैं। विद्यालय में कई स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा आभार और प्रशंसा के हस्तलिखित पत्र अभी भी लकड़ी और कांच के छोटे बक्सों में सुरक्षित रखे गए हैं। महात्मां गांधी, सुभाष चंद्र बोस और अनगिनत स्वतंत्रता सेनानियों को शरण देने वाली यह संस्थान जीर्ण-शीर्णता के कारण कबका बंद हो गई होती यदि रोटरी क्लब खामगांव मंडल 3030 ने देश के पहले मूर्तिकला संस्थान की उपेक्षा न की होती थी।

विद्यालय में वंचित पृष्ठभूमि से आए युवा कलाकारों और विद्यार्थियों को प्राथमिक और माध्यमिक स्तर की शिक्षा के अलावा मूर्तिकला और चित्रकारी का प्रशिक्षण उपलब्ध कराया जाता है। अपने पाठ्यक्रम के अंत तक ये छात्र या तो प्रसिद्ध कलाकारों के सहायक बन जाते हैं या फिर मूल चित्र और मूर्तियां बनाने के लिए स्वयं के स्टूडियो की स्थापना कर लेते हैं। उनकी अद्भुत मूर्तियां और अन्य कला के लूटे जाने या तोड़फोड़ के बावजूद भी विद्यार्थियों की सोच सकारात्मक है। विद्यालय के प्राचार्य उपरवत कहते हैं कि ''वे विद्यार्थि प्रतिदिन आते थे, उनके गुरु से पाठ सीखते और अपने शिल्प पर फिर से कार्य करते थे।

रोटेरियन उमेश अग्रवाल और सुरेश पारेख, जो टी वी के न्यासी भी हैं, अन्य रोटेरियन के साथ मिलकर विद्यालय में एक जल संचयन परियोजना के लिए कार्य कर रहे थे विद्यालय की हालत देखकर दुःखी थे। अध्यक्ष सतीश धनसुख दास ने यहां जोड़ते हुए कहा, वे हार नहीं मानेंगे। ''प्रबंधन और छात्रों के नज़रिए ने इस ऐतिहासिक विद्यालय के लिए कुछ बड़ा और बेहतर करने के लिए हमारे संकल्प को और मजबूत किया है।''

विद्यालय में लड़कों और लड़कियों के लिए अलग से शौचालय ब्लॉक, एक कम्प्यूटर लैब का निर्माण व परिसर व छात्रावास को नए सिरे से सुसज्जित करने के लिए रोटरी क्लब साओ पाउलो बुतांता मंडल 4610 (ब्राजील), मंडल 3030 और टी आर एफ की साझेदारी में एक वैश्विक अनुदान का आयोजन किया गया जिसने 33,000 डॉलर एकत्रित किए। WinS प्रोग्राम के तहत विद्यार्थियों के बीच व्यवहार में परिवर्तन लाने के लिए एक वॉश स्टेशन स्थापित किया गया था। उमेश अग्रवाल कहते हैं कि ''यह सिर्फ सीमेंट और ईंटें डालकर कमोड (शौचालय) लगाने के बारे में नहीं हैं बल्कि यह उन युवा विद्यार्थियों विशेषकर लड़कियों के जीवन को बदलने के बारे में है जिनके माता-पिता जवान होने के बाद उन्हें स्कूल भेजना बंद कर देते हैं।

१४ वर्षीय चोरस कहता है कि अब छात्रावास और आरामदायक बन गया है। ''अब फटी हुई चटाई पर सोना नहीं पड़ेगा।'' 8 वर्षीय बालिका आनंदी कहती है कि मां को हैंड वॉश करना नहीं आता था मैंने सिखाया। उपरवत

कहते हैं कि ''ये एक बड़ी राहत है। हमारे विद्यार्थियों को स्वच्छ और स्वस्थ सीखने का माहौल होगा और अब उनके रचनात्मक कार्य सही सलामत होंगे।'' रोटरी क्लब खामगांव अब विद्यार्थियों के साथ उन्हें बेहतर अवसर प्रदान करने के लिए कार्य कर रहा है। वह कहते हैं कि ''विद्यालय में विद्यार्थियों की संख्या करीब 600 है और हमें उम्मीद है कि हम रोटरी की मदद से हमारी ताकत बढ़ाने में सक्षम हो जाएंगे।''

एल गुणशेखर द्वारा रूपांकन

Rotary
South Asia Literacy Summit
3-5, MARCH 2017 • CHENNAI
Galaxy of speakers for
Rotary South Asia Literacy Summit
At Chennai on 3rd - 5th March 2017
Prakash Javadekar
Minister of Human Resource Development
Govt. of India
John Germ
President
Rotary International
Kalyan Banerjee
Trustee Chair
The Rotary Foundation
Shigeru Aoyagi
Director and
UNESCO Representative to India
Lord Raj Loomba
Member, House of Lords &
Founder, The Loomba Foundation
Raja Saboo
Past President
Rotary International
K R Ravindran
Immediate Past President
Rotary International
Nand Kumar
Hon'ble Principal Secretary of Maharashtra
School Education & Sport Department
C Raj Kumar
Vice Chancellor
O P Jindal Global University
Sushil Gupta
Trustee
The Rotary Foundation
Alan Gemmell
Director
British Council India
Kapila Gupta
Vice President
International Inner Wheel
Dr. Anjani Prakash
Founder & Chairperson
Learning Links Foundation
Racquel Shroff
CEO
Global Education
Gayathri Vasudevan
CEO
LabourNet Services
"To meet these Speakers & many more...
Register today to be there"
Dr. Manoj Desai
Convenor
Shekhar Mehta
Co-Convenor
J B Kamdar
Chairman
To Register visit www.rotaryteach.org/chennaisummit

LITERACY HERO AWARDS 2017

It's time to honour the

Literacy Heroes

At the Rotary South Asia Literacy Summit on 3rd March 2017

An Eminent Panel of Jury will select the Awardees

Sri M. N. Venkatachaliah
Ex-Chief Justice of India
Chair of the Jury

Sri Manish Bhandari
Hon'ble Justice
Rajasthan High Court

Prof Shantha Sinha
Magsaysay Award Winner,
Ex-Chairperson of National Commission
for Protection of Child Rights

Sri Sudarshan Agarwal
Former Governor of
Uttarakhand and Sikkim

C. Raj Kumar
Vice Chancellor
O P Jindal Global University

Mrs. Sandra R. Shroff
Chairman
Gnyan Dham School

भारतीय रोटरी सदस्यों के लिए जेट एयरवेज़ की पेशकश

टीम रोटरी न्यूज़

समझौते पर हस्ताक्षर के बाद जेट एयरवेज़ के क्षेत्रीय प्रबंधक येज़दी मार्कर (बाएं) और आरजीआर एम्बेसडर विनय कुलकर्णी।

रोटरी वैश्विक रिवॉर्ड मोबाइल एप में अब जेट एयरवेज़ का छूट ऑफर भी शामिल है। आरजीआर राजदूत एवं एटलांटा प्रमोशन समन्वयक विनय कुलकर्णी कहते है, भारतीय रोटरी सदस्य और उनका परिवार रोटरी ग्लोबल रिवार्ड्स (आरजीआर) कार्यक्रम के अंतर्गत जेट एयरवेज की सभी उड़ानों - राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय, जिनमें एयर फ्रांस एवं केएलएम द्वारा संचालित कोडशेयर उड़ानों भी शामिल है - के आधारभूत किराये में 10 प्रतिशत तक की छूट प्राप्त कर सकता है।

यह ऑफर केवल *jetairways.com* और आरजीआर की मोबाइल एप पर उपलब्ध है, और एक तरफ़ा एवं वापसी यात्रा पर लागू है। प्रोमो कोड है ROTARYAPP16.

टिकटों की खरीदी 1 नवम्बर 2016 से 31 अक्टूबर 2017 की अवधि के मध्य में ही होना चाहिए और यात्रा की शुरुआत एवं समापन 31 अक्टूबर 2017 को या उससे पूर्व हो जाना चाहिए। इसमें मल्टीसिटी विकल्प द्वारा की गयी बुकिंग्स शामिल नहीं है। अधिक जानकारी के लिए, कृपया इस लिंक पर जायें :

For more details go to: http://www.jetairways.com/EN/IN/PC/Rotary.aspx?PROMO=ROTARYAPP16

मंडल गति

रोटरी क्लब सोनपत मिटटाउन, मंडल 3012

क्लब द्वारा ग्लोबल हैंडवॉश डे के अवसर पर गोद लिए गए छह स्कूलों में WASH अभियान का आयोजन किया गया और वहां हैंडवॉश स्टेशन भी लगाए गए। रोटेरियनों ने इस मौके पर विद्यार्थियों को हैंडवॉश स्टेशन के उपयोग के बारे में सिखाते हुए प्रत्येक स्कूल में एक सी डी भी प्रदान की। इस सी डी में मिड-डे मील से पहले और शौचालय के इस्तेमाल के बाद सफाई पर जोर देने के लिए एक गीत भी शामिल है।

रोटरी क्लब राजगढ़, मंडल 3040

क्लब के रोटेरियनों ने राजगढ़ के शामपुरा गांव में एक आंगनवाड़ी में पांच साल की उम्र तक के बच्चों को पौषण किट और सर्दी से बचाव के लिए ऊनी कैप वितरित किए। इसके अतिरिक्त उन्होंने गांव वालों में स्वच्छता अभ्यास को लेकर जागरूकता भी फैलाई।

रोटरी क्लब अहमदाबाद मेट्रो, मंडल 3051

क्लब की ओर से सितम्बर माह के अंतिम सप्ताह में थैलेसीमिया जागरूकता सप्ताह का आयोजन किया गया। इस मौके पर कॉलेजों में सेमीनार, प्लेकार्ड्स और प्रदर्शनियां लगाई गई। रोग के बारे में कार्यस्थलों और व्यस्त जंक्शनों पर जागरूकता फैलाई गई। रोटेरियनों ने जनता को शिक्षित व जागरूक करने के लिए सोशल मीडिया का उपयोग किया।

रोटरी क्लब जयपुर बापूनगर, मंडल 3052

क्लब ने WinS और कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व (सी एस आर) को लेकर मंडल सेमीनार की मेज़बानी की जिसमें 25 क्लबों के 260 रोटेरियनों ने हिस्सा लिया। WinS के ग्लोबल चेयर सुशील गुप्ता और कुछ पूर्व गवर्नर भी इस कार्यक्रम में उपस्थित थे। संयुक्त राष्ट्र अधिकारी रुशभ हेमानी और राज्य प्रतिनिधि गिरीश भारद्वाज ने कार्यक्रम में लगातार सहयोग प्रदान किया।

विधियाँ

रोटरी क्लब ग्वालियर वीरांगना, मंडल 3053

क्लब ने ग्वालियर में एक सरकारी बालिका स्कूल में छात्राओं और कर्मचारियों को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने के लिए आर ओ पानी के संयंत्र की इकाई लगाई।

रोटरी क्लब कडोदरा, मंडल 3060

क्लब के सदस्यों ने 1,100 किलो अनाज और 1,000 वस्त्र और चप्पलों को एकत्रित कर गुजरात के डांग जिले के वाघई गांव में वंचितों को वितरित किया।

रोटरी क्लब गोराया मिडटाउन, मंडल 3070

क्लब ने दिवाली समारोह के अंतर्गत पिंगलवाड़ा और अनंतालया फिल्लौर गांव में बच्चों को गर्म कपड़े और मिठाईयां वितरित की। इस योजना में कुल रु11,000 का खर्चा हुआ।

रोटरी क्लब पाओंटा साहिब, मंडल 3080

प्रयास (सद्भावना पहल) के जरिए क्लब एक स्कूल चला रहा है जिसकी शुरुआत विश्व साक्षरता दिवस के दिन की गई थी। स्कूल में करीबन 30 विद्यार्थी नामांकित हैं। क्लब की ओर से उन बच्चों को स्कूल बैग और गणवेश दी गई जो कक्षा में लगातार उपस्थित रहते हैं।

रोटरी क्लब शहर शाहजहांपुर, मंडल 3110

क्लब ने बाल सुधार गृह के बाल सदस्यों के साथ बाल दिवस मनाया। गृह में इस दौरान दंत जांच शिविर और ड्रॉइंग प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया था।

मंडल गति

रोटरी क्लब वाराणसी सेंट्रल, मंडल 3120

रोई निदेशक मनोज देसाई और डीजी प्रमोद कुमार ने वाराणसी में मां शारदा वनवासी कन्या आश्रम में नवनिर्मित शौचालय/स्नानागार और हैंडवॉस स्टेशन का उद्घाटन किया। स्वच्छ सुविधाओं के कारण बालिका छात्रावास में छात्राओं की संख्या 27 से बढ़कर अब 50 पहुंच गई है।

रोटरी क्लब पुणे कॉस्मोपॉलिटन, मंडल 3131

क्लब की ओर से आयोजित RYLA कार्यक्रम में विभिन्न कॉलेजों से करीबन 200 विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। युवाओं को इस मौके पर नेतृत्व कौशल, तनाव प्रबंधन, व्यक्तित्व विकास आदि विषयों को शिक्षा दी गई। इस मौके पर उन्होंने कॉलेजों में रोट्रेक्ट क्लब शुरू करने की मांग भी की।

रोटरी क्लब जालना रेनबो, मंडल 3132

क्लब ने अपने सामाजिक पहुंच योजना के तहत जालना जिले के वागलखेड़ा गांव में आग लगने के दौरान आपात स्थिति में उसे बुझाने के तरीकों के बारे में बताया।

रोटरी क्लब नवी मुंबई सनराइज, मंडल 3142

दामोला गांव में दूसरी अभयशिका क्लास (स्कूली घंटों के बाद गरीब बच्चों को पढ़ाने के लिए) की शुरुआत की गई जिसे सेवा सहयोग ट्रस्ट की मदद से संचालित किया जाएगा। इस वर्ष क्लब ने नवी मुंबई में नेरुल के पास दो और अभयशिका क्लास शुरू करने की योजना बनाई है।

रोटरी क्लब कोरामंगला, मंडल, 3190

टीआरएफ के शताब्दी समारोह के अंतर्गत क्लब अध्यक्ष डॉ. एम वी रविकुमार ने किताब *डु गुड इन द वर्ल्ड* को प्रकाशित किया। किताब रोटरी क्लब फेरने-वोटायर, फ्रांस के पूर्व अध्यक्ष और चार्टर सदस्य डॉ. गेब्रियल मिंडर के विभिन्न मैचिंग अनुदान और वैश्विक अनुदान योजनाओं का संकलन है। 8 अगस्त को डॉ मिंडर के ८०वें जन्मदिन के अवसर पर क्लब की साप्ताहिका बैठक में स्मारिका को जारी किया गया।

विधियाँ

रोटरी क्लब कोयम्बत्तूर डी एलीट, मंडल 3201

मंडल गवर्नर प्रकाश चंद और क्लब अध्यक्ष नरेन्द्र रांका के नेतृत्व में अन्य रोटेरियनों ने मिलकर स्वच्छ भारत अभियान के अंतर्गत कोयम्बत्तूर रेलवे स्टेशन पर स्वच्छता जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया। इस दौरान स्टेशन की सफाई भी की गई।

रोटरी क्लब नीलगिरि कुन्नूर, मंडल 3202

क्लब ने अपने 75वें चार्टर डे कार्यक्रम को एक स्कूल में वाद-विवाद प्रतियोगिता के आयोजन के साथ मनाया। इस मौके पर विजेताओं को पुरस्कार और प्रमाण-पत्र वितरित किए गए।

रोटरी क्लब चेन्नई कोडम्बाक्कम, मंडल 3230

पीडीजी ए पी कन्ना ने क्लब अध्यक्ष के वी आनंद के साथ आरआईएलएम को लेकर जागरूकता फैलाने के लिए साइकिल रैली को चेन्नई में झंडी दिखाकर रवाना किया। करीबन 160 साइकल सवारों ने रैली में हिस्सा लिया। साक्षरता जागरूकता पैंपलेट्स वितरित किए गए और सभी साइकिलिस्टों को टी-शर्ट, पदक और प्रमाण-पत्र वितरित किए गए।

रोटरी क्लब श्री जगन्नाथ धाम, मंडल 3262

क्लब ने पुरी में आल ओडिसा ओपन स्कूल शतरंज प्रतियोगिता का आयोजन किया। क्लब अध्यक्ष प्रवुदत्ता सुबुधि ने कहा कि बच्चों के बीच खेल को लोकप्रिय बनाने के लिए ये आयोजन करवाया गया है। इस मौके पर रु 25,000 के नकद पुरस्कार वितरित किए गए।

रोटरी क्लब कलकत्ता, मिड साउथ, मंडल 3291

क्लब ने 24 परगना जिले के अगरपारा गांव में उसूमपुर त्रिभाषा एकेडमी के गरीब बच्चों को नए कपड़े वितरित किए। योजना में करीब रु10,000 का खर्चा हुआ।

वी मुत्तुकुमारण द्वारा संकलित, एल गुणशेखरण द्वारा रूपांकन

बंगाल के गांवों को मिला स्वच्छता का नया रूप

वी मुत्तुकुमारण

गत महीने मेरी शादी हुई और मैं बंशिबेरा गाँव में अपने ससुराल चली आई। यह स्नानागार और शौचालय की सुविधायुक्त रोटरी द्वारा मेरे विवाह में दिया गया सर्वश्रेष्ठ उपहार है। यह मेरी कल्पना से परे था,'' मालती बौरी (19) अपनी खुशी को जाहिर करते हुए कहती है, जबकि सुन्दिआरा गाँव की स्वपना हंसदा (55) कहती है कि, ''मैंने कभी अपने सपने में भी शौचालय का उपयोग करने के बारे में नहीं सोचा था। अपने घर में एक शौचालय के निर्माण से मैं बहुत खुश हूँ।'' सुन्दिआरा ग्राम का एक स्कूल जाने वाला छात्र सुजोय कहता है, ''स्कूल में हमें शुद्ध पानी पीने को मिलता है, जिससे हमारा स्वास्थ्य बेहतर हुआ है।''

पश्चिम बंगाल में सुन्दिआरा-राजकुसुम और बंशिबेरा - इन दोनों वर्णनातीत गांवों में 10 इकाइयों वाले छह शौचालय ब्लॉकों की स्थापना के साथ, जिन्हें तीन नलकूपों और तीन बोरवेल द्वारा पानी उपलब्ध कराया गया है, अब पशुचारण जीवन में परिवर्तन की बहार देखने को मिल रही है, और इसके कारण इन गांवों में स्वच्छता और साफ-सफाई कायम हो सकी है।

इन गाँवों का सामाजिक परिवर्तन रोटरी क्लब दुर्गापुर सेंट्रल, मंडल 3240 के हस्तक्षेप से ही संभव हो सका है, जिसने रोटरी क्लब वालसेल सेडलर्स मंडल 1210, UK, और TRF के साथ मिलकर, स्वच्छता और पेयजल से संबंधित परियोजना को शुरू किया, ताकि सभी ग्रामवासियों को जीने के लिए एक स्वस्थ वातावरण उपलब्ध कराया जा सके। महिलाओं और पुरूषों के लिए पृथक शौचालय के अतिरिक्त, ट्यूबवेल और बोरवेल से प्रतिदिन स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराया जाता है जबकि मूत्रालय के ब्लॉक से कार्बनिक खादों का उपयोग कृषि कार्य में किया जाता है।

परियोजना समन्वयक इंद्रनील मुखर्जी कहती हैं कि परियोजना की लागत रुपए 26.4 लाख आई। ''हमें खुशी है कि ये मौलिक सुविधाएँ ग्रामवासियों के स्वास्थ्य को उन्नत बनाने में योगदान करेंगी, और सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह है कि इन सुविधाओं के कारण बच्चें अब बार-बार बीमार हुए बिना नियमित रूप से स्कूल जाने में सक्षम होंगे।''

परियोजना का एक सिंहावलोकन देते हुए, पीडीजी स्वप्न के चौधरी, जिनके डीजी रहने के दौरान एक वर्ष पूर्व इस परियोजना की शुरुआत हुई थी, कहते हैं, ''यह हमारे मंडल के रजत जयंती वर्ष का स्मरण करता है। हमने गांवों में जरूरत का आकलन किया था और इस परियोजना के प्रत्येक चरण में समुदाय के बुजुर्गों को शामिल किया।''

सुंदिआरा गांव में नलकूप का उपयोग करती महिलाएं

बंशिबेरा गांव में शौचालय ब्लॉक के सामने लाभार्थियों के साथ रोटेरियन।

समुदायिक आउटरीच प्रशिक्षण

ग्रामवासियों द्वारा नामांकित एक चार-सदस्यीय टीम अपने-अपने गाँवों में शौचालय ब्लॉक के प्रशिक्षण और रखरखाव का कार्य संभालती है। गाँव के लाभार्थियों को क्लब द्वारा आयोजित विभिन्न प्रकार के कार्यशालाओं के माध्यम से 'शौचालय-प्रशिक्षित' किया गया था। एक स्वयं-सहायता समूह का गठन किया जा रहा है ताकि ग्रामवासियों के मध्य शौचालय ब्लॉक तथा ट्यूबवेल/ बोरवेल का समुचित उपयोग और रखरखाव सुनिश्चित किया जा सके। ''कुल मिलाकर, परियोजना से दोनों गाँवों में 1,625 लोग लाभांवित हुए हैं,'' मुखर्जी अपनी बात आगे बढ़ाते हुए कहती है।

दीर्घकालीन लक्ष्य

क्लब ग्रामवासियों को उनके सामाजिक तथा आर्थिक प्रगति के लिए टिकाऊ सुविधाओं के विकास, पूँजी-निवेश और उसके रखरखाव से संबंधित कौशलों से लैस करना चाहती है। शौचालयों की देखभाल के लिए ग्रामवासी अपने मासिक बचत का एक भाग आवंटित करने की योजना बना रहे हैं।■

Bengal villages get a sanitation facelift - Hindi.indd 78 06-02-2017 15:32:20

भूटान में नवीन शिक्षा

किरण ज़ेहरा

उन लोगों ने एक विशेष कोच से न्यू कोच बेहर के बाद एक बस की सवारी करते हुए पारो, भूटान के लिए पूर्ण अजनबियों के रूप में अपनी यात्रा शुरू की। लेकिन RC मुलुंड, मंडल 3141 द्वारा आयोजित RYLA समारोह के अंत में, 50 रोट्रक्टर्स ने एक अमित्रीपूर्ण संबंध स्थापित किया जो जीवनभर चलने वाला है। DG गोपाल राय महिंद्रा (मंडल 3141) और DG जया राज्य लक्ष्मी शाह (मंडल 3292) के गवर्नरशिप के अंतर्गत, इस भूटान RYLA का उद्देश्य नेतृत्व कौशल को बढाने और "रोट्रक्टर्स को विश्वास करने का अवसर देना था कि विश्व को बदलने पीढ़ियों, भौगोलिक सीमाओं और विश्वासों से परे जाकर काम कर सकते हैं" रोटरी क्लब मुलुंड के रोटेरियन दीपकलाल लाला कहते हैं।

रोटरी क्लब मुलुंड और मुंबई परलेश्वर (मंडल 3141) के साथ उनके रोटेरेक्ट क्लब और रोटरी क्लब थिम्पू (मंडल 3292) ने एक साथ मिलकर यह सुनिश्चित किया कि पांच दिवसीय RYLA शिविर एक सुखद और समृद्ध अनुभव साबित हो। पैकेज में चेलेला दर्रा की यात्रा शामिल थी, - जो भूटान की सबसे ऊंची वाहन योग्य सड़क है। इसके अलावे पैकेज में तीरंदाजी और डार्ट्स प्रशिक्षण, और एक फोटो शूट का भी समावेश किया गया था जहां सभी प्रतिभागियों को भूटान के पारंपरिक पोशाक, घो और केरा, पहन कर तैयार होना था। उन्हें अपनी प्रतिभा दिखाने और अपने कौशल का प्रदर्शन करने का भी अवसर दिया गया था।

प्रिया अग्रवाल, जिसने मिस RYLA का खिताब जीता था, उद्घाटन समारोह में आयोजित औपचारिक नृत्य से वशीभूत हो गई। "रात में अकड़ाने वाली ठंड थी और वे नंगे पांव नृत्य करते रहें और नर्तकियों के चेहरे पर परेशानी की कोई रेखा नहीं थी," उसने कहा। जबकि प्रतिभागी यह जानकर चकित रह गया था कि " भूटान में संपत्ति की वारिस महिलाएं होती हैं और पुरुष अपनी पत्नी के गांव चला जाता हैं," दूसरा प्रतिभागी यह जानकर आश्चर्यचकित था कि भूटान के प्रत्येक गांव में तीरंदाजी का एक मैदान मौजूद है।

भूटान में तक्त्संग ल्हखंग (टाइगर का नेस्ट मोनेस्ट्री) पर पैदल पहुँच कर और पारो घाटी में 900 मीटर नीचे देखकर, इन छात्रों को काफी रोमांच का अनुभव हो रहा था। "ऊपर की ओर चढ़ना मुश्किल भरा था, लेकिन हमने लगातार एक दूसरे को प्रेरित किया और अंतिम भागीदार के चढ़ने तक इंतजार करते रहे थे ताकि हम सभी समूहिक एक तस्वीर ले सकें। यहाँ तक कि फोटोग्राफर ने भी सहयोग किया," प्रिया कहती हैं। ऊनी टोपी के साथ, मफलर और गोफन बैग जिसे शिविर में वितरित किया गया था, के साथ "हम अपने स्मृतियों और सबक के साथ ले जा रहे हैं जिसे हमने बेहतरी के लिए बदल दिया है," वह कहती हैं।

मंदसौर में रोटरी की आहार सेवा

किरण ज़ेहरा

रोटरी क्लब मंदसौर, मंडल 3040, की पहल *रोटरी आहार केंद्र* को याद करते हुए कि 1992 में क्षेत्र में भड़के सांप्रदायिक दंगों के परिणामस्वरूप लगे कर्फ्यू में लोगों को मुफ्त में खाने के पैकेट वितरित किये थे, रोटरी सदस्य महेंद्र ठाकर कहते हैं, ''हमारे क्लब द्वारा की गयी सेवाओं में से यह सर्वश्रेष्ठ सेवा है।'' आहार केंद्र की हर बात वैसी ही है केवल एक खाने के पैकेट की कीमत रु 2 से बढ़कर रु 5 हो गयी है, जो 4 रोटी, दो तरह की दालों एवं एक सब्जी के लिए मामूली कीमत है।

ठाकर कहते हैं, मंदसौर के सरकारी अस्पताल के भीतर स्थित इस केंद्र की स्थापना, क्लब द्वारा मरीज़ों के परिजनों को भोजन करवाने के उद्देश्य से की गयी थी जो ज्यादातर भूखे ही सो जाते थे। इस मुद्दे को सर्वप्रथम डॉक्टर सरदारमल ठाकर, क्लब के एक सदस्य, द्वारा उठाया गया था जिन्हें इस बात का अहसास हुआ था कि परिजनों के लिए अस्पताल से भोजन खरीदने का कोई प्रावधान नहीं था। चूंकि यह अकेला अस्पताल था जो 21 सुदूरवर्ती गाँवों को सेवा प्रदान करता था इसलिए घर वापस जाकर खाने का या तीन से चार दिन का खाना एक साथ लाने का भी कोई रास्ता नहीं था। अनुदान इकट्ठा किया गया और 1991 में केंद्र की स्थापना की गयी।

रेखा और मधु, जो आहार केंद्र में खाना बनाती है उनकी सुबह व्यस्त होती है। धोना, काटना और गलाना उतना कठिन कार्य नहीं लगता है जितना 300 रोटियों के लिए हर दिन आटा गूंथने का है। मधु कहती हैं, रोटी नरम और गरम हो तो ही मज़ा आता है। क्लब इन दो औरतों के कल्याण का भी ध्यान रखता है। रेखा कहती है, दो हज़ार मिलते है और तीन वक्त की रोटी जो ज़रूरत से अधिक है।

नवम्बर 2016 में, क्लब ने लगभग छह लाख पैकेटों का वितरण किया है और इसकी सफलता के पश्चात् मंडल में अन्य क्लबों ने उनके स्वयं के आहार केन्द्रों को शुरू करने का निश्चय किया है।

नवम्बर 2016 में, क्लब की 25वीं वर्षगाँठ के दौरान, इस बात की घोषणा की गयी की आहार केंद्र ने लगभग छह लाख पैकेटों का वितरण किया है और इसकी सफलता के पश्चात्, मंडल 3040 के सागर, रतलाम, खरगौन और नीमच ने उनके स्वयं के आहार केन्द्रों को शुरू करने का निश्चय किया है। महेंद्र ठाकर कहते हैं, यह हमारे लिए एक विलक्षण उपलब्धि है। दुनिया को भूख, असाक्षरता एवं हिंसा को ज से ख़त्म करने के लिए स्थायी समाधान चाहिए और रोटरी सर्वश्रेष्ठ समाधान ढूंढ रही है।■

क्लब अध्यक्ष कार्यपुस्तक की तमिल प्रतिलिपि जारी

टीम रोटरी न्यूज़

रोटरी सदस्यता और TRF में योगदान दोनों ही मोर्चे पर भारत में अतुलनीय सफलता प्राप्त कर रहा है - और पिछले साल भी यह सदस्यता में पहले स्थान और TRF में योगदान के मामले में संयुक्त राज्य अमेरिका के बाद और जापान को किनारे करते हुए दूसरे स्थान पर खड़ा था, - इसके बावजूद कि भाषा की बाधा क्लब के प्रभावी कामकाज में एक खड़ा अवरोध है।

विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में, जब अंग्रेजी भाषा की क्षमता सीमित है, अनेक क्लब अध्यक्षों को 'क्लब के अध्यक्ष के कार्य पुस्तक' को समझने में कठिनाई का सामना करना पड़ता है, जिसे यूवान्सटन में RI मुख्यालय द्वारा अंग्रेजी में उपलब्ध कराया जाता है।

भारतीय के ग्रामीण भागों और छोटे शहरों से आने वाले ऐसे अनेकों क्लब अध्यक्षों की कठिनाइयों को समझते हुए, RIDE सी भास्कर ने कई भारतीय भाषाओं में क्लब के अध्यक्ष की कार्य पुस्तिका का अनुवाद करने का एक अभिनव विचार व्यक्त किया है।

अध्यक्ष की कार्य पुस्तिका का तमिल भाषा में अनुवाद मंडल 3230 के PDG जी ओलीवननं द्वारा किया गया है, जिससे लगभग 5 प्रक्षेत्रों के 600 से भी अधिक क्लब के तमिल भाषी अध्यक्षों के लाभान्वित होने की संभावना है, और जिसका विमोचन हाल ही में PRID पी टी प्रभाकर ने चेन्नई में किया। उन्होंने क्लब के अध्यक्ष के मार्गदर्शिका की पहली प्रतिलिपि मंडल 3230 के DG नटराजन नागोजी को प्रदान की। इस अवसर पर ओलीवननं भी उपस्थित थे।

बाएं से : DG नटराजन नागोजी, PRID पी टी प्रभाकर और PDG ओलीवननं।

RIDE भास्कर ने कहा, ''अध्यक्ष और सचिव की कार्य-पुस्तिका का विभिन्न भारतीय भाषाओं में अनुवाद कार्य प्रगति पर है, और उन पुस्तकों का मुद्रण और प्रकाशन जल्द ही किया जाएगा ताकि अंग्रेजी भाषा नहीं जानने वाले अध्यक्ष भी सफलतापूर्वक अपनी बैठकों का आयोजन कर सके।''

यदि आप एटीएल के लिए उड़ान भर रहे हैं...

यदि आप 10 से 14 जून तक वर्ष 2017 रोटरी अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के लिए उड़ान भर रहे हैं तो आप निश्चितरूप रूप से विश्व के सबसे व्यस्त यात्री हवाईअड्डे हर्ट्सफिल्ड-जेक्सन अटलांटा अंतर्राष्ट्रीय हवाईअड्डे पर आओगे। जैसे यहां के स्थानीय लोग कभी मज़ाक करते हुए कहते हैं चाहे आप स्वर्ग में जाओ या नरक में, आपको पहले हर्ट्सफिल्ड से होकर गुजरना पड़ेगा।

हर्ट्सफिल्ड डेल्टा हवाई कंपनियों का प्राथमिक हब है लेकिन कई अन्य हवाई कंपनियां जिसमें यूनाइटेड, अमरीकन, लुफ्थांसा और कोरियाई भी शामिल हैं, अटलांटा हवाईअड्डे से प्रतिदिन उड़ान भरती हैं और यहां पहुंचती हैं।

एक बार आप जमीन पर हैं तो चारों ओर हो रही समस्या नहीं होनी चाहिए। जब तक कि आप जॉर्जिया के आसपास सड़क यात्रा की योजना नहीं बनाते। किराए पर कार ज़रूरी नहीं है। इसके बदले आप ब्रीज़ कार्ड खरीदें और अटलांटा रेपिड ट्रांजिट सेवा, मार्टा पर हॉप करें। जिसे आप एयरपोर्ट से शहर के दिल के पांच पॉइंट स्टेशन तक ले जा सकते हैं। साथ में तुरंत हस्तांतरण। डोम/जी डब्ल्यू सी सी/फिलिप एरेना/सी एन एन स्टॉप पर रोल करें, जो जॉर्जिया विश्व कांग्रेस केन्द्र की ओर से सही है, रोटरी सम्मेलन की गृह सीमा है।

आप शहर के कई दर्शनीय स्थानों की सैर रेल द्वारा कर सकते हैं और जहां ट्रेन आपको नहीं ले जा सकती, वहां मार्टा बस की संभावना होगी। कार्यक्रम और मार्ग के नक्शे के लिए मार्टा की वेबसाइट चेक करें।

यदि आप धीमी गति पर कुछ ऐतिहासिक आकर्षणों का आनंद उठाना चाहते हैं तो अटलांटा की स्ट्रीटकार दूसरा विकल्प है।

एक आकर्षण पाश, जो सेंटेनियल ओलंपिक पार्क के करीब से शुरू होकर स्ट्रीटकार की हवाएं शहर में पूरी तरह और शहर के सबसे पुराने चौथे वार्ड नेवरहुड में प्रवेश करती हैं।

पूर्व पंजीयन बचत 31 मार्च तक। वेबसाइट *riconvention.org* पर जाएं। ■

Club President's workbook in Tamil - Hindi.indd 81 06-02-2017 15:36:03

संक्षिप्त सूची

अर्जुन मैनी, जो कि बैंगलोर के एक मोटर स्पोर्ट्स रेसर हैं और फार्मूला वन रेस में हिस्सा लेने के अभिलाषी हैं, ने रोटरी भारत साक्षरता मिशन का ब्रांड राजदूत बनने के लिए हस्ताक्षर किये हैं। वर्तमान में, फ्रांस के पाऊ एवं ऐतिहासिक मोंज़ा सर्किट के अंकों को दर्ज करने के पश्चात वे 13वें स्थान पर हैं।

रोटरी क्लब छिंदवाड़ा,मंडल 3040, का एक 31 सदस्यीय दल जिसकी अगुवाई क्लब अध्यक्ष संदीप सिंह चंदेल ने की, भारत के राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी से राष्ट्रपति भवन में मुला-कात की और उन्हें रोटरी की मानवीय परियोजनाओं का विवरण दिया।

मंडल 3190 द्वारा बैंगलोर में एक WinS संगोष्ठी का आयोजन किया गया। WinS के उप प्रमुख और पीआरआईडी पी टी प्रभाकर ने एक लाख स्कूली विद्यार्थियों तक पहुँचने के लक्ष्य वाली मंडल की हाथों की धुलाई जागरूकता मुहिम का लोकार्पण किया।

बायें से: पीडीजी के एस नागेन्द्र, पी आर आई डी पी टी प्रभाकर, डीजी एच आर अनंत और कार्यक्रम प्रमुख समीर हिरानी।

संक्षिप्त विवरण

घंटे की ध्वनि बंद

लंदन का प्रतिष्ठित बिग बेन (घंटाघर) 2017 के प्रारंभ में तीन वर्षो के लिए मौन हो जाएगा और एक बहु-मिलियन पाउंड नवीकरण परियोजना के लिए इसे आगंतुकों के लिए बंद कर दिया जाएगा। नवीकरण परियोजना में घड़ी की मरम्मती, और जल-प्रतिरोधन, चिनाई और एलिज़ाबेथ टॉवर जिसमें घंटा स्थित है, में धातु का कार्य शामिल है। हालांकि, ब्रिटिश संसद का कहना है कि घंटा स्मरण दिवस या नए साल की शाम जैसे महत्वपूर्ण घटनाओं के अवसर पर बजेगा, और कम से कम, एक चेहरा किसी भी समय दिखाई देता रहेगा, जबकि संरचना मरम्मती के लिए मचान से घिरा हुआ रहेगा। पिछले महत्वपूर्ण संरक्षण कार्य को किए 30 साल बीत चुका है।

बादलों के मध्य चहलकदमी

थ्रिल वॉक जिसका उद्घाटन स्विस आल्प्स में पिछले साल जुलाई में किया गया था, एड्रेनालाईन नशेड़ियों को इशारे से बुलाता है। यह एक 200 मीटर लंबा स्टील और कांच निर्मित पुल है जो सचिल्थोर्न शिखर से 250 मीटर नीचे गहरे और फैले हुए रिक्त चट्टनों को पकड़े हुए है। 2,970 मीटर की ऊंचाई पर शुरू होने वाले, इस चट्टन पथ में, एक 10 मीटर कैटल ग्रिड, सुरंग से होकर गुजरने वाला 8 मीटर के क्रॉल, 8 मीटर के रस्सी पुल सहित कई खंड है और नीचे एक गिलास पुल भी है जो टहलने के लिए जालयुक्त है। पैदल 'चलते' हुए आप अद्भुत एगर, मोंच और जुंगफ्रॉ के बेजोड़ सौंदर्य और 200 से अधिक चोटियों में से प्रत्येक का 360 डिग्री के साथ मनोरम दृश्य का आनंद उठा सकते है।

शादी का अनोखा उपहार

औरंगाबाद के व्यवसायी अजय मुनोट की बेटी श्रेया की शादी के अवसर पर नब्बे परिवारों को नए घरों का अनूठा उपहार मिला। उन्होंने दो एकड़ जमीन पर बेघर लोगों के लिए एक कॉलोनी का निर्माण किया, एक फिजूलखर्च शादी करने के बजाय, और तीन मानदंडों के आधार पर नए घरों के लिए निवासियों का चयन किया: उन्हें निर्धन होना चाहिए, झुग्गी बस्ती का निवासी होना चाहिए और किसी व्यसन से ग्रस्त नहीं होना चाहिए। उन्होंने सुनिश्चित किया कि सभी घरों में से प्रत्येक घर में पानी और बिजली की व्यवस्था हो, जो इस क्षेत्र में एक बड़ी समस्या थी। नव विवाहित जोड़े ने नए निवासियों को घरों की चाबी सौंपी।

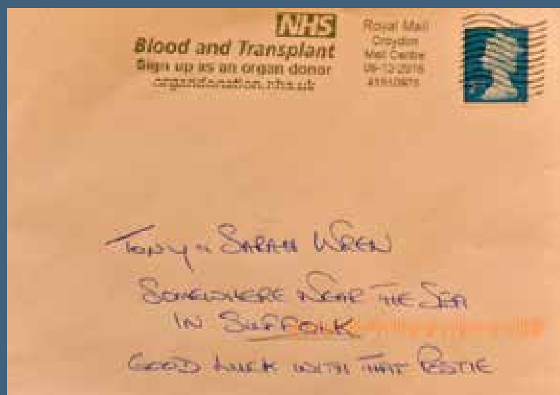

अद्भुत डाकिया

ऐसे समय में जब पूरा पता लिखा हुआ पत्र भी अपने गंतव्य स्थान तक पहुँचने में विफल रहता है, एक क्रिसमस कार्ड जिस पर नीचे एक मुखर नोट 'पोस्टी के साथ गुड लक,' लिखा हुआ और जिसे 'सफोल्क, (इंग्लैंड) में समुद्र के पास कहीं' के सारा और एंथोनी रेन को संबोधित किया गया था, उन तक सिर्फ चार दिन में पहुँचने में कामयाब रहा, और इस प्रकार खोए हुए दोस्तों का पुनर्मिलन करवाने में सफल रहा। व्रेंस लोवेस्टोफ्ट में स्थानांतरित हो चुके थे, जहाँ पत्र वितरण कार्यालय स्थित है। इसी तरह की एक घटना आइसलैंड में घटित हुई जब एक हाथ से तैयार मानचित्र और 'नाम' के स्थान पर 'तीन बच्चों और बहुत से भेड़ वाले एक आइसलैंडिक/डेनिश जोड़ी के साथ एक घोड़ा फार्म,' लिखे हुये पत्र को तुरंत पहुँचा दिया गया।

अफगानी 'मेसी' का मिलन वास्तविक मेसी से हुआ

अर्जेंटीना के फुटबॉल स्टार लियोनेल मेसी के नाम और अंक लिखा हुआ एक नीले और सफेद धारीदार पालीबैग लिए हुए वीडियो के पिछली जनवरी में वायरल होने से प्रसिद्ध हुए युवा मुर्तजा अहमदी को अपने हीरो से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ जब जब मेसी और टीम दोहा में एक प्रदर्शनी फुटबॉल मैच खेलने के लिए गया था। अहमदी मेसी के साथ फील्ड में गया और खेल शुरू करने से पहले टीम के साथ तस्वीरें खिंचवाई। पिता को धमकी मिलने के बाद, अहमदी परिवार को पिछली फरवरी में पाकिस्तान को छोड़ना पड़ा जब उससे पूछा गया कि उन्होंने कुरान के बजाय अपने बच्चों को फुटबॉल क्यों सिखाया।

जयश्री द्वारा संकलित; एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपांकन

REGN. NO. TN/CCN/359/2015-2017 LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT NO.TN/PMG(CCR)/WPP-421/2015-2017
REGISTERED WITH REGISTRAR OF NEWS PAPERS FOR INDIA TNHIN/2001/5271 ROTARY SAMACHAR PUBLISHED ON 1ST OF EVERY MONTH

AMERICAN LIFE INCORPORATED

American Life, Inc. EB-5 Regional Center welcomes all Rotarians to RI convention 2017 in Atlanta, USA. June 10 -14

Visit our booth in the Hall of Friendship

Special Hilton Hotel rates
For Indian delegates
99 US$ / night at RI Convention 2017
Group Code: ROTARY
Email: ric@h1solution.com

Investment opportunity in 255 South King Street LLP– a 282 room Hilton Embassy Suites Hotel and Avalara Hawk Tower in Seattle.
Open for business in December 2017
Visit www.amlife.us for the American Life story and photos of completed projects.

INVEST IN YOUR AMERICAN DREAM!

American Life, Inc. of Seattle, Washington USA is a real estate developer of hotels and office buildings in Seattle, Los Angeles and Atlanta. We develop, build and manage our projects.

- Established in 1996
- U.S.Government approved Regional Center
- 2,459 Permanent Green Cards awarded
- 4,778 Conditional Green Cards awarded
- 24 Completed EB-5 Projects
- Over One Billion US$ of EB-5 capital invested
- Equity and Preferred Equity investment model

For more information, contact us at :
india@americanlifeinc.com | 001-206-381-1690
270 S Hanford Street, Suite 100 | Seattle, Washington 98134 USA
3405 Bobby Brown Pkwy, Atlanta, GA 30344, USA Tel: Sachin Patel - 404 491 4325

This does not represent an offer or solicitation to buy or sell securities. Investments are available only to qualified accredited investors via the confidential offering memorandum.

INDIA : Law Office of Prashant Ajmera & Associates 5 Shivam Complex, 3rd Floor, Nr. H. L. Commerce College, Navrangpura, Ahmedabad 380009, Gujarat
M. : +91 99 74 25 3030 | Ph. : 079 - 2646 0679 | Email : prashant@ajmeralaw.com | Web : www.ajmeralaw.com, www.eb5visaconsultant.com